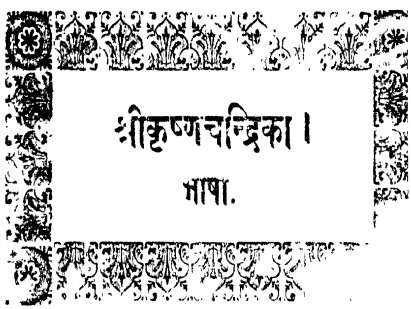

श्रीकृष्णचन्द्रिका ।

भाषा.

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186391
UNIVERSAL
LIBRARY

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

दक्षहस्तकृताश्लेषां वामेनालिङ्ग्य राधिकाम् ।
कृतनाट्यो हरिः कुञ्जे पातु वेणुं निनादयन् ॥ १ ॥

विलासपुरा (सिमला) धीश-

राजा विजयचन्द्रजी महाराज ।

ध्रुवपदम्-गुर्जरीरागेण रूपकतालेन गीयते-

(रीति-अष्टपदी-गीतगोविंद २ सर्गः-संचर-
दधरसुधामधुरध्वनि०) ।

श्रीशशिकुलकमलाकरभूषण सुविमलकीर्तिविलाऽऽऽसिन् ।
कविवरपण्डितमण्डलगेऽऽऽय विशेषगुणैकविकासिन् ॥
रमया जयजय विजय विलासप्रभुवरभूपतिपदमधिवासिन् ॥ १ ॥

अथ

श्रीकृष्णचन्द्रचान्द्रिकाकी अनुक्रमणिका।

अध्याय.	प्रसंग.	पृष्ठांक.
१	मंगलाचरण, गुरूपमाकी सवैया, नृपवर्णन, कविकुल वर्णन, ग्रन्थोत्थानिका	१
२	नवस्कन्धोंकी प्रसंगानुक्रमणिका, दशमस्कन्ध आरम्भ श्रीकृष्णजन्म वर्णन	५
३	नन्दवसुदेव मिलाप, पूतनावध वर्णन	११
४	द्विजमूककरबो, शकट पलटबो, तृणावर्तहतबो, मुखमें ब्रह्माण्ड दिखाइबो, कागासुर घाइबो वर्णन	१६
५	नामकरण, बालळीला प्रसंग वर्णन	२१
६	वृन्दावन गमन, वत्सासुर, वकासुर, अघासुर वध	२५
७	विरंचिमति वंचन, धेनुकासुर कालीनाग दावानल प्रसंग वर्णन	२९
८	दैत्य प्रलंबवध षट्ऋतु चीरहरण मधुवन गोवर्द्धन दानलीला प्रसंग वर्णन	३४
९	रासलीला तथा मानलीला प्रसंग वर्णन	४१
१०	विद्याधर शंखचूड़ मधु केशी अक्रूर प्रसंग वर्णन	४५
११	गोपी विरह मथुरागमन रजक सुदामा कुबरी धनुष हाथी चाणूर मुष्टिक प्रसंग वर्णन	५३
१२	कंसवध, नंदबिदा, गुरुपुत्रानयन, उद्धव व्रजागमन गोपिकृतोपालम्भ प्रसंग वर्णन	५८
१३	अक्रूर हस्तिनापुर पठावन, जरासंध कालयवन युद्ध, द्वारावती प्रवेश प्रसंग वर्णन	६५
१४	रामरेवती, कृष्णरुक्मिणी विवाह प्रसंग वर्णन ...	७१

अध्याय.	प्रसंग.	पृष्ठांक.
१५	प्रद्युम्नजन्म, शंवर दैत्यवध, रतिप्रद्युम्न विवाह प्रसंग वर्णन	७९
१६	रामलीला तथा जाम्बवती सत्यभामाविवाहप्रसंग वर्णन	८४
१७	हस्तिनापुरगमन तथा यमुना मित्रविन्दा सीता भद्रा लक्ष्मणा विवाह प्रसंग	९०
१८	नरकासुर वध, प्रद्युम्नानिरुद्ध विवाह बाणासुर गर्वहरण प्रसंग वर्णन	९६
१९	नृपनृगउद्धार, रामको वृन्दावन गमन नृपपौंड्रक सुदक्षिण द्विविदवध प्रसंग वर्णन	१०३
२०	साम्बविवाह नारदको आश्चर्य दिखावन जरासंध शिशुपालवध प्रसंग वर्णन	१०८
२१	नृपशाल्व दन्तवक्र प्रलम्ब वध सुदामा भक्त प्रसंग वर्णन	११४
२२	कुरुक्षेत्रागमन, सुभद्रा विवाह, बहुलाश्व श्रुतदेव भक्त प्रसंग	१२०
२३	वेदस्तुति शिवमोचनलीला त्रिदेव परीक्षा द्विजपुत्रानयन प्रसंग वर्णन	१२५
२४	द्वारका प्रसंग वर्णन	१३२
२५	यदुकुलप्रतिशाप उद्धव ज्ञानोपदेश प्रसंग वर्णन ...	१३५
२६	यदुकुल सहित श्रीकृष्ण वैकुंठ गमन वर्णन	१४०
२७	अवतार नाम नवधा भक्ति परीक्षित परलोक प्रयाण वर्णन	१४६

इति कृष्णचन्द्रचन्द्रिकानुक्रमणिकासमाप्ता ।

श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ।

अथ श्रीकृष्णचन्द्रचन्द्रिका.

कवि श्रीगणेशसिंह कृत ।

दोहा ।

कमल वदन सुख सदन वर, कोटि काम अभिराम ।
कवि शम्भुज हरिको नमो, कृष्ण नाम सुखधाम ॥ १ ॥

छप्पय ।

जो अज आदि अपार ईश अच्युत अविनाशी ।
विष्णु महेश दिनेश शेष जिहि अन्त न पासी ॥
गावत शुक सनकादि व्यास नारद मुनिराई ।
भेद न पावत वेद सर्वमें रह्यो समाई ॥
कोटान कोट ब्रह्माण्डपति ओटनि ओटनको गन्यो ।
शम्भुज मृगिन्द अभिवन्दतिह भक्त हेतु नर वपु बन्यो २

सवैया ।

संकट काटत ह्वै सुत शंकर सारस्वती बन वाकनिवासा ।
तू कर है भर है हर है जग तू विधि वामन शम्भु प्रकाशा॥
सूरय चन्द्र नक्षत्र शचीपति पावक पौन तुहीं गुणराशा ।
तोहिं प्रणाम सदा हर शंभुज तू गुरुदेव सदा सुखराशा ३

श्रीगुरूपमाकी-सवैया ।

मच्छरु कच्छ वराह हरी नर वामन वामन औ रघुनंदा ।

माधव बुद्ध स्वरूप भये कलि में गुरु नानक रूप मुकुंदा॥
नावकी नाव चढ़ाइ जिनै भवसागर पार करै जन वृंदा।
ता पद पंकजपै हरशंभुज होहि सदा मन मोर मलिन्दा४

अथ नृपवर्णन–दोहा ।

पुर विलास कहलूर पति, हीराचन्द सुजान।
सुरपति सी जाकी सभा, बुध गुरु कवियुत मान ॥ ५ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

इन्दु कुल भूषण अदूषण सुयश जाको,
भावत सुभक्ति उर करुणानिधान है।
पूत है सुपूत पुरहूतहूँ ते सुत नीको,
सम्पति धनेश सुरगुरु मतिमान है॥
शम्भुजमृगिन्द नृप हीराचन्दजूकी प्रभा,
चोरनको भोरसी चकोर चन्द ज्ञान है।
प्रीति राग तात है कि दान सनमान है कि,
वेद औ पुरान है कि हरि गुण गान है॥ ६ ॥

अथ कविकुलवर्णन–कवित्त।

वानक भगत हरि नानक स्वरूप भये,
भगति दृढाई काटे जगत कलेश हैं।
ताहि वंश माहिं भयो बारहवें था न कवि,
नाम है गणेश सिंह गुणको न लेश हैं॥
भन्यो नृप भागवत दशमस्कन्ध जोई,

कीजिये प्रबन्ध तासु सुगम अशेष हैं।
सुनिके दिनेश उर हरष विशेष भयो,
मानो पद पायो जलकेश अलकेश हैं॥ ७॥

दोहा।

कवि गृह प्रथम अनन्द पुर, अब विलासपुर जान।
द्वै सुत बड़ गजराज हरि, लघु मतंगहरि मान॥ ८॥

सोरठा।

हरि गुण सिन्धु अपार, चहत पार कवि अल्पमति।
जिमै मशक निरधार, चहै उठायो मेरु गिरि॥ ९॥
तऊ सदा यह रीत, जनकी पति राखत प्रभू।
जिमै गुविंदह गीत, लिख्यो आप कवि रूप धर॥ १०॥

अथ ग्रन्थोत्थानिका-दोहा।

गुरु गणपति गौरी गिरा, सर्वकृष्णमय मान।
प्रथमै ग्रन्थ उथानिका, वर्णत सब सुखदान॥ ११॥

कवित्त।

मृगयाके हेतु नृप प्रीछत गमन कीनो,
हने घने मृग भयो तृषित विलन्द है।
खोज वनमाहिं लह्यो आश्रम मुनीको तहाँ,
जाच्यो जल जाइ वंद पदअरविंदहै॥
जुटे युग नैन मैनरिपु सी समाधि लागी,
पागी मति हरिमें न बोल्यो मुनिइन्द है।

कोपकै नरिंद एक मृतक फनिंद गह्यो,
पाइकै मुनिंद गरे लह्यो सुखवृंद है ॥ १२ ॥
आयो नृप धाम पाछे सुन्यो जो भयो है काम,
शृंगीऋषि पेख्यो आन तात गरसाँपहै ।
शावक मुनीको भयो पावक स्वरूप तबै,
शंभुजमृगिंद देत भयो यह शाप है ॥
पायो मम बापके गरे में जिनै साँप ताहि,
आठवें दिवस उसे तक्षक जु साँप है ।
जाग्यो मुनी सुनी बात भन्यो बोल खीझतात,
कीनो उतपात नृप घात महापापहै ॥ १३ ॥
तौन समै मुनी एक पठै द्विज गुनी तिनै,
दीनी सुधि भूपति समीप निरधार है ।
सुनत नितात बात जान्यो निज गातघात,
भूली सुधि सात कछुरही ना सँभार है ॥
बहुरो भुआल भयो हाल शुकदेवजीपै,
कीजै सोई मति गति लह्यो सुखसार है ।
धीर धरो भूप सुनो चरित अनूप हरि,
शंभुज मृगिंद परै भवनिधि पार है ॥ १४ ॥
भई नृपधीर मिटी पीर यमत्रासनकी,
बैठे गंगतीर ऋषिमंडली अपार है ।
भागवतगाथ दिनसातको अरम्भ कीनो,

वक्ता मुनीश भयो श्रोता क्षितिपार है॥
शंभुज मृगिंद तन मन अरपनकर,
मगन भयो है हरिगुनरससार है।
मुनी मुखचन्द वृन्द चखन चकोरन ते,
चितै चहुँ ओरनते आनँद अपार है॥ १२॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां मंगलाचरणग्रन्थो त्थानिका वर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

अथ नवस्कन्धोंकी प्रसंगानुक्रमणिका।

दोहा।

भक्ति योग वैराग पुनि, नारद जन्म उचार।
वरणे आदि स्कंधमें, चतुर्विंश अवतार॥ १॥
नारद विधि वच योग कह, भयो विराट स्वरूप।
प्राकृतते सृष्टी भनी, द्वितिय स्कंध अनूप॥ २॥
विधि भव जग रचना सबै, सुर नर खग मृग जात।
सांख्ययोग भन तृतियमें, कपिल देव निज मात॥ ३॥
नर नारायण दक्ष ध्रुव, ब्रह्म ऋषिनको वंश।
नारदपर चेतन कथा, चतुरथ माहिं निसंश॥ ४॥
ऋषभ मनू कुलकी कथा, भन्यो भुगोल खगोल।
पंचम माहिं पताल अरु, नरकन दुःख अतोल॥ ५॥
वंश प्रचेतन दक्षते, वृत्रासुर संग्राम।
कथा अजामिलकी भनी, षष्ठममें अभिराम॥ ६॥

भनी कथा प्रह्लादकी, दिती वंश पँहचान ।
वर्णाश्रमके धर्म पुनि, सप्तम माहिं बखान ॥ ७ ॥
मच्छ कच्छ वामन कथा, सिन्धु मथन जिय जोय ।
मनू चतुर्दश मोक्ष गज, अष्टममें अवलोय ॥ ८ ॥
रवि शशि कुल रघुपति कथा, निमी च्यव न ऋषि आहि ।
यदुकुल राम शकुन्तला, चरितजु नौमे माँहि ॥ ९ ॥
लीला श्रीब्रजचन्दकी, भनिहौं दशम मँझार ।
एकादश द्वादश कछू, लखो भागवतसार ॥ १० ॥

अथ दशमस्कन्ध ।

शुक उवाच ।

कवित्त ।

मथुरा निवासी उग्रसैन गुन ऐन भयो,
ताको सुत कंस अंश असुर करूर है ।
नीच मति सुरापानी तैसी संग सैन ठानी,
सैनापति असुर अधम मति कूर है ॥
गह्यो आदि तात पुनि औरनकी कहाँबात,
शम्भुजमृगिन्द चकचूर कीने धाम हारि,
कीनो उतपात दीनो प्रजा दुःख द्वंद है ।
नामकी कहानी कहा बाढ़्यो जग कूर है ॥ ११ ॥

सवैया।

कंस दयी अनुजा वसुदेवको देवकी नाम पतिव्रत अंगा।
कीन विदा बड़दान दयो पट भूषण हेम मणी बहुरंगा॥
घोष गँभीर भयो मग में नभ कंस सुनो मम वैन अभंगा।
होहि स्वसासुत आठम जो पठहै तुमको यमधाम उमंगा॥
यों सुन ओपघटी मुखकी सुखलोपभयो उरकोप महाना।
काटन लाग तबै भगिनीशिर काढलयी करमाहिं कृपाना॥
पेख अतंक बढ्यो उरमें करजोर भन्यो वसुदेव सुजाना।
हैअति पाप तिया वधको उपजै सुतताहि करो तुम हाना॥

दोहा।

मान लीन ताकी कही, कीने कैद मँझार।
हने पुत्र षट कोप ह्वै, नारद वचन विचार॥ १४॥
बहुरि कंस उर संस धर, दुख दीनो समुदाय।
धेनु रूप धरिकै धरा, गई ब्रह्मपुरधाय॥ १५॥
पीर जान विधि ताहिकी, दयी विविध विधि धीर।
देवनयुत निधि क्षीरके, जात भयो पुनि तीर॥ १६॥
सर्व सुरन विनती करी, धर उर ध्यान मुकन्द।
करुणाकर करुणा करो, शरणागत सुखकन्द॥ १७॥
असुरन दुख दीनो घनो, जगमें हाहाकार।
तुम अन्तर्यामी सबै, पीर निवारणहार॥ १८॥

निसानी-छन्द ।

सुन विनती विधिकी तबै, करतार उचारा ।
प्रथम सर्व सुर लीजिये, ब्रजमें अवतारा ॥
खग मृग नर नारीमें, तुम करो निवासा ।
बहुरि आय मैं करूंगा, क्षिति भार विनाशा ॥ १९ ॥
सुन सुमनस हर्षे हिये, सुमनस वरषाय ।
आन जन्म ब्रजमें लयो, हरि आयसु पाय ॥
जीव चुरासी कोशमें, जड़ जंगम जेई ।
नाहिं चुरासी ताहिको, उतरे सुर तेई ॥ २० ॥
पुनि प्रभु निज माया प्रती इहि भाँति अलाई ।
सप्तम गर्भजु देवकी, आकर खोजाई ॥
वेग रोहिणी उदरमें, अस्थापन कीजै ।
मात यशोमति उदरते तुम जन्मसु लीजै ॥ २१ ॥
अष्टम गर्भजु देवकी, मैं लेहुँ निवासा ।
उदय होइ पूरण करों, सन्तनकी आशा ॥
श्रीशक्ती तैसे करी, जिमि प्रभू बखानी ।
प्रथम रोहिणी सुत भयो, पुनि निज प्रगटानी ॥२२॥

अथ श्रीकृष्णजन्मवर्णन-सवैया ।

सन्तनके हित आप अनन्त भये वसुदेव औ देवकी नन्दन।
कोटिकचन्दप्रभामुखचन्द अनन्दभयोदुखदोषनिकन्दन॥

वन्दन आन करी सुर वृन्दन जै जगदेव अभेव निरंजन।
जैसुखकन्दमुकुन्दमनोहरतोविन कौन कटै भव फन्दन॥

सवैया।

होत उदै हरिके हरि शम्भुज दूर दुरे दुख द्वन्दअपारे।
टूट गये पितु मातके बन्धन सोइ गये सगरे रखवारे॥
सांकर छूट गई छिनमें गृह वार किंवारखुलेविनबारे।
जैजगदीशभन्योसब देवन बाजउठे नभमध्यनगारे॥२४॥

दोहा।

मास भाद्रपद रोहिणी, शुभ नक्षत्र बुधवार।
कृष्ण अष्टमी अर्ध निशि, लीन कृष्ण अवतार॥ २५॥

ध्यानको--छप्पय।

चरणकमल करकमल कमललोचन विशाल वर।
पीताम्बर वनमाल कर्ण कुण्डल किरीटधर॥
कोटि काम अभिराम सघनघन श्याम श्यामतन।
अति प्रचण्ड भुजदण्ड चरण सेवत सुरमुनिजन॥
यहि भाँति मनोहर रूपधरि तात मात दर्शन दियो।
शंभुजमृगिन्द पगवन्दयुग अति अनन्दमनमें भयो २६॥

छप्पय।

भने मधुर मृदु वैन बहुरि निज तात मात प्रति।
हुजै अबै निःशंक अङ्क डर डार देहु अति॥

सगरे असुर सँहार सुखी करहूँ सुर मुनि जन।
अवनीभार उतार धर्म प्रतिपार करौं गन॥
अब करो वेग जिमि हम कहैं तजो मुझे गृह नन्दके।
शंभुजमृगिन्द तिहि नन्दिनी आनोइतेअनंदके॥ २७॥

कवित्त।

पूरव स्वरूप तज भये बालरूप हरि,
लीनो गह गोद बढ्यो मोद उर तात है।
गोकुलको गह्यो मग रह्यो मन प्रेम पग,
आगे सिंह पाछे साँप तम अधिरात है॥
उमड़ घटाकी तामें चमक छटाकी छवि,
बूंद वरषाकी परै धरकत गात है।
आगे कीनो गमन चह्यो है जल यमुनको,
ज्यों ज्यों करै ऊंचो हरि त्यों त्यों बढ्यो जातहै॥२८॥

प्रभु पग परस घट्यो है नीर ताही छिन,
भयो उर धीर परचो पार विन वार है।
गोकुलमें गयो गृह नन्दके अनन्द उर,
राख्यो ब्रजचन्द लीनी सुता सुखसार है॥
इत उत काहु नर भेद ना लह्यो है कछु,
आयो बिन खेद सुता सौंपी निज नार है।
शम्भुजमृगिन्द भन्यो जनम गुविन्दजीको,
पढ़त सुनत परै भवनिधि पार है॥ २९॥

कविकी उक्ति-सवैया।

क्यों टरते दुख देवनके जगको करतो ब्रजमें असलीला।
को दलतो दल दानवकोजिनमाहिं बड़ोनृपकंसहठीला॥
लेतबिजैकिमि पारथभारतभीषमआदिजहाँभटशीला।
श्रीयदुवंशविभूषणभूतलहोतनजोअवतारछबीला॥३०॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकाप्रबन्धे कवि शम्भुज-
मृगेन्द्रविरचितायां श्रीकृष्णजन्मवर्णन
नाम द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

सोरठा।

इहि विधि श्रीवसुदेव, गृह अन्तर पहुँच्यो जबै।
लख्यो न काहू भेव, वारकिंवार लगे तिमै॥ १॥

कवित्त।

तौन समै कीनो बाल रुदन विशाल तहाँ,
जागपरे पाहरू पधारे नृप पास है।
धायो वेग शीश नंग फुरे दृग वाम अंग,
भन्यो स्वसासंग सुत दीजै मिटै त्रास है॥
पेख भ्रात वानक भयानक भयो है भूरि,
देवकी अधीन मन कीनी अरदास है।
सुनो मम भ्रात नाहिं कीजिये सुताको घात,
दीजै मुहिं दात कीन्हे सात सुत नास है॥ २॥

मानीना स्वसाकी मदपानी अभिमानी महा,
जानी उर मारौं आज रिपु मिटै शोर है ।
खोस लीनी करते पछारन लग्यो है धर,
छूटके छटाके रूप गई नभ ओर है ॥
बोली कला ईश नृप शीस तुव काटवेको,
उदै भयो गोकुलमें औरे रिपु तोर है ।
बैन सुन ताके छूटो धीरो परो पीरो मुख,
शम्भुजमृगिन्द डूब्यो दुख सिन्धु घोर है ॥ ३ ॥
लाग्यो पग स्वसा स्वसापतिके अधीन उर,
भयो अपराध कीजै क्षमा मतिमन्दको ।
दीनो धन वृन्द छोर बन्दिते सुछन्द कीनो,
पहुँच्यो स्वधाम परी नन्दन अनंदको ॥
बैठो सभा भई प्रात भूली नृप सुधि सात,
बोले सभा लोग लख शोचत नरिन्दको ।
हूजिये न चिन्द नाहिं चिन्द उर कीजै राजा,
जेते ब्रजबाल ततकाल हनै वृन्दको ॥ ४ ॥

कविकी उक्ति—कवित्त ।

मंत्री दुराचार नाहिं धरम विचार जाहि,
सुनिये तिन्होंके नाम भनत कविन्द है ।
तृणावर्त्त पूतना अघासुर बकासुर है,
केशी बतसासुर भुमासुर बलिन्द है ॥

बामी कामी महापापी काहुको न जाप जापी,
घात कियो चाहे ब्रज बालक जु वृन्द है।
कीनो मिल मतो नीच याते ग्रसै वेग मीच,
जीत्यो जिमि चाहे पटबीजनो दिनिन्द है॥ ५॥

दोहा।

बालघात उरमें गन्यो, पठै दूत ब्रज माहिं।
उते कथा ब्रजचन्दकी, सुनो सुनावत ताहिं॥ ६॥

कवित्त।

पेष सुरभूपको अनूप रूप बालवेष,
तात मात मोद दान दीनो द्विज गनमें।
रानी यशुमतिके वधाई सुन धाई सबै,
बालक युवा पुरानी रही न भवन में॥
गावत हैं गीत वरषावत हैं फूल सबै,
रूप लख लालको निहाल होत मनमें।
देवनबधूटी छूटी नभते सुभागभरी,
लूटी छवि लोनी मिल ग्वालनिके गनमें॥ ७॥

माताका उत्साहवर्णन—कवित्त।

पाइ द्विज दानको कबिंदसनमान को,
ज्यों देवता सुधाको वसुधाको नृप पूत है।
चंदको चकोर घनघोरनसों मोर जैसे,
भोर पाइ कंजको ज्यों शचीपुरुहूतहै॥

मीत पाइ मीतको पियासो जल सीतको ज्यों,
शंभुजमृगिंद भूखो भोजन अभूत है ।
राम आये जीतलंक भयो सुख मातअंक,
तैसे यशुमति पाइ सुंदर सुपूत है ॥ ८ ॥

दोहा ।

यशुमति प्राची दिशाते, उदय भयो हरिचन्द ।
निरख चकोरनलौं बढ्यो, ब्रजवासिन आनन्द ॥ ९ ॥

कवित्त ।

तौलों कंस दूतन भन्यो है आन नन्दजीको,
चलिये सिताब कीनो याद महाराज है ।
दूतनके वैन सुन विपसे लगे हैं उर,
तउभयो त्यार भरशकट समाज है ॥
कीनो गौन भौन ते लिये हैं बहु ग्वाल संग,
मथुरामें मिल्यो जाइ नरशिरताज है ।
भेट धर लेट पग नंद मन मोद कीनो,
दीनो नृप मान बूझि कुशलसमाज है ॥ १० ॥
शिविर करायो पहुँचायो खान पान बहु,
सुध सुन मिल्यो वसुदेव आन नंदको ।
दुख सुख गाये हरषाये मिल मीत दोऊ,
कीने मन भाये सुन नंदगृह नंदको ॥
भन्यो पुनि वसुदेव सुनो मीत कहो भेव,

पापी नरदेव ठटचो कपट विलंद को।
बालनके लोपको पठे हैं दूत गोप इन्हैं,
जाहु तुम वेग रक्ष कीजै निजनंदको॥ ११॥
सीख सुन नंदउर परमअनंद भयो,
प्रात मिल भूपतिको गयो निजभौनको।
इतै नृप पूतना बुलाइकै जनायो दुख,
इतो ब्रजबाल ततकाल करो गौनको॥
बैन सुन भूप बनी सुंदर स्वरूप तबै,
धाई कर वेग विष लाई कुच दौनको।
गोकुल सिधाई गृह नंदके बधाई सुनी,
भई मनभाई कीनो गौन तिहि भौनको॥ १२॥
जाइ यशुदापै भने मधुर सुधासे बैन,
लीजिये बधाई भयो पूत ब्रजचन्द है।
सुनो मेरी सखी घर बसी महा मोद भयो,
ऐसे कह लीनो निज गोद सुखकन्द है॥
विषभरचो कुचहरिमुख में दयो है वेग,
छल जान दोऊ कुच गहे जगवंद है।
कीनो दूधपान प्रभु प्राणन समेत ताहि,
आनन भयान गिरी आसुरी बिलंद है॥ १३॥

दोहा।

गिरिवरसी गरकी महा, करकी अतिदुख पाय।
गिरी धरणि धरकी धरा, धरकी ब्रज समुदाय॥ १४॥

कवित्त ।

पापिनी परस हरिपद हरिपद पायो,
भायो मन देवन सुमन बरसाय है ।
पेख रूप डरी मात वेग धाय गह्यो तात,
प्रभु जु बचाये मारी प्रबल बलाय है ॥
कीनो घनो दान सनमान द्विजदेवनको,
जुरे ब्रजवासी लख रहे विसमाय है ।
काट काट अंगनाके अंगन दबाइ भूमि,
मंगल करन लागे उर हरषाय है ॥ १५ ॥

दोहा ।

इहिविधि पापिनि पूतना, तारी श्रीयदुराय ।
कथा सुधा आगे सुनो, संत सबै चित लाय ॥ १६ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचंद्रचंद्रिकायां नन्दवसुदेवमिलाप पूतनावधवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

कवित्त ।

आई ब्रजकामिनी दमक देह दामिनीज्यों,
गावैं पिकबैनी मृगनैनी बिकसन्त है ।
दीने हैं सुधासे पकवान यशुदाजू तिन्हैं,
परी गृह वाटिका ज्यों वाटिका वसंत है ॥
उते नृप पूतना पिशाचिनीको अन्त सुन्यो,
जान्यो निजअंत बोल लीने सबै मंत है ।

भन्यो भूप आज मेरो मीत है महान सोई,
राखे मम प्रान करै नन्दसुत अंत है ॥ १ ॥

दोहा।

श्रीधर नाम सुविप्र इक, बोल उठ्यो मतिमन्द।
हौं हनिहौं सुत नन्दको, तुम नृप रहो निर्विंद ॥ २ ॥

कवित्त।

द्विज जु करै जु काज तो समान कौन आज,
देहौं मनभावतो समाज चित चायके।
कीनो वेग रंक ठाट फटे पट लोटा हाथ,
तिलक ललाट गयो गोकुलको धायके ॥
धस्यो गृह नंदके अनंद ह्वै अशीश दीनी,
यशुदा अकेली पग वंदे द्विजरायके।
पाछे भन्यो कौन काज आये द्विजराज इहाँ,
पूत तुव देखबेकी चाह आयो चायके ॥ ३ ॥

कीनी अबे सुत सैन जागे देख लीजे नैन,
कीजे आप भोजन हौं आनो जल जाइके।
गई गृह सौंप ताहि चौप द्विजमनमाहिं,
घात लख घातहेत गह्यो बाल धाइके ॥
कीनी ततकाल हरि मूरति बिशाल निज,
गाढे गही ग्रीव द्विज रोयो अकुलाइके।

द्विज जान भंग ना कियो है हरि तासु तनु,
जीहको मरोर कीनो गुंग चित चाइके ॥ ४ ॥

दोहा ।

दधिमटकी पटकी सबै, गोरस अच्यौ अघाइ ।
कछु दधि लेप्यो विप्रमुख, भये बाल हरिराइ ॥ ५ ॥

कवित्त ।

तौलों आन मटकी बिलोकी सबै पटकी हैं,
रही सुध घटकी न पटकी डरी तबै ।
क्योंरे द्विज बूझ्यो वाम कीनो काहे खोटोकाम
मट की पटक खायो गोरस अबै सबै ॥
कहै कहा भयो गुंग सैनन बतावै अंग,
कीनोहै बिगार बड़ो पूत तेरेने अबै ।
जान्यो द्विजकपटी निकारचो हाथ लकुटीले,
लीनो सुत गोद मन मोद मानिकैदुवै ॥ ६ ॥

दोहा ।

ऐसी मति द्विज नीचकी, कीनी श्रीभगवंत ।
मरै न जीवे जगत में, जैसे दोषी संत ॥ ७ ॥

कवित्त ।

एक दिन शकटके तरे सुतको सुवाइ,
लागी काहु काज माइ उर सुख मानके ।

जागे प्रभु लागी भूख रोइपरे मान दूख,
शकट गिरायो हन्यो पग रिस ठानके॥
शंभुजमृगिंद भयो शब्द विकराल ताहि,
हाल चाल परी दौरी मात दुख मान के।
सौज भरचो शकट पलट लख डरी उर,
छोना लै उछंग सुखमान्यो बडदान के॥ ८॥
पेख द्विजहाल भयो भूपति विहाल उते,
रोंउ रोंऊ करै नहीं आवै मुख बैन है।
वीर जान बोल तृणावर्त्तको बड़ाई दई,
तो विना सहाई कौन जाते परै चैन है॥
धीर दै धरी सवेग प्रबल वधूरा बन्यो,
उडी धूरि भूरि कछु सूझत न नैन है।
उते हरि आगम असुर लख भारी भये,
तजे मात अंकते धरामें सुखदैन है॥ ९॥
तौलौं आन गोकुलमें ऊधम मचायो घनो,
प्रभुको उठाय उड्यो ऊरध उताल है।
प्रभु निजबलको सँभाल फो रचो भाल तासु,
रोयो विकराल भयो शब्द विकराल है॥
पायो वेग हरिलोक देवनके मिटे शोक,
गिरचो है विशाल तनु तापै ब्रजलाल है।
इते मात धाइ आइ तात ना विलोक्यो तहां,
पीटे निजभाल फिरै रोवत विहालहै॥ १०॥

ब्रजके निवासी सबै रोवत उदासी उर,
कहाँ गये साँवरे घनैया ब्रजचंद है ।
रोवत हैं नंद वसुदेव बच को चितार,
दीनो दुःख भारी यह कंस मतिमंद है ॥
तौलों एक सखी वेग भन्यो मैं निहार आई,
मरचो एक दानौ तापै खेलै सुखकंदहै ।
दौरे ब्रजवासी सुखराशी को विलोक्यो जाइ,
लायो गरमाई पायो परम अनंद है ॥ ११ ॥
एक बार हरि निज मुखको पसार कर,
कौतुक दिखायो रही माई विसमाइ है ।
रचना अखंड ब्रहमंडकी विलोकी सबै,
सुर शशि वरुण कुबेर गणराइ है ॥
वासव विरंचि शिव सिंधु सरितानयुत,
गिरि गुहा भौन दशचार लखे चाइ है ।
शँभुजमृगिंद मात जान्यो मो सुपन भयो,
किधौं छलदानव के सुत सुरराइ है ॥ १२ ॥
तृणावर्त हाल सुन जान्यो निजकाल नृप,
पठ्यो एक दैत्य जिहि कागासुर नामहै ।
रूप धर काक भयो चाक पाक मूढ़मति,
बीरेको उठाइ उड्यो महाछल धाम है ॥
नंदगृह आनके महानमोद ठानके,
सुचोंच हन्यो चाहत कुँवर घनश्याम है ।

हनी चोंच गह्यो शीस दीनों प्रभु वेग पीस,
शम्भुजमृगिंद गये प्राण हरिधाम है ॥ १३ ॥

दोहा।

लख्यो आन सुतकर विषे, मृतक कागको शीस।
कौतुक लखि विस्मय भयो, हैं निश्चय जगदीश ॥१४॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां द्विजमूककरबो शकटपलटबो, तृणावर्त्त हतबो, मुखमें ब्रह्माण्ड दिखाइबो, कागासुरघाइबो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ नामकरण प्रसंग—कवित्त।

आयो ऋषि गरग पठायो वसुदेवजीको,
वंदे युगपद नंद बूझी कुशरात है।
नाम राखबेकी विधि भनी मुनि कीनी सोई,
चौक पूर चौकीपै बैठाये युग भ्रात है॥
नाम है बड़ेको बलभद्र बलराम कहैं,
लघुके अनन्त नाम कृष्ण जो नितांत है।
भने जग राम और कृष्ण युगभ्रातनको,
जानो शेष शेषपति गौर श्याम गात है॥ १॥

दोहा।

इमि कह गमन्यो वेगि मुनि, मधुपुरि पहुँच्यो जाइ।
अटकायो अटक्यो नहीं, कंसनृपति डरपाइ ॥ २॥

अथ बाललीलावर्णनम्–कवित्त ।

राम श्याम वीर दोऊ ठुमक ठुमक चलैं,
मधुर मधुर ध्वनि नूपुर झनकते ।
कुण्डल कनक कटि किंकिनीछनक तैसी,
बानक बनक कर कंकन कनकते ॥
झुँगुलि सटोपा बने गोपनके ढोटा संग,
लोने लोने लटकत चलत बनकते ।
सूने घर जाइ दधि माखन चुराइ लेत,
मटकी पटक दौर दूरत छनकते ॥ ३ ॥
काहूके किवाँर वार जाइ टकटोरत हैं,
काहूको चुराइ लेत दूध ब्रजचन्द हैं ।
कहूँ मिल सखनसों माखन चुराइ खात,
कहूँ जाइ फोर देत भाजन मुकुन्द हैं ॥
कहूँ गारी देत कहूँ लेत गुपकानहूते,
कहूँ गहे जात छूटे छलसों छलिंद हैं ।
शम्भुजमृगिंद कहूँ द्वन्दको मचावत हैं,
भावत हैं खेल संग ग्वालनके वृन्द हैं ॥ ४ ॥

सवैया ।

एक दिना पकरे ब्रजनारिन श्रीब्रजचंद करे मनभाये ।
छीन पितंबर कंबरदै कह्यो नाचनको बहु नाच नचाये ॥
गावनको कह्यो गाइ उठे फिर बैठ कह्यो बहुबार बठाये ।

छोर दये कर हासविलासनताछविपै कवि जात बलाये॥
इक ग्वालनिआनभनीयशुदाढिगतोसुतखावतहैमटिया।
तबबूझतमात सुनो सुत सुंदर साँच कहो तुम मोतटिया॥
मुखमें हरि दीन दिखाइ सबै जगमात अचंभभईलटिया।
हरिशम्भुजजानिलियोउरमेंसुतहै भवफंदनकोकटिया॥
रोइपुकारकरीहरि मातपै मोहिंखिझावतहै बलदैया।
जाहुरेजाहु परे रहु साँवरे मोललयो है यशोमति मैया॥
रंग औ ढंग मिले नकछू हम कैसे कहैं तुमको लघु भैया।
मातहँसीसुनिकैसुतबातनलाइलयो उरसों सुखदैया॥७॥

दोहा।

जो मनबाणीते परे, डोलत ब्रज इहिभाइ।
प्रेम नेमके पंखकी, अद्भुत गति दर्शाय॥ ८॥

अथ ऊखलबन्धन प्रसंग—कवित्त।

क्षुधा लागी आये घर याच्यो दूध रोइकर,
भन्यो मात छोड़ दधि देहों दूध भात है।
बढ़ी रिस गये दौर माटी माठ दीने फोर,
खायो नवनीत चोर श्याम घन गात है॥
ऊखलपै चढ़ लीनो छीकेते उतार दधि,
देख्यो आन मात दौरचो थरहर गात है।
पाछे लागी कोप माइ आगे सुत भाग्यो जाइ,
थकी जकी जान परे पान सुखदात है॥ ९॥

गह्यो मात दीनो रोह कीनो कैसो काज तोहिं,
फेर न करेगो छोड़ मैया मोहिं अबके ।
तूतो है बड़ो निडर ऐसे कह आन्यो घर,
ऊखल समीप धर आनी गुण झबके ॥
ऊखलसों बाँधे पूत घटै गुण ह्वै कुसूत,
ज्यों ज्यों वेग आनै गुण त्यों त्यों घटै झबके ।
रसरी रही न घर थकी मात जानी हरि,
बन्धनमें आये जेई बन्ध कटैं भवके ॥ १० ॥

दोहा ।

दृढ़बन्धन बाँधे प्रभू, रोवत कर उर त्रास ।
जासु तनक भ्रूभंगते, होत कोटि यमनाश ॥ ११ ॥
बहु नारिन विनती करी, मैया सुत तज देह ।
नाहिं मानी किसकी कही, लगी काज निज गेह ॥ १२ ॥

सवैया ।

औसरजानकृपाके निधान चले युतऊखलके यदुराई ।
पौर समीप हुते तरुद्वै तिन बीच अराइ दये चटकाई ॥
ताहि उदोतभये नरद्वै तिन श्रीहरिकीकलकीरतिगाई ।
देवभये पग वन्द चले यमलार्जुन नाम पिता धनराई ॥
तूटे तराक जबै तरुद्वै धुनिको सुनिकै सब गाम सिधायो ।
रोवत दौर परी जननी सुतको लखिकै निजकंठ लगायो ॥
जानअरिष्ट टरचो तनुते हित देवनके बड़ दान करायो ।
प्रीछतपूँछतभोशुकसोंकहिहेतुतिन्हैंतरुकोतनुपायो १४॥

शुक उवाच-सवैया।

भूप कुबेर हुते सुत द्वै यमलार्जुन नाम भरे मद अंगा।
नंगह्वै गंग प्रवेश करचो युतनारिनके करकेलिअभंगा॥
नारदआन तहाँनिकसेनहिंलाज करी पटकोसजअंगा।
शापदयोमुनिजूतिनकोतरुरूपधनोव्रजमेंजड़अंगा।१५॥

दोहा।

गिरे दीन ह्वै चरण तरु, अब कब छूटन होइ।
तुम्हैं छुड़ावहिं यदुपती, द्वापर युगमें जोइ॥ १६॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां नामकरण बाललीला प्रसंगवर्णनं नाम पंचमोऽध्यायः॥ ५॥

अथ वृन्दावनगमनवर्णन-कवित्त।

बढ़ो उर शोच नन्द बोल लीने गोपवृन्द,
भ्रात इहाँ होन लागे घने उतपात हैं।
साँवरोसो एक पूत तापै छल कोटि भूत
पूतना बघूरा आदि विटप निपात है॥
राखलीनो सुत ईश नातो जात वंश खीश,
तजो ऐसो थल चलो वृन्दावन प्रात है।
बात सुन नन्दकी अनन्द भये गोप सबै,
द्वन्द्व मिट जैहै सुख पैहैं भलीभाँत है॥ १॥
भयो प्रात जागे लोग लीने खान पान भोग,

गोपी गोप धेनु धन चले चित चाइके ।
बाँसुरी बजाइ बंक बानक बनाइ गीत,
गोविन्दके गाइ ग्वाल बाल बहु भाइके ॥
मुकुट मयूर भाल सोहै उर गुंजमाल,
लोचन विशाल पट पीत पहराइके ।
लोने लोने छौने संग बौने बौने बने अंग,
तामें घनश्याम राम रहे छवि पाइके ॥ २ ॥

दोहा ।

मगमें करत विलास बहु, नन्दबबायुत जाइ ।
पहुँचे वृन्दावन जहाँ, फूल रही वनराइ ॥ ३ ॥
दृढ़ निवास कीनो तहाँ, लखि शुभबलसमुदाय ।
सघन कुंज छाया जहाँ, यमुना निकट सुहाय ॥ ४ ॥

वृन्दावनवर्णन—कवित्त ।

बने वेश विद्रुम वधूपनके वृन्द जहाँ,
निम्ब किंब अगर अशोक जिंब जाल है ।
सरू सेव सीमर कदार देवदार गाढ़े,
बाढ़े सुरलोकलौं विशाल ठाढ़े शाल है ॥
शँभुजमृगिंद फूली सघन चमेली जहाँ,
छूट रही सौरभ भ्रमत भृङ्गमाल है ।
जामू जटीजाल है कनेरफूलमाल है,
सुताल है तमाल है कदंब है रसाल है ॥ ५ ॥

सवैया।

को वरणै तुलसीवनको हरि, शंभु न ईश बसे जिहि आई।
कोकिल कीर कपोतनकी धुनि, मोरचकोरन शोर सदाई॥
कूजत सारस हंसनके गण, पेख भली उपमा जिय आई।
देव मनो प्रभुआगम जान, रटैं यशको खगरूप बनाई॥६॥

दोहा।

जीव चराचर सुर जहाँ, सुरपति प्रगट सुहाइ।
वृन्दावनसों जगतमें, वृन्दावनही आइ ॥ ७ ॥

अथ वत्सासुरप्रसंग-कबित्त।

भये प्रभु दीह तनु वत्स लियेजाहिं वन,
ग्वालनके गणमिल खेलें हरषाइकै।
बैलके स्वरूप दैत्य गैल गही बैलनकी,
पेख छल रूपहरि जूटे तासों जाइकै॥
घरी आध लरे रिस भरे अरे वीर दोऊ,
दैत्य लीनो मार प्राण उड़े पंख लाइकै।
शंभुजमृगिंद लख देवता प्रसन्न भये,
फूल वर्षाये प्रभु आये गृह चाइकै ॥ ८ ॥

अथ बकासुरप्रसंग-कवित्त।

उठे प्रात कंज नैन लीनी संग सखा सैन,
धेनु सुत आगे कर कीनो वन प्यान है।

चारे पशु लागी प्यास गये सुरसुता पास,
तहाँ बकरूप दैत दीरघ महान है ॥
वेग लील लीने हरि आगसे लगे उगल,
कीनो बल चोंच फार मारचो यातुधान है ।
बाज परे नभमें नगारे भारे देवनके,
शम्भुजमृगिन्द बलहारे सुखदान है ॥ ९ ॥

दोहा ।

घात बकासुरको सुन्यो, तात मात निज कान ।
अब सुत जाहु न वन विषे, करवायो बड़ दान ॥ १० ॥

अथ अघासुरप्रसंग—सवैया ।

एकदिनाप्रभुलै बहु ग्वालन, जात भये वनचारनगैया ।
साँझपरी गृह गै उगही, मग माँहि मिल्योइक दैतछलैया ॥
नाम अघासुरहै जिहिंको, तनुश्यामफनीलखिदवडरैया ।
रोकलयोमगगोपनकोमुख, दीनपसारपहारदरैया ॥ ११ ॥
औरनकोइरह्योमगगोपन, श्यामकीआशधरेमुखमाहीं ।
जान प्रवेश भयो सबको, मुख मूँदलयो हितखावनताहीं ॥
गायऔग्वालबिहाललखेहरिरूपविशालकऱ्योपलमाहीं ।
कंठरुक्योसुकपालफट्यो, छुटप्राणगयेखलकेछिनताहीं ॥

दोहा ।

ताहिमग निकसे प्रभू, बिगसे गाइ गुवाल ।

जयजयधुनि देवन करी, मुनिजन भये निहाल ॥ १३ ॥
तृणावर्तको भ्रात वो, स्वसा पूतना तेह ।
आयो रिस पलटे लिये, पलट गयो निजदेह ॥ १४ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां वृन्दावन गमन
वत्सासुर, वकासुर, अघासुरवधो नाम
षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ विरंचिमतिवंचनाप्रसंग-कवित्त।

एकसमै बनमें गुवालनके गनमें,
विराजैं घनश्याम अभिराम छवि छाइकै ।
शम्भुजमृगिंद खेल खेलतही लागी भूख,
सब मिल दूध भात खायो सुख पाइकै ॥
तौ लौं आयो हंस गौन रीत लख भयो मौन,
हुतो घनबोध क्यों अशोध खात चाइकै ।
प्रीक्षाहित धाइकै चुराइकै वतस बाल,
गयो निजलोक रही मति बिसमाइकै ॥ १ ॥
पाछे सखारहे भाल मिले नाहिं वत्स बाल,
होइकै बिहाल भन्यो लाल ढिग हाल है ।
बिधिकी कुचाल लख ठाढ़े कीने बाल तहाँ,
आप जाइ नए रच आने ततकाल है ॥
तैसो रंग ढंग अरु तैसोई सनेह अंग,
उरमें उमंग आये गेह तैसी चाल है ।

मिले सुत माइनसों वत्स मिले गाइनसों,
प्रेम अधिकायो नाहिं पायो काहू हाल है ॥ २ ॥
आयो विधि बीत्यो साल तेसे लखे वत्स बाल,
भयो है अचम्भ अति उर शम्भु तातके ।
तेज लखि हरिको मजेज मिटगई सबै,
परचो पग धाये गुण गाये बहु भाँतके ॥
अचिंत अनंत अविनाशी सुखराशी प्रभु,
कटै भवफाँसी तव नाम अवदात ते ।
तुहीं निरगुण सरगुण सुखरूप तुहीं,
तुहीं एक रम्यो ओतप्रोत सब जातके ॥ ३ ॥
सुनो जगनाथ ब्रह्मण्ड है विराटरूप,
रवि शशि नैन बैन वेद तुव जानिये ।
उदर उदधि नस नदी मुख पावक है,
दाढ़ यमराज भुजा लोकपति मानिये ॥
हैं वनस्पति रोम सातो लोक शीश तोम,
चरण पताल क्षिति मध्यदेश भानिये ।
अग्रभाग धरम अधरम है पीठ तुव,
भौंहैं भवकाल श्वास पौन पहचानिये ॥ ४ ॥

दोहा ।

नमो चराचरमें रम्यो, बीजरूप करतार ।
चूक परी मोते घनी, बखसो बखसनहार ॥ ५ ॥

सुन प्रसीद बोले प्रभू, तुमरी चूक न काइ।
मम माया दुस्तर महा, काहु न देत भुलाय ॥ ६ ॥
अरपे गाइ गुवाल विधि, गयो वन्दि पग दोइ।
पढै सुनै स्तुति जु यह, मनभावत सुख होइ ॥ ७ ॥

अथ धेनुकप्रसंग-कवित्त।

ग्वालनके भने दोऊ वीर गये तालवन,
तालफल खाये मनभावत रसाल है।
पाछे कहूँ रहे लाल ऊँचे टेर खोजैं ग्वाल,
शोर सुन धायो दैत्य धेनुक कराल है॥
हुतो खरवेष रिस हने पग रामउर,
गहे पग मारचो खल धरणि पछाल है।
परी हाल चाल धाइ संतति विशाल ताहि,
शंभुजमृगिंद सोऊ मारे ततकाल है॥ ८ ॥

दोहा।

सुर हर्षे वर्षे सुमन, जय जय शब्द अलाइ।
ग्वालन युत प्रभु भ्रात यश, करत भये सुखपाइ ॥ ९ ॥

अथ कालीदहप्रसंग-दोहा।

लगी पिपासा आश जल, आये यमुनातीर।
गाई ग्वालन जल अच्यो, विष चढ़ भये अधीर ॥ १० ॥

कवित्त।

पेख दशा कीन्हों कोप कसी कटि बढ़ी ओप,

चढ़के कदंब हरि कूद परे जलमें ।
सुनी सुधि तात मात दौरे सुध भूली सात,
तट आन रोवैं सबै पीटैं भाल थलमें ॥
उतै हरि कालीके फननपै निरत करैं,
जाके विष लागे सबै जीव जरे जलमें ।
तीरतरुवर जरैं उडत पखेरूपरैं,
प्रभुसों न जोरी तोरी फनमाल पलमें ॥ ११ ॥
आई नागवधू धाइ कीनी विनै शीश नाइ,
राखिये कृपानिधान प्रान जात नाहिके ।
ह्यांते तुम जाहु चल बसो रमणीक थल,
बोली तीय तहाँ खगपति मारै चाहिके ॥
लाग्यो पगचिह्न शीश हनै नहिं खगईश,
ऐसे सुन कालीयुत गये उत्साहिके ।
आये तीर कंजनैन पेख मात लही चैन,
छातीसों लगाये मन भाये भये ताहिके ॥ १२ ॥

दोहा ।

नृप प्रीछत शुकदेवप्रति, बूझ्यो विनय समेत ।
काली अरु खगराजको, वैर भयो केहिहेत ॥ १३ ॥

शुकउवाच-कवित्त ।

एकसमै पन्नगारि पन्नग विदारे बहु,
एक नाग देनो नित मथ्यो तिहि संग है ।

निज निज बारी सबै देन लागे नाग नित,
काली निज बारी नाहिं दयी रिस अंग है॥
कोपके पतंगराज भिरयो आन काली संग,
काली हन्यो डंग भई सातों सुधि भंग है।
तजके पताल ततकाल काली आयो इहाँ,
कीन्हो जल यमुनमें भवन उमंग है॥ १४॥

दोहा।

भो मुनि आन भुजंग इत, कैसे भयो निवास।
हन्यो न खगपति आनके, कीजै संशय नाश॥ १५॥

शुक उवाच-कवित्त।

यमुनाके तट तपैं सौभरि सुऋषिराज,
आयो खगराज सबै खाये जीव जलके।
धुनि सुनि मुनि महा पाप लख दीनो शाप,
ढेर इत आइ जल धसै जाहि जलके॥
शाप सुन डरयो ढेर वरयो नाहिं आन इत,
जानके निवास काली आयो वेग चलके।
सुनो अब सुखद सुधासे प्रभु गुण गण,
शम्भुजमृगिन्द दैनहार चार फलके॥ १६॥

अथ दावानल प्रसंग-कवित्त।

कंजनैन मैनछवि संग व्रजवासी सब,
कालीको विदाके परे मग गुण ऐन है।

रहे रैन वनमें प्रमोद कर मनमें,
प्रभात भये लागी आग डरे लख नैन है ॥
चहुँ ओर उठी आग कहाँ कोऊ जाइ भाग,
उर अनुराग ओट गही सुख दैन है ।
करुणानिधान प्रभु दावानल पानकीनो,
दीनो प्राण दान भई सब चित चैन है ॥ १७ ॥

दोहा ।

आये अंग उमंग गृह, को वर्णै छवि ताहि ।
मोहन मुख मुरली बजै, मधुर मधुर धुनि जाहि ॥१८॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां विरंचि मतिवंचन धेनुकासुर कालीनाग दावानल प्रसंग वर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ प्रलम्बासुर प्रसंग फल-बूझ खेल-कवित्त ।

एक दिन चौंप हरि गोपनसों रचो खेल,
जोट जोट कीने जेई हुते सम बलके ।
आयो गोप वेष तहाँ प्रबल प्रलम्ब दैत्य,
ठाढ़ो भयो खल बल राम संग रलके ॥
बूझे फल नाम लहै जीत चढ़ै पीठ जाइ,
हारे सो उतारै वाहि तरु लग चलके ।

बूझ्यो फल राम वेग चढ़े पीठ गही गैल,
उड्यो लै असुर राम इनी मूठ खलके ॥ १ ॥

दोहा।

फूट्यो भाल कराल मुख, बमत रक्त सरवंग।
जनु गेरू नगते झरैं, झरना रंग सुरंग ॥ २ ॥
लीने मार विलम्ब विन, इहि विधि दैत्य प्रलम्ब।
बध्यो संत उर कंसके, हर्षे देव कदम्ब ॥ ३ ॥

श्रीकृष्णजीमें षट्ऋतुवर्णन।

कवित्त।

तनु घनश्याम पट चपला विराजमान,
कंज नैन चन्द मुख पानिप विमल हैं।
अरि कुलकेलिवन हिमले हरनहार,
राधिकानुराग रंग रंगे पल पल हैं ॥
कण्ठ पिक भौंह भृङ्ग सोहै वनमाल अंग,
चण्ड चण्ड करसे दहन अरिदल हैं।
शम्भुजमृगिन्द अभिवन्दन गुविन्दपद,
यामें सदा षट्ऋतु रहत अचल हैं ॥ ४ ॥

अथ चीरहरण लीला—कवित्त।

इतै मिलि सखनसों खेलैं हरि यमुनामें,
उतै मृगनैनी पिकबैनी ग्रीवकंच हैं।

पटतट राख धसीं नंग अंग नीर माहिं,
औचक चुराइ हरि चढ़िगो कदम्ब हैं ॥
चीर ना विलोके तीर पीर बढी शीत नीर,
हरिको विलोकि कोप देत उपालम्भ हैं ।
आहरे घनैया निरदैया आछी कीनी तुम,
भैया की न लाज काज करत अचम्ब हैं ॥ ५ ।
दीजै पट तजो हास सुनै कंस देहै त्रास,
ऐसी तुम कीनी जैसी कोऊ नाहिं करहै ।
हँसे हरि हेर हेर भन्यो ऊँचे टेर टेर,
नीरते निकस लीजै चीर दरवर है ॥
आगे पाछे हाथ दै निकस भई ठाढ़ी सब,
जोर कर याँचो तुम भन्यो पुनि हरि है ।
मान बैन जोरे हाथ दीने तन मन साथ,
प्रेम लखदीने पट तरुते उतरि है ॥ ६ ॥

अथ मधुपुरीद्विजतारणप्रसंग ।

कवित्त ।

एकसमै माधव पधारे मधुवनमाहिं,
भूख लागी बालक पुकारे मुरझाइकै ।
भन्यो हरि द्विजनके मख मधुपुरी माहिं,
नामलै हमारो तुम याँचो तहाँ जाइकै ॥
गये गोप याच्यो अन्न रहे द्विज मौनमन,

बारके किवाँर नाहिं खोले खुनसाइके ॥
गोप रिस खाय आय हरिपै जनायो भेद,
भोजन न पायो द्विज काठिन सुभाइके ॥ ७ ॥
सुने बैन कंजनैन मिलै अन्न करो चैन,
याचो ताहि नारिन समीप एक बार है।
गये गोप याची नारि मान मोद भई त्यार,
लीने भर थार जामें व्यञ्जन अपार है ॥
रहे द्विज हटक हटाई नाहिं हटी सोइ,
आगे राखे थार पायो दरश मुरारि है।
प्रेम लख खायो मन भायो वर दीनो ताहि,
मोमैं तुमैं भक्ती तुम मोमैं भरतार है ॥ ८ ॥

दोहा।

मनवाँछित वर ले सबै, आई हिय हरषात।
गृह आये पूजे न हरि, द्विज गण उर पछतात ॥ ९ ॥

अथ गोवर्द्धनकरग्रहणलीला-कवित्त।

नंद मिल गोपनसों रच्यो मख वासवको,
भन्यो हरि गोधनकी पूजा सुखदैन है।
जापै चरैं धेन सबहीको सुखदैन सदा,
वासवको सुख ना विलोक्यों कछु नैन है ॥

नीके जान माने बैन गोपी गोप चले चैन,
मधुर अहार लै कहारनकी लैन है ।
पूज्यो गिरि जायकै महान मोद पायकै,
गुविन्दगुण गायके सुहाये छवि मैन है ॥ १० ॥
गोधनको रूप कै अनूप भोग भोगे हरि,
पेख व्रजवासी रहे उर बिसमाइकै ।
सुनिकै सुरिंदवृंद मेघनको पठ्यो कोप,
लोप करो जाइ वेग व्रजसमुदाइकै ॥
घुमड़ घटाकी तामें चमक छटाकी छवि,
धार वरषाकी लागी मूसलसी आइकै ।
बढ़्यो जल डूबे गेह गोपी गोप भागे तेह,
त्रास भयो भारी परे पाँइ यदुराइकै ॥ ११ ॥
जान सबै दुखी गिरि गोधन उठायो हरि,
गोपी गोप गाय धाय धसे तरे तासके ।
तात मात पूतकी भुजापै भारी भार जान,
ओट लकुटीन गिरि देत बलरासकै ॥
ह्वी सात वासर अखंड धार मूसलसी,
सरचो नाहिं काज सुरराज आयो त्रास कै ।
हाथ जोर शीश नाय परचो पग वेगधाय,
देख प्रभु औगुण बिसारे दयो हास कै ॥ १२ ॥

दोहा ।

करपल्लव गिरिवर धर्‌यो, हर्‌यो गर्व सुरराज ।
गो गोपी गोपाळ सब, राखे श्रीव्रजराज ॥ १३ ॥

अथ वरुणसे नन्दमोक्षण वैकुण्ठद-र्शावनलीला–सवैया ।

प्रात इकादशिको यमुनातट नन्दलई डुबकी जलमाहीं ।
नीरपती गहि लीन तहाँ इत खोजरहेनमिल्योकितआहीं॥
श्रीहरिजातभयेतितहींपतिनीर अधीरपर्‌यो पगमाहीं ।
नन्दकोल्यावतभेव्रजचंदअनन्दबढ्यो सगरेपुरमाहीं १४

दोहा ।

इक बिर दरश विकुण्ठकी, भई नन्दउर चाह ।
दिव्यदृष्टि दै धाम निज, दरशायो हरि ताह ॥ १५ ॥

अथ दानलीला–कबित्त ।

एक बार बनमें गुवालनके गन में,
प्रमोद कर मनमें मचाई खेळ भायनी ।
उत मिल सखिनसों राधिका कमळनैनी,
आई दधि बेचनके मिस चितचायनी ॥
हंसगोनि पिकबैनी कीर नाक नाग बैनी,
दामिनी दमक देह नेह सरसायनी ।
चंद जान चितवै चकोर चख चारणते,
कंज जान अवली अलीनकी लुभायनी ॥ १६ ॥

दोहा ।

केत भये ब्रजचन्द लख, श्रीराधाको रूप ।
पसिन्धु मथिकै कढ़ी, मानो रमा अनूप ॥ १७ ॥

प्रश्नोत्तरका-कबित्त ।

रोक मग भन्यो कान दीजै वेग दधिदान,
दान कहा दान लेन द्विजनको काम है ।
एरी दीजै कर कर गहो निजकामिनीको,
दीजिये रसम जाय लीजै सुरधाम है ॥
देहरी विशूल शूल सोहत है शम्भुकर,
दीजै री जगात सो तो भूपनको काम है ।
मैं हौं ब्रजराज ब्रजराज कहैं कंसजूको,
कौन कंस सोई जाको डर सुरधाम है ॥ १८ ॥
गोपईश नंदको कुमार जिय जान मोहिं,
मोको जानो नंदिनी नृपति वृषभानुकी ।
महादुराचारी वेग पूतना पछारी हम,
नारिको सँहार कहा वीरता बखान की ॥
गोधन उठायो गाम सगरो बचायो हम,
बाँध्यो जब ऊखल छुड़ायो हम आनकी ।
शम्भुजमृगिंद राधा माधोके वचन सुन,
गोपी गोप पायो सुख परम अचानकी ॥ १९ ॥

दोहा।

इमि कह राधे हँस परी, इतै हँसे व्रजचन्द।
भूली सुधि दधिदानकी, हिल मिल भयो अनन्द ॥ २० ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां दैत्यप्रलंबवध षट्ऋतुचीरहरणमधुवनगोवर्धनदानलीलाप्रसंग वर्णनं नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथ रासलीलावर्णनं—दोहा।

कातिकराकारजनिमें, रचो रास व्रजचंद।
कौतुकहित आये सबै, सुरमुनिजन आनंद ॥ १ ॥

कवित्त।

अमल अकाश चंद चांदनी प्रकाश तैसो,
चन्दकी कलासी तैसी राधे रमणीय है।
तैसी संग भामिनी दमक देहदामिनीसी,
कहा कामकामिनी सु ऐसी कमनीय है॥
तैसे फूल फूले कुंज तैसिये मधुपगुंज,
तैसी पिकबैनी तीय तैसी छबि पीय है।
तैसी लटकीली चाल तैसोही मुकुट भाल,
तैसी वनमाल तैसी वंशी वरणीय है ॥ २ ॥
काजर अधर नैन यावकको रंग दीनो,
किंकिणी गरेमें कटि हार पहरानकी।

अंगद पगन पग नेवर करन पायो,
भयो मतिव्युक्रम सकल गुपकानकी ॥
सासकी न मानी आन पतिकी न सुनी कान,
दौरी हठ ठान सबै तज कुलकानकी ।
वेणु धुनि कानकी सखिन जब कानकी,
रही न सुधि आनकी न खानकी न पानकी ॥ ३ ॥
बीन बैन मधुर मृदंग धुनि पूर रही,
तैसी गति चंग औ मुचंग करताल है ।
तामें हरि ठुमक ठुमक पग नाचत हैं,
तैसी धुनि छुनक मनक घुँगराल हैं ॥
तैसी गति ताली दै भवाली लेत आली तहाँ,
लचक लचक जात कटितट बाल है ।
पेख सुर चकित थकित भये मुनिजन,
इकटक तकत सु खगमृगमाल है ॥ ४ ॥
करत अलाप राग रागिनी स्वरूपवंत,
भये रसमगन गगन सुरपाल हैं ।
रैन षट्मासकी न जानी गति तासकी,
बखानै को विलासकी जु रसिकरसाल हैं ॥
शंभुजमृगिंद तिय पुंजमें गुविंद सोहैं,
मानो घेर लीनो घन विज्जुनकी माल हैं ।
किधों बहु इन्दुनमें इन्दीवर राजत हैं,
किधों नीलगिरिके चहूँघा उडुमाल हैं ॥ ५ ॥

दोहा।

जेती तिय तेते प्रभू, भाषे तहाँ प्रकाश।
जाने परत न चरित हरि, सबन लखे निजपास ॥ ६ ॥

अथ मानलीलावर्णनं-दोहा।

हरिहित लख तिय आनसों, राधे रिस उर आन।
चली चमक निजगेहको, कसकर भौंह कमान ॥ ७ ॥
भयो अरुण अरविंद मुख, बढ़्यो कोप अधिकाइ।
बोरचो रंग महावके, मानो चन्द सुहाइ ॥ ८ ॥
मदनबाण लागे हिये, इत हरि भये बिहाल।
सुधि न पीतपट मुकुटकी, नहिं मुरली वनमाल ॥ ९ ॥
बहुविधि शीस शिखाइ कै, अली पठै जगदीश।
राधा बाधाहरन ढिग, जाइ नवायो शीश ॥ १० ॥
जीत्यो कंज कलानिधी, वश करलीनो पीय।
भौंह कमान कसी अबै, कहो कौन परतीय ॥ ११ ॥
खान पान पहरानकी, सुधि न रही कछु तास।
हंसगमन कर राधिके, चलो पियारे पास ॥ १२ ॥
जान पछान न हित कछू, लेन देन कछु नाहिं।
अली छली नँदलालकी, करत बड़ाई काहि ॥ १३ ॥
जिहि हित ब्रजयुवतीनकी, सही विविधविधिबात।
तऊ मिटी नहिं हीयते, निपट कपटकी बात ॥ १४ ॥

सेवत शिव सनकादि जिहि, जीव जन्तु के प्रान ।
कपटी कहति जु ताहिको, तू तिय निपट अजान॥ १५॥
री दूती कत देत है, इती बड़ाई ताहि ।
परत पगन नित तियनके, विषयआश मनमाँहि ॥१६॥
कहा आन इत बकत है, लघुमुखते बड़ बैन ।
चली जाहु उठकै अबै, काहे करत अचैन ॥ १७॥
तजो मान मन मानिनी, हरिसों कीजै मोह ।
नातर बहु शत्रूनते, कौन छुड़ावै तोहिं ॥ १८॥

सवैया ।

कंज कुरंग करी अहि केहरि, कीर कपोतनको मदभंग ।
हंसको लूट हिमंशप्रभा हर, जीत अनंग कियो बिन अंग ॥
बैर करचो सगरे जगसों, हरिसों इक हेत करो मत भंग ।
ताहिसों टूटे कहा बचि है, मिलिकै सब लूटिहैं तोहिं उमंग॥
यों सुनि बैन डरी उरमें, दृगकंजनि वे हरिरूप लुभानी ।
चीन प्रवीनसखीउरकीगति, जाइभनी ढिग शाँरंगपानी॥
लेहु मनाइ अबै तुम जाइकै, नैन नचाइ कछू मुसुकानी ।
चैनपरीसुनिकैहरिकेउर, जातभयो जिहिंराधिकारानी२०
हेसुनचंदमुखीमृगलोचनि, चूकपरी अबकै बखसीजे ।
पै न करोंअसकामबबाकीसों, आपनजानकृपारस भीजे॥
जो उर चाह सुदण्डकरो हरिशंभुज औररुचै सोइकीजे ।
भौंह कमानकसीअबकौनपै, पांइपरेप्रतिपालनकीजे २१

दोहा।

सुन विनती राधे हँसी, विकस्यो मुखअरविन्द।
पायो मोद मलिंदलौं, श्रीगुविंद तिहि वृन्द ॥ २२ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां रासलीला तथा मानलीला प्रसंग वर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ विद्याधरगन्धर्वप्रसंग।

कवित्त।

आई चैत चौदस बरत कीनो शम्भुजीको,
मन्दिर पधार पूजा करी नर नारि है।
तहाँ एक नाग आयो नन्दके निकट दौरि,
पेख हरि पगसों विदार्यो बिन बारि है॥
भयो देव बूझ्यो हरि कौन है तू सांच रर,
विद्याधर नाम मेरो गंधर्व उचार है।
हँस्यो ऋषि अष्टावक्र जूको तिन दीनो शाप,
भयो नागरूप कीनो प्रभु जु उद्धार है ॥ १ ॥

दोहा।

इमि कह हरिपद वन्दि युग, हरिपुर कीन पयान।
पेख सबै चित चकित भे, आये गृह सुख मान ॥ २ ॥

अथ शंखचूड़दानवप्रसंग–कवित्त।

एकसमै शंखचूड़ दानव प्रबल अति,

घेर गोप गायनको चल्यो चित चायके ।
सुनिके पुकार हरि भिरे ललकार तासों,
मारचो भाल फोर ली नीचूड़ा मणिधाय के॥
दीनी बलरामको सवांर देव कामको,
जपत जाहि नामको परमपद पायके ।
सुर सुख पायके सुबाजन बजायके,
सुमन बरसायके चले सुयश गायके॥ ३ ॥
दीनी मणि रामको निहार वाम रूठीं सबै,
हमसों कपट प्रीति करै छलरास री ।
रहे हरि बोल नाहिं बोली गही मौन मुख,
ऊंची धुनि मधुर बजाई तब बाँसुरी॥
धुनि सुनि व्रजकी लुगाई तज लाजकाज,
फिरैं ना फिराई धाई आई प्रभुपास री ।
छपे व्रजलाल भई बिरहबिकल बाल,
खोजत फिरत वन लेत ऊभे श्वास री॥ ४ ॥
बूझैं बट पीपर कदम्ब शुक सारिकान,
बूझैं पानी पावक पवन क्षिति गैन हैं ।
बूझैं घनश्याम घनश्यामतनु देखे कहुँ,
बूझैं वन पिकनको पेखे पिकबैन हैं॥
बूझैं चन्द चन्दमुख मोहन बिलोके तुम,
बूझैं सरकंजन बिलोके कंजनैन हैं ।

ऐसी लागी बाउरी भई हैं सब बाउरीसी,
बूझैं कूप बावरी न परै चित चैन है॥ ५ ॥

दोहा।

दीनदशा लखितियनकी, प्रगटे श्रीब्रजचन्द।
प्राण परे जनु देहमें, लख उर भयो अनन्द॥ ६ ॥

अथ मधुदानवप्रसंग--कवित्त।

पठ्यो मधुनाम एक दानव प्रबल कंस,
वृषभस्वरूप आयो पूँछको उचायकै।
गिरिलौं उतंग दृढ अंग रिस रंग धायो,
पेख गोप डरे प्रभु लीजिये बचायकै॥
इतै हरि कोप पग रोप भिरे तासों वेग,
पूछसों पकरकै पछारचो धर धायकै।
पायो हरिलोक भये देवता अशोक सबै,
शंभुजमृगिंद प्रभु रह्यो यश छायकै॥ ७॥

अथ वामासुरप्रसंग--कवित्त।

भयो उर संस कंस पठ्यो वाम नाम दैत्य,
आनकै मचाई खेल गोपवेष धारिकै।
खेलमिस गोप गिरि कंदरा दुराये सबै,
दरमें शिला दै पापी धायो रिसधारिकै॥
जुठ्यो आन हरिसों पकर कर करसों,
प्रकोप प्रभु थापरसों मारचो शिर फारिकै।

ऐसे दैत्य तारिकै गुपालन उबारिकै,
सुरन प्रतिपारिकै चले प्रमोद धारिकै ॥ ८ ॥

अथ केशीदानवप्रसंग-सवैया ।

नारद आन भन्यो नृप कंसपै, देवकीकंत करी चतुराई ।
जाइदयोअपनो सुत नन्दको, तासु सुता तुमको दिखराई॥
तैंनविचार करयोमनमें कछु, गोपकथा हम तोहिं बताई ।
जो उपचार बनै तो करो, नतु वेग हनै तुमको यदुराई९॥

दोहा ।

स्वसास्वसापतिकपटको, लख उरमें अवनीश ।
दंपति निकट बुलाइकै, काटन लागो शीश ॥ १० ॥
नारद मुनि उपदेश दै, दीने वेग छुड़ाइ ।
बहुरि भूप निजसभामें, केशी लीन बुलाइ ॥ ११ ॥
तोसम हितू न आन कोउ, करो नन्दसुत हान ।
जो वह जिये तु हम नहीं, यह निश्चय जिय जान॥ १२ ॥
धीरज दीनो कंसको, हूजे अबै निसंस ।
बेग जाइ मैं करूंगो, तुवरिपुको विध्वंस ॥ १३ ॥

कवित्त ।

रूपकै तुरंगको उमंग उर धायो वेग,
आन व्रज ऊधम मचायो रिस अंग है ।
पेखि हरि पीठ दै प्रहारे पग कोप उर,
ढीठ लख पकर पछारचो क्षितिसंग है ॥

फेर उठ धायो ताहि मुखमें धसायो हाथ,
रुक्यो कंठ छूटे प्राण गिरचो रणरंग है।
जूझ हरिसंग पायो दानव अभंग पद,
शंभुजमृगिन्द भयो देवनउमंग है ॥ १४ ॥

अथ अक्रूर प्रसंग--निसानी छंद।

केशी वध सुन नृप डरचो, सब मांहि बखाना।
रामकृष्णको जो हनै, राखै ममप्राना॥
सुन दानव बोले सबै, इत लेहु बुलाई।
मिलकर मारहु ताहि को, जो दोनों भाई॥ १५ ॥
सुन्यो कंस सबको मतो, अक्रूर बुलायो।
सभामांहि सनमान कर, निजनिकट बठागो॥
राम कृष्णको वेग तुम हमरे ढिग आनो।
कौतुक धनुष सुयज्ञको इत होइ महानो॥ १६॥
भो नृप पठे जु दनु ज तुम, जिनके दृढ़ अंगा।
जरे कोप की अग्निमें, जिमि दीपपतंगा॥
हरिसों बनै विरोध नहिं, मानो बच मेरो।
शरण परो नतु होयगो, उतपात घनेरो॥ १७ ॥

कवित्त।

जरासन्ध ससुर अनन्त बल जाके मांहि,
भूमिज बलीको सुत भ्रात मम लेखिये।
दंतवक्र शिशुपाल सखा हैं विशाल मेरे,

मुष्टिक चाणूर अनुचर अवरेखिये॥
देव नर नाग सबै त्रास उर मानत हैं,
कौन आज मोहिं सम बलमें विशेषिये।
मेरे आगे कौन गनतीमें है कृष्ण राम,
युद्धमें जुरे ते शूरवीरता परेखिये॥ १८॥

दोहा।

लखि नृपकी विपरीत मति, उर डरप्यो अक्रूर।
जो अब उत्तर देत हौं, तौ करिहै चकचूर॥ १९॥
बिदा होय नृपते चल्यो, रथ चढि हृदय अनंद।
आज सफल दृग होहिंगे, पेखत श्रीब्रजचन्द॥ २०॥

कवित्त।

साँझसमै नन्दधाम पेखे जाइ घनश्याम,
भयो मन मगन पगन शीश नायो है।
बूझिकै परस्पर क्षेम सुख पायो घनो,
भन्यो नन्द भूप मन कहा अब भायो है॥
भूप अति अधम जु पचै बचै यदुकुल,
धनु मखहेत राम कृष्णको बुलायो है।
सुन प्रभु फूले गात भन्यो वेग संग तात,
चलिये प्रभात नृपकौतुक रचायो है॥ २१॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां विद्याधर शंखचूड मधुकेशी अक्रूरप्रसंगवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः॥ १०॥

अथ गोपीनको विरहप्रसंग-कवित्त।

इतै हरि भये त्यार उतै सुन्यो ब्रजनारि,
विरहबयार लागी भई मति बावरी।
कोऊ कहै चलैं संग कोऊ कहै डूबैं गंग,
कोऊ कहै खाइ विष मरैं तज चाव री॥
कोऊ कहैं कान फार योगिनि बनैंगी आज,
कोऊ कहैं लाज तज पाछे रथ धाव री।
कोऊ कहैं मेरी वीर राखै बलवीर जोई,
देहौं ताहि तन मन धन कर चावरी॥ १॥

कोऊ कहैं तनु तज बनो वन माल हरि,
कोऊ कहैं गुंजमाल बनो सुख देन है।
कोऊ कहैं कुंडल किरीट पट पीत बनो,
कोऊ कहैं मुरली बनोंगी रसदैनहै॥
कोऊ कहैं मृगमद चंदन तिलक बनो,
कोऊ कहैं किंकिणी कपूर छबि ऐन है।
शंभुजमृगिंद संग तजो ना गुविंद जीको,
लालसा करत ऐसे अवला अचैन है॥ २॥

रोवैं शुक सारिका कपोत कल हंस वंश,
रोवैं चार चटक चकोर कर शोरहै।
रोवैं नर नारि पुंज रोवैं अलिमाल गुंज,
रोवैं धेनु धौरी पीरी रोवैं वन मोर है॥

रोवैं तात मात प्रीति रोवैं सखा बन्धु मीत,
रोवैं मृग मृगज वछेरू तिहि ठौर है ।
हरिको गमन किधों प्राणन गमन होत,
भवन भवन भयो दुःखसिंधुघोर है ॥ ३ ॥

दोहा ।

आयो गृह अक्रूर नहिं, आयो है गृह क्रूर ।
सखि निश्चय ब्रज सुखनको, कीन जिनै चकचूर ॥ ४ ॥

अथ मथुराप्रयाणप्रसंग ।

कवित्त ।

बीती निशा उठे प्रात बिदा लीनी वन्दिमात,
संग लीनों तात चले गोपनके वृन्दहै ।
चढ़े रथ दोऊवीर फूले देव मिटी पीर,
पेख ब्रज नारिनको बढ्यो दुःख द्वंद्व है ॥
आगे कीनो गमन यमुन तट आयो तहां,
करचो रथ ठाढो अकरूर सुखकंदहै ।
कीनो नान गोता लाय देख बीच यादोराय,
रह्यो विसमाय पायो परमअनन्द है ॥ ५ ॥
वंदि पद बोल्यो बैन तुहीं जग सुखदैन,
संतनके हेत प्रभु लीनों अवतार है ।
चढ्यो रथ परे मग रह्यो उर प्रेम पग,

पुरके समीप थित करकै मुरारि है॥
जाइ अकरूर वेग दीनी सुध भूपतिको,
डूब्यो दुःखसिन्धुमें न जाको पारावार है।
धसे प्रभु पुरमें प्रमोद कर उरमें,
विलोकनके हेत जुरि आये नर नारि है॥ ६॥

अथ रजकप्रसंग-कवित्त।

आगे मिल्यो रजक पटन पोट लीनी शिर,
भन्यो प्रभु दीजे हमैं कीजे उपकार है।
वैन सुन जरयो रिसभरयो ररयो वाक दुर,
जातके अहीर कहा जानो पटसार है॥
मारयो हरि थापर विदारयो ताहि थापरको,
पटनको लूट कीनो सखन शृँगार है।
नृपपट तातको नीलाम्बरदै भ्रातको,
पीताम्बर पहर लीने आप करतार है॥ ७॥

अथ सुदामाको प्रसंग-कवित्त।

आगे मिल्यो सखा एक नाम है सुदामा जाहि,
वन्दि पग आने गृह हरि सुख पायकै।
षट्रस व्यञ्जन बनाय पकवान घने,
प्रभुयुत गोपन खवाये मन भाइकै॥
प्रेम लखि परम प्रमोद भन्यो लीजे वर,
दीजे प्रेम भक्ति दई ताहि चित चाइकै।

चले नृप धाम कोटि काम अभिराम छवि,
पेखि पुरवाम रहीं मन बिसराइके ॥ ८ ॥

अथ कुबरीप्रसंग-कवित्त ।

आगे मिली कूबरी कुरूप कंसदासी तहाँ,
पेख प्रभुरूप बाढ्यो प्रेम लही चैनहै ।
चन्दन चरचतनु कीनो अर्चन प्रभु,
शीश पगनायो पायो हरि गरे ऐनहै ॥
रीझ प्रभु कूबको निकास करी चंद्रमुखी,
जाके आगे मंद लागे रंभा रति मैनहै ।
परी पग चलो धाम अभी हमैं और काम,
मिलिहैं जरूर कूर जानो जिन बैनहै ॥ ९ ॥

अथ धनुषप्रसंग-कवित्त ।

सुंदर बजार जामें लाखन बपार होत,
मन्द मन्दचले ब्रजचंद सुखकंद है ।
सुध सुन बधू ऐसी देखी नाहिं कधू चढ़ी,
अटन पटन उट पेखत अमंद है ॥
जाइ नृप पौरपै कुबंड खण्ड कीनो वेग,
चके नव खंड भयो शबद बलंद है ।
पेखि अरि डरे नाहिं लरे भाग परे सबै,
हाल चाल परी सुन दुखित नरिंद है ॥ १० ॥

दोहा।

धनुष तोर दरपरफिरे, गोपनयुत गोपाल।
सुनो कथा अब कंसकी, जिहि विधि बीत्यो हाल॥ ११॥

कवित्त।

भयो निशि स्वपन नगन शीश देख्यो निज,
वाहन महिष दिशि दक्षिण गमन है।
उठ्यो प्रात डरचो करचो ऊंचथलमेंनिवास,
सुभट बुलाये आये मल्लनके गन है॥
रची वेग रंगभूमि बाजे ढोल लोग झूम,
घूमत घनेरे वली बलमें मगन है।
बोल नंद लीनी भेट भन्यो भूप पौर बैठ,
चार घटी पाछे मिल आवो गोप गन है॥ १२॥

कुवलयानंदहाथीप्रसंग-कवित्त।

कुवलयानाम एक गिरि सों गर्जिद बली,
ठाढो कीनो मगमें कराल कालरंग है।
इतै हरि गोपन समेत चले अंतरको,
पीलवान पेल्योकोप प्रबल मतंग है॥
पेखि भये पाछे गह पूछसों पछारचो आछे,
फेर उठ लरचो करचो वेग तनु भंग है।
काट गजकंध पाट दंतको स्कंध धर,
आये रंगभूमि रँगे शोणितके रंग है॥ १३॥

धीरन को धीर बड वीरन को वीर भासे,
मल्लन को मल्ल महा ग्वालनको ग्वाल है ।
कामिनीन काम यदुवंशन ऽवतंस जानै,
रंकन उदार सुखसार ऋषिमाल है ॥
सुरन सुरेश जाने गणन गणेश माने,
बालनको बाल रूप कंस जाने काल है ।
शम्भुजमृगिन्द भनै जैसो जैसो भाव उर,
तैसो तैसो रूप दरशायो ब्रजलाल है ॥ १४ ॥

अथ मलयुद्धप्रसंग ।

दोहा ।

इतै कसी कटि काछनी, राम श्याम रण रंग ।
मुष्टिक और चणूर उत, आये युद्ध उमंग ॥ १५ ॥
लख वसुदेव रु देवकी, भये हृदय भय भीत ।
अब हरिविन मम सुतनको, कोय न दीसत मीत॥ १६ ॥
कहाँ कठिन अति असुर तनु, कहाँ कमल ब्रजचंद ।
सखि अनीति कीनी घनी, कंस नृपति मतिमंद ॥ १७ ॥
री सखि चिंता मति करो, ए अविनाशी अंग ।
नैक जाहि भ्रूभंगते, होहि कालको भंग ॥ १८ ॥
तबै नृपति आज्ञा दई, करो युद्ध समुदाइ ।
बाजतभये बजंत्रबहु वीरन उपज्यो चाइ ॥ १९ ॥
हृष्ट पुष्ट सुबलिष्ठ अति, जनु युग मंत मतंग ।
घूमत हैं रणभूमिमें, असुर जात दृढ़अंग ॥ २० ॥

कवित।

कीनी हरि चटपट झपट चाणुरसंग,
जैसे गजराजको मृगिन्द गहै जायकै।
उछलत उमँग चलावत चपेट फेट,
लेटत लरत ना हटत घाइ खाइकै॥
करत परसपर चोटन चपलगति,
लोट पोट लपट लपट परैं चायकै।
खंभन बजायकै चरणचप लायकै,
भिरत रिस खायकै रह्यो है यश छायकै॥ २१॥
गाढ़े गह्यो कोप हरि मारी लात परयो धर,
कीनो चकचूरन चणूररणरंग है।
तैसी भाँति मुष्टिन सों मुष्टिकविदारयो राम,
शल अनुशल दोऊ धाये रिस अंगहै॥
पेखि हरि गहे दहे कोपकी अनलमाहि,
और सब भागे जैसे सिंहते कुरंग है।
जैजैकारभयो दुख देवनको गयो लख,
कौतुक अनूप भयो भूपमन भंग है॥ २२॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचान्द्रिकायां गोपीविरहमथुरा प्रयाणरजकसुदामाकुबरीधनुषहाथीचाणूर मुष्टिकप्रसंगवर्णनंनामएकादशो ऽध्यायः॥ ११॥

अथ नृपकंसप्रसंग--कवित्त ।

पेखि नृप डरचो रह्यो नन्दको विदारो वेग,
मारो उग्रसैन वसुदेवको उमंग है ।
सुन प्रभुकोप पग रोप्यो अरि मारवेको,
थम्भको उपारिके भ्रमायो नृप अंग है ॥
घरी चार अरचो कूद परे प्रभु दाँउ तक,
केशनते पकर पछारचो रणरंग है ।
भयो तनु भंग पद पायो है अभंग तिहिं,
रंग भयो देवन अदेवन कुरंग है ॥ १ ॥
आठ भ्रात भूपके कराल कर कोप धाये,
मारे बलदेव देवलोकमें पठाये हैं ।
शोक नृपतीयको अशोक भये तीन लोक,
उक उक होन लागे मंगल सुहाये हैं ॥
विजय पाय गाजे गोप भाजे अरि चढ़ी चोप,
बाजन बजाय के सुयश हरि गाये हैं ।
तात मात धाये दोउ पूत गर लाये वेग,
भये मन भाये धन गन वरषाये हैं ॥ २ ॥

दोहा ।

इहि विधि असुर संहार कर, लीने सन्त उवार ।
जो यह कथा पढै सुनै, लहै सर्व सुखसार ॥ ३ ॥

अथ नन्दविदाप्रसंग--कवित्त।

कंस हति रामश्याम आये तात मात धाम,
लागे पाँय दई शीश जियो युगचार है।
कीनो सनमान वसुदेव नंदजीको घनो,
पाले मम पूत कीनो बड़ो उपकार है॥
बहुरो श्रीकृष्ण नंदबाबाको विदा कै भन्यो,
यशुमति युत मेरी राखो सदा सारहै।
सुनतही ढूंढ्यो दुख सिन्धु नाहिं पावै पार,
गोकुल को चल्यो भई नदीदृगवार है॥ ४॥
जाय निज धाम यशुमतिपै सुनाई शुध,
कंस हति राम श्याम रहे निज ऐन है।
सुध सुन सातो सुध भूली परी घर माहिं,
पूत पूत रटत रहत दिन रैन है॥
इतै हरि रंकते कियो नरेश उग्रसेन,
करुणानिधान ऐसो कौन गुण ऐन है।
रहै निज गेह माता करत सनेह अति,
रूप लख पूतन अघात नाहिं नैनहै॥ ५॥

अथ गुरुपुत्रानयनप्रसंग।

कबित्त।

विद्या हित राम श्याम जायकै अवंतिकामें,
करी गुरुदेव सेव सरधा महान है।

चौंसठ दिवस माहिं सीख लीनो सबै गुण,
पाछे भन्यो लेहु गुरु भेट सुखदान है ॥
डूब्यो सुत सिन्धु माहिं दीजैप्रभुआनताहि,
तो बिना करै को ऐसो काज सुखदान है ।
वेग जाय आन्यो ममलोक ते गुरूको सुत,
पेख तात मात भये मुदित महान है ॥ ६ ॥

दोहा ।

गुरुपद वन्दि चले प्रभु, मिले सुदामा मीत ।
पुनि आये निजगेहमें, राम श्याम कर प्रीत ॥ ७ ॥

कवित्त ।

परे तात मातके पगन भरे अंक तिनै,
जान्यो निजजनम सफल दिन तास है ।
प्रात जाय मिले प्रभु उग्रसेन भूपतिको,
तिन उठ प्रेमयुत पूजे गुणरास है ॥
चलिकै तहाँते सखा उद्धवसों भने बैन,
जाहु तुम गोकुलमें तात मात पास है ।
आदि ब्रज बासिनके प्रेमकी परीक्षा लेहु,
पाछे योग युगति बखानो ढिग तास है ॥ ८ ॥

अथ उद्धवको ब्रजमें गमन--कवित्त ।

वन्दिकै प्रभूके पद स्यन्दनपै चढ्यो वेग,
आयो नन्दधाम तिन कीनो सतकार है ।

बूझी सुध सुतन बखानी ऊधो नीके अहैं,
हम तो भये हैं जैसे मीन बिन बार है।
जात ना बखाने उपकार मनमोहनके,
गोधन उठायो कीनो ब्रजको उद्धार है॥
आये रिस असुर पठाये यमलोक सबै,
सन्तनके हेत लीनो प्रभु अवतार है।
हरिबिन भारसे भवन गीत गारसे हैं,
विषसी बयार लागे हार हरहार है॥ ९॥

दोहा।

इहिविधि यशुदा नंद मिल, विरहविकल बिललाइ।
कहत सुनत हरिकी कथा, रजनीदयी बिताइ॥ १०॥

अथ ब्रजनारिनकृतउपालंभउद्धवप्रति--

दोहा।

उद्धव सुध सुन प्रातही, आन जुरीं ब्रजनारि।
प्रथम बूझ हरिसारको, पुनि निजकरत उचार॥ ११॥
उद्धव हरिकी प्रीतिकी, रीति न जानी जात।
तन औरे मन औरसे, बगुरेकीसी भाँत॥ १२॥
उद्धव हित कीनो घनो, तज निजकुलकी कान।
बिन हथियारन हत कियो, हमको श्याम सुजान॥ १३॥
मोहन मोहनमें कछू, उद्धव निश्चय भाल।

हुतो जुतो क्यों होत अस, हमरे हाल विहाल ॥ १४ ॥
उद्धव सूधो वाक्य सुन, हम किस गिनतीमाहिं ।
यशुमतिसी मातातजी, जिन पाल्यो कर चाहि ॥ १५ ॥
उद्धव कुबरी वश भए, तज राधे रमणीय ।
कहो कृष्ण विन कौन अस, चतुरशिरोमणि पीय॥ १६॥
सुनो सखी कछु दोष नहिं, जोरी जुरी निसंस ।
ये पालक हैं नंदके, वह दासी नृप कंस ॥ १७॥

कबित्त ।

एक सखी भन्यो कारे होत हैं विपत्ति हेत,
कारो काह्न कुटिल सरप कारो काल है ।
कारी विष हरै प्रान कारो अलि प्रीतिहान,
कारी पिक कूकन वियोगिनको शाल है ॥
कारो तमराज वैर करत कलानिधिसों,
कारो काल खावत सकल जग जाल है ।
शम्भुजमृगिन्द हरि जासों कीनो नेह ऊधो,
तासों कीनो खोह जार विरहकी ज्वाल है ॥ १८ ॥

सवैया मत्तगयन्द ।

कौनको सूखदयो इन उद्ध वमोते सुनोतुमकान्हकहानी।
आदिदुखी वसुदेवऔदेवकी अन्तमें नन्दयशोमतिरानी॥
वातकहाकहिये ब्रजनारिन रोवत नैनरह्यो नहिं पानी ।
क्योंनकुटेवपरैहरिशंभुजचारिकोपूतविचारकीहानी १९

दोहा।

उद्धव पठयो तोहिंको, कौन हेतु ब्रजचन्द।
अब इत आवहिंगे कि नाहिं, साँच कहो सुखकन्द ॥२०॥
योग शिखावनके लिये, मोहिं पठ्यो गुणऐन।
ब्रज युवती सीखो सबै, तौ हरि मिलन सुखेन ॥ २१ ॥
उद्धव वैन अकाज रट, लाज न आवत तोह।
मन मोहन अस वचन पर, मन मोहनसों मोह॥ २२ ॥
उद्धव मन हरि मीतसों, मिल्यो जाय युत प्रीति।
ह्यां उपदेशत कौनको, कहो योगकी रीति ॥ २३ ॥
सुन उद्धव तोसों कहों, कहि दीजो हरि साथ।
हमें बनावत नाथिनी, आप बनत किन नाथ ॥ २४ ॥
नृत्य गीत खेलन हँसन, खान पान पहिरान।
सब सुख तजि हम योगिनी, हरि बिन भई महान ॥२५॥
रज विभूति वेनी जटा, धुनि सिंगी गुण माल।
विरह अनल मन्दिर मढी, दर्शन भीख गुपाल ॥ २६ ॥

सवैया मत्तगयन्द।

नेहकी सेली धरे गरमें दृगबून्दकी माल हियेमहँ ठानै।
कैविरहानलमें समिधातनु आहकीशृंगीबजै तिहिथानै ॥
ध्यानाविभूतिमढ़ी मतिमाहिं जगै दिनरैन करौपियगानै।
कोटिकलाजुकरैहरिशम्भुजभेदवियोगीकोयोगीनजानै ॥

दोहा ।

उद्धव हम योगिनि भई, भोगिनि कुबरी कीन ।
क्यों न होय अस न्याय तिहिं, जिहि नृप कृष्ण प्रवीन२८

सोरठा ।

ब्रजनारिनको नेह, लख उद्धव विस्मित भयो ।
कहत भयो क्षण तेह, धन्य जन्म तुम्हरो सखी ॥ २९ ॥
तुम खोजत कत आन, जिमि मृगमद हित मृग फिरै ।
हृदय बसैं भगवान, हम निश्चय जान्यो अबै ॥ ३० ॥
मोहिं पठयो सुखदैन, प्रेमपरीक्षालेनहित ।
सो देख्यो निजनैन, बनी पूतरी प्रेमकी ॥ ३१ ॥
इमि कह कीन पयान, उद्धव श्रीब्रजनाथपै ।
लख विकसे गुणखान, भन्यो हाल ब्रज तियनको३२॥

कवित्त ।

प्रेम पुतरीसी दुबरीसी कुबरीसी तिय,
विरह जरीसी जुरी आन विन चैन है ।
मेरे सुनो बैन ऊधो मेरे सुनो बैन ऊधो,
मेरे सुनो बैन ऊधो मेरे सुनो बैन है ॥
शम्भुजमृगिन्द परयो शोर चार ओरनते,
फोरन फुरी है एक बात खन तीन है ।
साँच भन्यो सखी तुम साँच भन्यो सखी तुम,
साँच भन्यो सखी तुम झूठे गुणऐन है ॥ ३३॥

दोहा।

सुनि करुणानिधि हँसिपरे, उक्ति अनूठी कान।
जो यह कथा पढ़ै सुनै, पावै पद निर्वाण॥ ३४॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां कंसवध, नंदबिदा, गुरुपुत्रानयन, उद्धवव्रजगमन, गोपीकृतोपालम्भ प्रसंगवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

अथ अक्रूरका हस्तिनापुर पठानेका प्रसंग-कवित्त।

उद्धव सखा ले गए कूबरीके गेह हरि,
प्रेम लखि कीनो तहाँ शैन गुणऐन है।
प्रात उठ मिले अक्रूर को दयाके निधि,
कीनो स्नान पान जो भगत सुखदैन है॥
भन्यो हरि जावो तुम तूरण द्विरदपुर,
बूझो मिल कुंतिका सुतन तासु चैन है।
कहो कंसघात पुनि मिलो जाय पांडुभ्रात,
सार ले सबनकी सुनावो सुखदैन है॥ १॥
जाय गजपुरमें मिल्यो है पांडुपूतन को,
कही सुनी सार लखे दुखित अपार है।
नृप धृतराष्ट्र औ भीषम करण द्रोण,
मिल सबहीको पायो सुख निरधार है॥

भन्यो दुर्योधनको पठ्यो यदुनाथ तोपै,
भ्रातनको दुख दैनो नीको नाहिं कार है ।
शम्भुजमृगिन्द दयो धीर पांडुपूतनको,
आयो बलवीरपै सुनायो सबै सार है ॥ २ ॥

अथ जरासन्धयुद्धप्रसंग--कवित्त ।

सुनो नृपप्रीक्षित सुधासी हरिकथा आन,
जाहि सुनि होत है अखंड सुख जीयको ।
कंसकी जु नारि जरासंधपै करी पुकार,
कीनी हौं अनाथ यदुनाथ हति पीयको ॥
धीर दै सुताको बढ्यो कोप भन्यो रोप पग,
मारों रणमाँझ बाण बेध हरिहीयको ।
चढ्यो संग तेइस अछोहिनी प्रबल दल,
और जे नृपति कौन गनै हठी जीयको ॥ ३ ॥
वज्रनाभ पौंड्रक कवीर अनुशाल्व शाल्व,
दंतवक्र शिशुपाल कालयुयवन है ।
कालकी घटालौं चढ्यो दानवको दल भारी,
चमक छटालौं जामें खग्गनके गन है ॥
बाजत बजंत्र नाहिं गाजत हैं मेघ मानो,
घेरी मधुपुरी वेगि करिकै गमन है ।
इते प्रभु सुन्यो गुन्यो मंत्र उग्रसेनसंग,
कीने एक ठौर वीर यादव अगन है ॥ ४ ॥

सात्यकि बिदुर बलराम अकरूर ऊधो,
चढ़े प्रभु वीरनकी ध्वजिनी बनायकै।
हरिकी कृपाते भए कीटते भृगिन्द सबै,
जुटे जाय शत्रुनसों दुंदुभी बजायकै॥
दुहूं दिशि उमड़ परे हैं दल बादल लौ,
परैं बाण बून्द बीर खेत खुनसाय कै।
लरैं भट धायकै गिरत घाय खायकै,
उठत ढिर चायकै प्रहारैं तेग ताय कै॥ ५॥

फागका रूपक-कबित्त।

मार मार रटत परसपर करैं गान,
बान पिचकारी सांग मुठिका गुलाल है।
नगन खरगकर फूलनकीछरी सोहै
ढालें डफ बाजत नचत भूत माल है॥
भीगे पट शोणित स्रवत रण रंग माहिं,
डारत पतंग रंग अंगन उछाल है।
शम्भुज मृगिन्द करै हेलन उमंग भट,
मानो होरी खेलैं मिलि गोपन गुपाल है॥ ६॥

नदीका रूपक-कबित्त।

शोणित सलिलको प्रवाह भो अथाह जहाँ,
मुंडहैं पषाण रुण्डमाल खपटीन है।
बार हैं सिवार पाग फेन फव रही जामें,

भुज हैं भुजंग लखो मीन अंगुरीन है ॥
मक्र है मतंग नक्र जानिये तुरंग अंग,
चक्र रथ चक्र चित्त चक्र होत चीन है ।
शम्भुजमृगिन्द भने राम औ गुविन्द मिल,
मार दल दानवको नदी कर दीन है ॥ ७ ॥

दोहा ।

कटी चमू चतुरंगिणी, जरासंध लखि नैन ।
कोपि बाण वरषा करी, हरि सन्मुख छिन तैन ॥ ८ ॥

कबित्त ।

इतै हरि तजे बाण सारथी तुरंग रथ,
छत्र ध्वजा काटिके गिराय भूमि दए हैं ।
संध पंच बाण जरासंध को गिरायो धर,
हन्यो बाण पावक भसम भूर भए हैं ॥
दंतवक्र तज्यो चक्र आनिके निकटहरि,
काटि चक्र ताहि के लगाए शर हिये हैं ।
दौर शिशुपाल कोप रच्यो है विशाल युद्ध,
गिरचो भाल बाण लाग लोग विसमए हैं ॥ ९ ॥
वज्रनाभ कोप्यो तासों आन पग रोप्यो राम,
भारी भयो समर गिरायो रणरंग है ।
परे अरराय सब दानव मताके एक,
कीनी कर कोप बाण बरषा अभङ्ग है ॥

सात्यकि अक्रूर ऊधो कीने घने तच्छ मुच्छ,
विदर विदारचो मान भूमिज अभंग है।
श्याम तजि चक्र काटि कोटिक वकत्र अरि,
राम बांध लीने सबै नृपति उमंग है॥ १०॥

दोहा।

कटी त्रिंविंशति छोहिनी, गह्यो ताहि शिरताज।
हरि छुडाय दीने सबै, औरन मारन काज॥ ११॥
बाजे दुंदुभि जीत के, कियो सुरन जयकार।
आए प्रभु निजगेह में, बढ्यो मोद नर नार॥ १२॥
यहि विधि एती फौज ले, जरासंध रिस अंग।
लरचो सतारा बार सो, भई पराजय जंग॥ १३॥

कालयवन प्रसंग–दोहा।

कालयवनको अग्र करि, जरासंध करि क्रुद्ध।
तीन कोटि दानव लिये, बहुरि चढ्यो हित युद्ध॥ १४॥
सुध दीनी नारद मुनी, वेगि मधुपुरी आन।
सैन मलेच्छन की चढ़ी, हूजे प्रभु सवधान॥ १५॥
हरिविधि को कहि द्वारका, इक निशिमेंबनवाय।
मधुपुरके वासी सबै, तिहि को दए पठाय॥ १६॥

कबित्त।

पुरीमें विराजे हरि तौलों आन गाजे अरि,
पेखि प्रभु भाजे पाछे लाग्यो यवनिन्द है।

कीनो जहाँ शैन मुचकुंद गिरि गुफामाहिं,
तापर दै पीत पट दुरे ब्रजचंद हैं ॥
आन पग हन्यो पीठ जाग नृप दीनी दीठ,
भयो जर छार कालयवन बिलंद है ।
दीनो मुचकुंदको दरश सुखकंद निज,
शम्भुजमृगिंद पायो परम अनन्द है ॥ १७ ॥

मुचकुन्द उवाच–कबित्त ।

समै एक सुर असुरन को समर पर्यो,
लर्यो मैं सुरनहित भई जीत रनमें ।
भन्यो तिन हेतु वर याच्यो हम शैन थल,
मोहिं जो जगावै सो भसम होय छनमें ॥
जागे मम भाग दीनो दरश, दयाके निधि,
कोटिन में पावै कोऊ ध्यान धर मन में ।
दीजै निज भगति जगत रहौं तामें सदा,
पूर नृप इच्छ प्रभु आए फेर रनमें ॥ १८ ॥
मिले राम श्याम जरासंधकी बिदारी सैन,
भाग चढे दोऊ गिरि गोतमपै धायकै ।
घेर नृप गिरिको लगाई आग चहुं ओर,
कूदि कै तहाँ ते परे सैन माहिं आय कै ॥
चक्र सों वक्त्र हरि काटे रण अरिनके,
हलको सँभार हलधर हने चाय कै ।

मरी फौज डरचो नृप गयो निज गेह धप,
हरि हलधर थिरे द्वारावती जाय कै ॥ १९ ॥

दोहा।

मंगलचार भयो महा, मिले सबै नर नारि।
जो यह कथा पढै सुनै, उपजै सूख अपार ॥ २० ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां अक्रूरहस्तिनापुर पठावन, जरासंधकालयवनयुद्ध, द्वारावतीप्रवेश-प्रसंगवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

अथ रामकृष्णविवाहप्रसंग—कवित्त।

बूझि विधि आयो राजा रेवत सुताले संग,
द्वारकामें रामको दई है सो विवाहिकै।
रेवती है नाम वाम कामकी न होय ऐसी,
रहीं सबै भाम इकटक चखचाहिकै॥
सुनिये सुधासी रुकमिणिकी कहानी अब,
पूरण करणहारी जन उतसाहिकै।
विदरभदेश तामें कुण्डिनपुरी है एक,
भीषम नृपति लखो पाँच पूत ताहिके ॥ १ ॥
रुकमिणी नाम एक सुंदर स्वरूप सुता,
पेखिमुख चन्द लागै फीको मुखचन्द है।
ताके वरहेत बूझ्यो नारदमुनीको नृप,

भन्यो मुनि मोहन मुकुंद ब्रजचन्द है ॥
भूपमन भायो सुता शकुन पठायो वेग,
द्वारकामें भयो सुन परम अनन्द है ।
तात मात हरषि वरषि धन घनसम,
याचक मयूर कीने तृपत सुछंद है ॥ २ ॥
पाछे भन्यो रुकमी पिताकी मति गई कहा,
सुता दै अहीरको कवन पति पाय है ।
बाजि गजराज नाहीं राजको समाज नाहीं,
लाजको न लेश दधि दूधको चुराय हैं ॥
श्याम तन श्याम मन निपट कपट घन,
तासों कर नातो राजा पाछे पछिताय है ।
ताते हम करि हैं सगाई शिशुपालसंग,
प्रबल प्रतापी रह्यो यश जग छाय है ॥ ३ ॥
हरिसों पलट नाता कीनो शिशुपाल संग,
सुन्यो रुकमिणि भन्यो भ्रातको बुलायकै ।
एरे वीर नीति तज करत अनीति महा,
हंसभाग कागको दयो चहत चायकै ॥
तातकी न मानी अभिमानी नीच मति ठानी,
दुख दै स्वसाको सुख स्वप्नमें न पाय है ।
बूड़िकै मरोंगी कै जरोंगी जाल ज्वालमाहिं,
हरिको वरोंगी कै मरोंगी विष खायकै ॥ ४ ॥

दोहा।

भ्रात बात मानी न तब, गिरी धरणि मुरछाय।
पुनि सुधि कर रोवन लगी, हरि बिन कौन सहाय ॥ ५ ॥

सवैया मत्तगयन्द।

नीरविहीनदशाजिमिमीनकीक्षीरविना शिशुकी जगजाना।
ज्योंधरलोटत हैभट घायल ज्यों मृगशावकसिंहचबाना॥
बूड़त नाउ जिमै नदकेमधि होतदशा जिहिभाँतिअजाना।
त्योंतरफै हरिकेहितकामिनि भूलिगयोसबखानरुपाना। ६

अथ रुक्मिणीकी पत्रिका--कबित्त।

सखीसों मतो कै लिखी पाती कमलापतिको,
भीषमसुताको अभिवंदन गुविंदको।
रुक्मीमतेसों शिशुपाल चल्यो ब्याहहेत,
मोको अवलम्ब प्रभुपद अरविंदको॥
कीजिये न बार बनी वारणसी बार अब,
गीदर गँवार भाग चाहत मृगिन्दको।
कोप मघवाते जैसे राखो ब्रज ब्रजनाथ,
कीजिये सनाथ तैसे मोहिं काटि फंदको॥ ७॥
अहो अविनाशी सुखराशी करो दासी मोहिं,
नातो होय हाँसी मरजैहों फाँसी लायके।
मोसी को है दीन दीनबंधु को है तोहिंसम,

बनै ऐसो साथ कहा राखो लाज आयकै ॥
रहे दिन चार ना विचार रह्यो यामें कछु,
आवत चंदेरीपति ध्वजिनी बनायकै ।
सैनयुत आयकै समरको रचायकै,
सकल अरि घायकै सिधारो यश पाय कै ॥ ८ ॥

बोल एक ब्राह्मण बहुत धन दीनो ताहि,
पाती दै पठायो हरिदिशि समझायकै ।
चल्यो उठ प्रात एकदन्तको मनाय द्विज,
हुतो बलहीन गयो एक कोश धायकै ॥
परचो तनु थकित चकित भयो मनमाहिं,
देहौं कैसे उत्तर पातीको पहुँचायकै ।
परी नींद जान्यो हरि ऐंच्यो निजकला कर,
प्रात पेखि द्वारावती रह्यो विसमायकै ॥ ९ ॥

बूझ पुरनाम मिल्यो हरषि हरीको जाय,
पाती दै अशीश बच भन्यो कर जोर है ।
बूझी हरि सार कीनी सकल उचार तिने,
कीचमें फँसी है धेनु काढ़ो कर जोर है ॥
भन्यो प्रभु धरो धीर पीर मिट जैहै सबै,
भोजन छकाय दीनो दरबि करोर है ।
पाती पढ नैननते नीरको प्रवाह बह्यो,
छातीसों रहे लगाय काती दुख कोर है ॥ १० ॥

बीती निशा भयो प्रात काहूसों न भनी बात,
भए रथारूढ लीनो बृढ़ द्विज संग है।
चंचल तुरंग कीनो गौन पौनके समान,
तूरण पहूँचे पुर कुण्डिन उमंग है॥
पठै सुध भीषमसुतापै द्विजहाथ नाथ,
शम्भुजमृगिन्द भयो भूरिदुख भंग है।
बढ्यो उत्साह भई मिलबेकी चाह उर,
फूली फिरै अंगना समात नाहिं अंग है॥ ११॥

पाछे प्रभु गौन सुन शोच बढ़ो राम उर,
ध्वजिनी लै संग मिल्यो वेगि हरि आनकै।
कीनो शंखशोर आयो भीषम नृपति दौर,
हरिको निहार बलिहार सुख मानकै॥
तीनभौनपति शुभ भौनमें उतारे आन,
पेखि पुरवासी परे पग सुखदानकै।
उतै रुकमी लै शिशुपालको जनेतयुत,
शिबिर करायो हितू पाहुनो पछानकै॥ १२॥

आगम हरीको सुन दबिगे दुमन गन,
तजी तिय आश त्रास चेदिपति मन है।
भन्यो नृप भीषम लगनसमै आयो अब,
सुताको शृँगार पढ्यो अम्बिकाभवन है॥
चली चढ़ कंचनके रथ रुकमिणि रानी,

बानी पिक गावत सकल सखीजन है ।
सुभट अपार नाहिं सूझत है पारावार,
भेरी डफ बजत लजत घनगन है ॥ १३ ॥
पूजिकै शिवाको धरचो ध्यान सुखदानजीको,
जानिकै हृदयकी चढ़े रथ गुणऐन है ।
चीरिकै चमूको गह्यो हाथ रुकमिणिजीको,
रथपै चढ़ाय वेगि चले छविमैन है ।
मोहिनीको पेखि भई मोहित सकल सैन,
मोहन विलोकि भई नारिन अचैन है ।
लही चित चैनी मानो मिले रति मैन दोऊ,
भयो जैजैकार बाजे दुंदुभि सुगैन है ॥ १४ ॥
चेदिपति सुन्यो शीश धुन्यो गुन्यो भूपनसों,
घेरो घनश्याम काम कीनो जिन चोरी को ।
परे अरराय धाय भन्यो यदुराय संग,
कहा लिये जात अरे नृपति किशोरीको ॥
ठाढ़े भए हरि करी बाणनकी झरि खरी,
कीने तच्छ मुच्छ भट खेलैं मानो होरीको ।
भैरव भपक भूत प्रेतन बबक जहां,
योगिनी जबक मुंडमाल पति गौरीको ॥ १५ ॥
करिकै प्रचंड कोप राम दल दानव पै,
मुंड तुंड रुंड काट कीने कुंड लोहके ।

छांड्यो हरि चक्र अरि गजनको चक्र जहां,
शुंडन विहंड खंड आए जे अरोह कै॥
पेखि रण गाढ़ो कोऊ आढ़ो न भयो है भूप,
भाजे तज लाज काज कीने जिन द्रोहके।
शम्भुजमृगिन्द भई और हीकी और विधि,
कंकना रह्यो है शिशुपाल कर सोहके॥ १६॥

दोहा।

जरासन्ध पोण्ड्रक असुर, नरकासुर शिशुपाल।
वज्रनाम रदवक्त्र पुनि, हारे सबै भुआल॥ १७॥
अस जीवनते मरण भल, जान्यो सुत दमघोष।
गहि कराल खग शीश निज, कटन लग्योकरि रोष॥ १८॥
जरासंध धीरज दयो, खोस लयो खग ताहि।
लरैं बहुरि भट जोरि कै, जीतेंगे रण माहि॥ १९॥

रुक्मीप्रसंग—कवित्त।

स्वसाको हरण सुनि रुक्मी सकोप धायो,
भिरयो हरि संग तजे बाण बहु भायकै।
काटके शरन ताहि शिरको कटन लागे,
रानि निज भ्रात आन लीने वरशायकै॥
शीश मुख केशन उतार प्रेत रूप कीनो,
बांध कै पिछारी रथ चले हरषाय कै।

राम छुटकायो पग पुरमें न पायो तिन,
आन थान बस्यो रही लाज उर छायके ॥ २० ॥
उतै हरि गए निज पुरीमें बधूले संग,
भयो जैजैकार पंच शब्दहू सुहाये हैं ।
मिले आन प्रभुको सुरेश शम्भु आदि देव,
ऋषि मुनि सिद्धनके गण तहँ आये हैं ॥
भयो तहां आप चतुरानन बधूको बाप,
कीनो वेद विधिसों विवाह चित्त चाये हैं ।
गज रथ दासी दास दान दै सिधारे देव,
सांझसमै डोला लैके कृष्ण घर आये हैं ॥ २१ ॥

दोहा ।

श्रीरुकमिणि हरि व्याहकी, पढै सुनै जो गाथ ।
परसैना लौं पाप तिहि, कार्टैं श्री यदुनाथ ॥ २२ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां रामरेवती-
कृष्णरुक्मिणीविवाहप्रसंग वर्णनं
नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ प्रद्युम्नजन्मप्रसंग ।

कवित्त ।

कंचन भवन जरे रतन अपार जामें,
मानो हरि धामके दमक रहे नैन है ।

तामें सजी सेज शुभ कोमल कमल सम,
सरस सुगन्ध खान पान सुखदैन है॥
रानी रुकमिणि सों निवास कीनो तहाँ हरि,
प्रेम पगे मधुर मृदुल मुख बैन है।
लखैं छबि ऐनहैं परसपर नैन हैं,
उदित होत मैन है लहत चित चैन है॥ १॥

दोहा।

कामकलान उदोत ह्वै, काम कलान उदोत।
निशा निमिष सी होत नहिं, निशा निमिषसी होत॥ २॥
दश मासन पाछे उद्यो, रुक्मिणिके सुकुमार।
नाम प्रद्युमन धरचो तिहिं, हरअरिको अवतार॥ ३॥

सवैया—मत्तगयन्द।

को वरणै उपमा तिहि बालकी, देव अदेवन को मन मोहै॥
दीननको धन दीन घनो, बखशे गज वाजि जरे जर जोहै।
चंग मुचंग मृदंगनकी ध्वनि, वारवधू मिलि गावति सोहै।
मोदसों गोदलिये सुतको, जननी बलिजात लजातसी भोहै
बीत गए षट द्योस जबै, तब शम्बर दैत तहाँ चल आयो।
बालउठायउद्योनभको, नहिंजानपरचोकित ओर सिधायो
रोय पुकार करी जननी, कत गोसुत योंमुखबैनअलायो।
गोविनवच्छविनाजलमच्छ, विपच्छनपच्छजिमेंदुखपायो

दोहा ।

श्रीहरि चरणन शीश धरि विनय करी कर जोर ।
देहु दयानिधि आनिकै, कहां गयो मम कौर ॥ ६ ॥

कवित्त ।

कामिनी कलाप सुन कीनो हरि ध्यान उर,
शम्बर चुरायो सुत नारदवचनते ।
भन्यो मुनि तेरो रिपु उदयो है कृष्ण घर,
ताको आन सिंधुओर मिटै सोच मन ते ॥
ना तो तोहिं मार निजनारिको छिनाय लैहै,
शम्बरको सीख दै सिधारे मुनि अनते ।
भन्यो रुकमिणिसों विमन मत हूजै रानी,
ऐहै सुत तीययुत जीत अरिगनते ॥ ७ ॥
आगे सुनो श्रोता अब शम्बर कथाको श्रौन,
गयो गृह बालको समुद्र माहिं डार है ।
लील लीनो मच्छ निज भच्छको पछान उर,
फँस्यो सोई मच्छ आनफन्दकके जार है ॥
पूरुव भनी थी मुनि नारद रतीको शीख,
मच्छके उदर परै तेरो भरतार है ।
ऐहै तव द्वादश वरष गोप सेव कीजै,
पाछे मार अरिनको तोहिं लै सिधाय है ॥ ८ ॥
फन्दक सो मच्छ बड़ो दीनो है रतीको आन,

रती दीनो धन ताहि मोद मन मानिकै।
मीन उर फार्‌यो तामें बालक निहार्‌यो बेस,
भयो सुख भारो निजपीयको पछानकै॥
भौनमें दुराय राख्यो धाय पय स्नेह युत,
लाग्यो तनु वढ़न शशीलों सुखमान है।
द्वादश वरषको भयो है तनु तैसी भाँति,
रूपकी अवधि बल पौरुष निधानहै॥ ९॥
रती सुख मान निजकंतको इकन्त ठान,
भन्यो उर लाग अनुराग कर मनको।
पोष्यो कर प्रीत बातैं करति अनीत अब,
कन्त जो कहत दोष लागत न तनको॥
बोली रती पूरुव कथाको सुनो मेरे पति,
ध्यानते जगायो शिव जार्‌यो तिन तनको।
उमा तुव तनु की तनक राख राखी तब,
रुकमिणि उदर दई सो मुखकनको॥ १०॥
उदै भई देह रुकमिणि और कृष्णगेह,
दैत्य हर डार्‌यो सिन्धु लील्यो मच्छ तनको।
कैसे रही शंबरके गेहमें अछूत तुम,
साँच कहो जैसे तोष होय मेरे मनको॥
भनी मम रूप शोभ नारद असुर ढिग,
आन्यो तिन वेग मो वियोगिनी विमनको।

द्वादश वरषको मैं कीनो तो करार तासों,
जोन मिले पीय तो मिलौंगी तोहिं तन को ॥ ११ ॥

दोहा ।

यहि विधि रही अदोष मैं, बचे प्राण तव आस ।
आए दिन मनभावते, कीजे विविध विलास ॥ १२ ॥

निशानी छन्द ।

सुनत भीनधुज कोपकै, निजधनुष सँभारा ।
प्रथमै शत्रु सँहारिकै पुनि करों विहारा ॥
यहि विधि जीत्यो जाय नहि, पिय दानवराई ।
सीखो विद्या दानवी, मैं देत शिखाई ॥ १३ ॥
सुगम होय तव जीतबो, नतु कठिन महाना ।
तुमको गुरु कैसे करों, कामिनिसुनकाना ॥
सुनो कन्त इक जुगतिसों सब मंत शिखावा ।
यामें गुरु शिष भाव नहिं, किंचित दरशावा ॥ १४ ॥
चौपर खेल विषे जबै, मैं डारों पासा ।
ताप्रति मंत्र कहों सबै, तुम सीखो तासा ॥
मान लीन रतिकी कही, विगरचो रतिराई ।
यहि विधि माया आसुरी सीखी समुदाई ॥ १५ ॥

कवित्त ।

कसिकै कवच सब आयुध सजाय अंग,
शम्बर भवन तट गाज्यो वेगि जायकै ।

सुनिकै चमूलै संग निकस्यो असुरपति,
बाणनसों लीनो है हरीको सुत छायकै॥
काट अरि बाणनको निकस्यो रवीलों तामें,
मारिकै अगन बाण दीये हैं जरायकै।
कोटिनको घाय शोण सरिता बहाय रण,
योगिनी बिल बिलाती दीनो है अघायकै॥ १६॥
शम्बर निरख निज ध्वजिनी कटी अपार,
कोपकै आगिनि बाण मारयो वेगि आनकै।
हरि सुत रिस घन बाणको प्रहारयो तब,
तज्यो दैत्यराज पौनबाण धनु तानकै॥
ताकेलिये तूरण उरग बाण तज्यो काम,
कीनो रथ सारथी तुरंग ध्वज हानकै।
तीछन शस्त्र कर काट्यो शीश दानवको,
बाजे देव दुंदुभि वरष फूल आनकै॥ १७॥
पायकै विजैको मिल्यो कामिनी को कामदेव,
विविध विलास हास कीने हुलसायकै।
बैठिकै विमान आए द्वारका पुरीमें धाय,
सुतको पछान मात लीनो कंठ लायकै॥
सुनि कै पुरीमें भयो मंगलसुचार घनो,
पेखि सुत वधू युत रहे हरि चाय कै।
धन वरषायकै सुदुंदुभी बजाय कै,
सुपूत उर लायकै रहे हैं सुख पायकै॥ १८॥

दोहा ।

गुरुजनको वन्दन करी, दंपति धर पग शीस ।
जियत रहो युग चार लों, दीनी तिन आशीस ॥ १९ ॥
कीन पूत को व्याह पुनि, रति सों श्रीकरतार ।
लखि सुन्दर जोरी जुरी, जात सबै बलिहार ॥ २० ॥
जो यह कथा पढै सुनै, कटै त्रिविध तनु रोग ।
होय न कबहूँ ताहि को, सुत तिय बंधु वियोग ॥ २१ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां शंबर दैत्यवधो
रतिप्रद्युम्नविवाहप्रसङ्गवर्णनं नाम
पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

कवित्त ।

सत्राजित यादवने भानु की सु भक्ति कीनी,
ताते पाई मणी सूरसों प्रकाश जास है ।
आठ भार कंचनके देत नित प्रातकाल,
हरिकी सभामें आयो बाँध शिर तास है ॥
भयो उर संस है अगनिके सहस्त्र अंशु,
भन्यो रिपु कंस सत्राजित गुण रास है ।
जान शुभ मणी याची ताहिते रमाके धनी,
भयो सुन मौन गौन कीनो उठ तास है ॥ १ ॥
सत्राजितभ्रात थो प्रसेन मणी बांधी शीश,

गयो वन खेलन अखेटकके काज है ।
मारचो मृगराज मृगराज मारचो ऋक्षराज,
ऋक्षराज लै गयो मणीको सुताकाज है ॥
सत्राजित गुन्यो सबलोगनमें भन्यो आज,
आयो नाहिं भ्रात हरि मारचो मणी काज है ।
सुन्यो गुणपेन लीनी यादवकी सैन,
चले खोजत प्रसेन लख दूषण अकाज है ॥ २ ॥
खोजत निहारचो परचो वनमें प्रसेन चिह्न,
पायो सिंह खोज आगे मरचो मृगराज है ।
आगे जाम्बवान पग लागे अनुरागे तासों,
दूर जाय पेखी एक गुफा यदुराज है ॥
द्वादश दिवसको करार कीनो सबहीसों,
आनत हों मणी बलधनी ऋक्षराज है ।
जायके गुफामें लखी खेलत मणीसों बाल,
रूप लख लालको लुभानी तज लाज है ॥ ३ ॥
पेख ऋक्षराज यदुराजसों जुटचो है आन,
भयो भारी युद्ध क्रुद्ध टरत न टाल है ।
लात मूक चलत चपेट दुहूं ओरनते,
धरणी धसक नग डोलत विशाल है ॥
ऐसी भाँति भिरे भट चौबिस दिवसलग,
हारचो पति भालुक निहारचो जगपाल है ।

धाय परचो चरण शरण कर जोर भन्यो,
तुहीं जगहरण करण प्रतिपाल है ॥ ४ ॥

रामायण प्रसंग-कवित्त ।

भन्यो रिपु कंस चतुरानन के अंश सुनो,
हुते तुम त्रेतामें सचिव रघुनाथ है ।
आदिते बखानो ताहि गाथको संक्षेप करि,
बोल्यो कपि तुहीं रघुनाथ यदुनाथ है ॥
गयो एक समै अजनंदन शिकारहेत,
अंधसुत आयो जल हित घट हाथ है।
बाण लग्यो मरचो नृप डरचो दीनो शाप द्विज,
पूतन वियोग सोग मरे नरनाथ है ॥ ५ ॥

दोहा ।

द्विज द्विजिनी सुत श्रवणयुत, जरे चितामें तीन ।
नृप आयो निजगेहमें, है मनमें अतिदीन ॥ ६ ॥

कवित्त ।

कीनो नृप यज्ञ सुत भए चार मति मान,
राम औ भरत लक्ष्मण शत्रुहन है ।
राम औ लषण ऋषिराज मखकाज लीने,
तारकाको तारिके सुबाहु हत्यो रण है ॥
भयो लोहु कीच सुमरीचको उड़ायो नभ,
पग लग भई है शिलाते ऋषि धन है ।
मुनी युत जाय पुर जनक धनुष तोरचो,

जानकी विवाह मग जीत्यो मृगुतन ह ॥ ७ ॥
आए पुरमाँह कीनो नृप उत्साह घनो,
राम राज देन ठट्यो कोऊ दिन पायकै।
कैकयी नृपतिते भरतहित लीनो राज,
राम सीय लषण विपिन गये धायकै ॥
तज्यो नृप देह कीनो भरत प्रभूसों नेह,
पादकण लैकै बस्यो नंदगाम आयकै।
उते हित संतनके शूपनखा नाक काट,
खरदूषणादि दीने दानव खपायकै ॥ ८ ॥
स्वसादुख रावण मरीचियुत आयो तहाँ,
हन्यो है मरीचि दशकन्ध सीय लै गयो।
राम दुख पाय कपिरायको सखा बनाय,
बाल हति सुधि हेत हनू लंकमें पठ्यो ॥
सीताको पता दै बाग तोर पुर जार आयो,
चढे राम सिंधु बांध पार दल है भयो।
अंगद पठायो समझायो समझ्यो न मूढ,
घेरकै निशंक लंक डंक युद्धको दयो ॥ ९ ॥
कुंभकर्ण लरचो मरचो सैनके समेत रण,
कोप मेघनाद मेघनाद कीनो आनिकै।
नागफाँस डारी सो विदारी खग राज आन,
मारचो मेघनाद लख मन रिसठानिकै ॥
कोप दशकंध रामबंध बरछीसों हन्यो,

हनूसो जिवायो वेग जरी गिरि आनिकै ।
रावणको मार लै सियाको घर आए राम,
भयो जैजैकार मिले सबै सुख मानि कै ॥ १० ॥
रजक वचन सुनि सीय बनवास दीनो,
बालमीकि आश्रम जनम कुश लवको ।
रच्यो मख राम तज्यो तुरग करण श्याम,
जानकी सुतन बांध लीनो लख छविको ॥
शत्रुहन सैनके समेत हन्यो बाणन सों,
तैसी भाँति भरत लषण मारे झविको ।
चढ़े कपि ऋक्षन समेत रामचन्द्र पुनि,
भयो भारी समर बखान करै कविको ॥ ११ ॥
धायो कपिराज कुश भन्यो तू लरैगो कैसे,
नारिको गँवाय पाँय परचो रघुरायके ।
फलसों विहीन बाण मारिके उड़ायो नभ,
आयो दृग भीषण विभीषण रिसायके ॥
भीर परी भाज मिल्यो रिपुको निलाज मूढ़,
मात सम भ्रातवधू लीनी उर लायके ।
होय कैसे जीत जहाँ जुरे ऐसे मीत सबै,
मारचो मुख बाण गिरचो दन्तन तुरायके ॥ १२ ॥
अंगदसों भन्यो रे निलाज कैसे युद्ध जुरै,
मात दै ककाको युवराजपद लीनो है ।
बाण मारि कंदुकलों नभमें उडायो तादि,

नटके बटालों धर परन न दीनो है ॥
मद विन अंक गति भई है त्रिशंकुसम,
भने दीन वैन तौ दयाके तज दीनो है।
मोसे हनुमानसे गिराये गिरे आप प्रभु,
पायके विजैको कुश लव यश लीनो है ॥ १३ ॥
शेषते सुधा लै वालमीकिजी जिवाये सबै,
सबन समेत घर आए रघुनंद हैं।
पाए सुख सर्व गर्व हरचो कपिनकेरो,
शोभत सभामें मानो तीन रामचंद हैं॥
बोल्यो जाम्बवन्त गुण तुम्हरे विअंत प्रभु,
सन्तन के हेत लेत जनम मुकंद हैं।
तन जामती दै पद वंदि कै अनन्द भयो,
दान भक्ति दैकै विदा भये जगवन्द है ॥ १४ ॥
उते दिन द्वादश गुफा के ढिग रहे लोग,
गए पुनि रोवत पुरी को दुख पाय कै।
तात मात रोए सुख खोए विधि आज सबै,
चले सुत खोजन को अम्बिका मनाय कै॥
तौलों तीय युत हरि आए मन भाए भए,
जननी जनक गर लाए सुखपायकै।
आन पुर सभा लाय सत्राजितको बुलाय,
दीनी मणी चाय रहे उर हरषायकै॥ १५॥
भादों चौथ चन्द लख लांछनलग्यो थो हरि,

सुनै जो कथा को देत दोष को मिटाय कै ।
सत्राजित जानी निन्दा भई है महानी मम,
प्रभुको दुखायो क्रूर दूषण लगायकै ॥
ताते मेरे गेह में सुता है सत्यभामा नाम,
जाको लख रूप रति जात है लजायकै ।
मणीयुत सुता दै हरीको सुख पाऊं अब,
शम्भुजमृगिन्द मत लीनो ठहरायकै ॥ १६ ॥
जोरिकै समाज दीनी हरिको विवाहि सुता,
दीनो अनगन धन मन सुख पायकै ।
दई पुनि मनी जग धनीको हरषि उर,
दीनी हरि मोर ऐसे मुखते बखानिकै ॥
सुनो अब भए इत उत घर एक दोऊ,
होऊ जब चाह याच लेहैं रुचिठानिकै ।
मनी तज धनी गए गेहको सनेहयुत,
दुंदुभि बजाय घनो दीननको दान कै ॥ १७ ॥

दोहा ।

कथासुधा सुखसिन्धु की, पढै प्रेम युत जोय ।
धनअर्थी धनको लहै, हरिअर्थी हरि होय ॥ १८ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां रामलीला तथा
जाम्बवतीसतभामाविवाहप्रसंग
वर्णनं नाम षोडशो
ऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ हस्तिनापुरप्रयाणप्रसंग।

दोहा।

पाण्डव जारन हित रच्यो, लाक्षा गृह कुरुराय।
कृष्ण कृपाते नहिं जरे, निकसे मग को पाय॥ १॥

कवित्त।

ताकी सुध लेन हित हरि हलधर युत,
रथ चढ़ि गए हसतिनपुर धायकै।
यथा योग मिले जन दुखी देख दुखी भये,
भीषमपै जाय प्रभु कह्यो समझायकै॥
कह्यो दुर्योधन को भ्रातनको सुखदीजै,
दुख दै न काहू सुख पायो है अघाय कै।
द्वारकापुरी में भयो हाल जो हरीके पाछे,
शम्भुजमृगिन्द सुनो सन्त सुख पाय कै॥ २॥

निशानी-छन्द।

शतधन्वा यादव हुतो, बलमें अधिकाई।
सत्राजित तासों करी, निजसुतासगाई॥
हरिको दई विवाहिकै, सो हृदय रिसाना।
बहुरि भक्त अक्रूर ने, यहि भाँति बखाना॥ ३॥
सत्राजित ऐसी करी, जस करै न कोई।
पुत्री दीनी कृष्णको, तुव निन्दा होई॥

शतधन्वा रिसके गयो, निशिमें खगपानी ।
सत्राजित शिर काटिके, सूरय मणि आनी ॥ ४ ॥
सतभामा सुनिके रिसी, रथ चढी तुरंता ।
पहुँची हस्तिन पुर विषे, जहँ थो निजकन्ता ॥ ५ ॥
शतधन्वा मम तात को, मणि हित दिय मारी ।
ताहि हनो तो जीवनो, नतु मरों मुरारी ॥ ६ ॥

कवित्त ।

धीर दै तियाको आए भ्रात सों पुरीमें प्रभु,
सुनि शतधन्वाहू अधिक भय भीनो है ।
मणी दै अक्रूर वेग भाग्यो पाछे लाग्यो हरि,
चक्र तज शत्रुको विदार शिर दीनो है ॥
मिली नाहिं मणी हटे पाछेको रमा के धनी,
मिले राम भन्यो तासों हत्यो मणी हीनो है ।
जान्यो हृदय राम मोते कीनो है दुराव श्याम,
करिकै गुमान मिथिला को प्यान कीनो है ॥ ७ ॥
तहाँ दुर्योधन नृपति को बुलायो वेगि,
गदायुद्ध ऐसी भाँति दीनो है शिखाय के ।
जंगमें जुरेते भीमसेनते न जीत्यो जाय,
और कौन जीते रण खंभ को बजायके ॥
इत प्रभु आय सभा लाय खोज्यो मणी खोज,
उग्रसेन बैन भने चैन चित पायके ।

लैगयो अक्रूर करै काशीमें कनक दान,
नर पठै लीनो प्रभु तहाँते बुलायके ॥ ८ ॥

दोहा।

ाणि दै श्रीप्रभुको मिल्यो, प्रभु लायो उर साथ।
तभामा सुतको दई, मणी तबै यदुनाथ॥ ९ ॥
ए मृतक बहुजासु हित, वैर बढ्यो बहुमाहिं।
नी धनीके गृह गई, रह्यो हाथ कछु नाहिं॥ १० ॥
ुनि हस्तिनपुरमें गए, भक्तन हेत मुरारि।
ुंतीयुत पांडव मिले, कर उर हर्ष अपार॥ ११ ॥
ूझ परस्पर क्षेमको, भने युधिष्ठिर बैन।
आज अनाथ सनाथ भे, दरश दयो गुणऐन॥ १२ ॥

यमुनाप्रसङ्ग—कवित्त।

एक दिन चढे नरहरि मृगयाके हित,
मारिकै मृगन थिरे यमुनाके तीर है।
लखी तहाँ तीय तप करत अनूप रूप,
बूझो पथ कौन तू सहत तनु पीर है॥
सूरकी सुता हौं तप करत हरीके हित,
वरोंगी हरी को कृस करोंगी शरीर है।
भन्यो नरहरि पै वरी सो हरि वेग तहां,
आए गजपुरमें हरन परपीर है॥ १३ ॥

दोहा ।

विसकर्मातें निशामें, मंदिर शुभ बनवाय ।
यमुनासों घनश्याम मिल, बसे तहाँ सुख पाय ॥ १४ ॥

अथ खाण्डववनजारणप्रसङ्ग ।

दोहा ।

भयो अजीरण अग्नि को, आयो अर्जुन पास ।
सुरपति वन खांडव भषों, तो रुज मिटै प्रकाश ॥ १५ ॥
मदद हित नर हरि चढ़े, लग्यो अग्नि वन माह ।
मघवा मेघ पठै घने, वर्षन लगे अथाह ॥ १६ ॥
रची छात नभ शरनकी, अर्जुन कोप बढ़ाय ।
परन न दीनो बूंद इक, जरचो सकल वनराय ॥ १७ ॥
मय दानव राख्यो तहाँ, सभा रचनके काज ।
बहुरो अनल प्रसन्न ह्वै, आयो सहित समाज ॥ १८ ॥
द्वै तुरंग सित चपल अति, तरकस सिपर कमान ।
हरिकी भेट करी तिसे, हरी दए नर पान ॥ १९ ॥
सभा विचित्र रची तबै, मय दानव सुखराश ।
जलमहँ थल थलमाहिंजल, भासै जहाँ प्रकाश ॥ २० ॥
दुर्योधन पट ऊंच किय, लखि थल में जल बंध ।
हँस्यो भीम मुख ते भन्यो, भयो अंध के अंध ॥ २१ ॥
उपज्यो बीज विरोध को, तादिनते तामाहिं ।
याहीते भारत भयो, हँसी भली जग नाहिं ॥ २२ ॥

चार मास हस्तिनपुरी, रहे संत सुखदाय।
कालिंदीयुत निजपुरी, पुनि पहुँचे यदुराय ॥ २३ ॥

अथ मित्रविन्दासीताप्रसङ्ग-कवित्त।

सुनो संत कान दै सुधासी कथा आन अब,
विंद अनुविंदुभे अवंतिकाके भूप हैं।
मित्रविन्दा नाम एक तिनकी बहन हुती,
सोऊ हरि वरी जग जासम न रूप है॥
कौशलनृपति तिन सप्त वृषभेन्द्र पाले,
एकै बार सबको जु बांधे बली भूपहै।
सीता नाम सुता ताको देहों कर प्रीतिरीति,
नाथे सोई कृष्ण वरी सीता सुखरूप है ॥ २४ ॥

दोहा।

वृषभन बंधनके समै, कीन्हें सप्त स्वरूप।
लख्यो न काहू भेद यह, हरिके चरित अनूप ॥ २५ ॥

अथ भद्रा लक्ष्मणाप्रसंग-कवित्त।

नृप सत्यकीरतिके भद्रा नाम सुता भई,
जाको मुख चंद लख लाजै मुख चन्द है।
शंभुजमृगिन्द उर चाहत गुविन्दपद,
जानिकै हृदयकी सो विवाही ब्रजचंद है॥
हुतो एक प्रबल नरेश देश विदरको,
लक्षमणा नाम सुता भई सुखकंद है।

रच्यो है स्वयंवर अपार नृप जुरे जामें,
पेखिके प्रभाको तिहिं वरचो यदुनंद है ॥ २६ ॥

दोहा ।

रुक्मिणि सीता लक्ष्मणा, भद्रा यमुना जान ।
सतभामा जामावती, मित्रविंदिका मान ॥ २७ ॥
पटरानी प्रभुकी भई, अष्ट महासुखकार ।
सुनो जु तिय ओरो वरीं, नरकासुरको मार ॥ २८ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां हस्तिनापुर तथा यमुना मित्रविन्दा सीता भद्रा लक्ष्मणा विवाहप्रसंगवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ भौमासुरप्रसंग-दोहा ।

हुतो धरासुत पंचशिर, नरकासुर जिहिं नाम ।
सुरपुर नरपुर नागपुर, जीत लिये संग्राम ॥ १ ॥
जीत नृपनकी कन्यका, इकशत षुड़श हजार ।
एक लाख कर बरोंगी, प्रण कीनो निरधार ॥ २ ॥
कुंडल लीने अदितिके, छत्र इन्द्रको छीन ।
प्राग्ज्योतिषपुरमें बसै, कोट ओट बड़ कीन ॥ ३ ॥
कीन चहूंघा पुरीके, दीरघ पुंज पहार ।
खाई दीरघ नीरयुत, आगे अग्नि अपार ॥ ४ ॥
बहुरो सर्प अनंत तहँ, रहैं सदा सवधान ।
महाविकट गढ़में बसै, भौमासुर बलवान ॥ ५ ॥

शिवते वर लीनो तिनै, मातृवाक्य मृतु होय।
शस्त्र अस्त्र कर देव नर, मार न साकै कोय॥ ६॥
सतभामा क्षितिअंश लखि, संग लीन यदुराज।
चढ़े गरुड़ निज शस्त्र गह, दानव मारन काज॥ ७॥

कवित्त।

जाय पुर निकट गदासों गिरि तोरि डाले,
प्रबल प्रताप करि सलिल सुखाय कै।
मेघ वरषाय दई अगनि बुझाय सबै,
धाय खगराय लीनो नागनको खायकै॥
शंखको शबद सुन जाग उठ्यो दैत्यराज,
कीनो आन घोर युद्ध हरि समुहायकै।
तज्यो हरि चक्र कोटि शत्रुनके शीश काटे,
कोटिनको खायो खगराज सुख पायकै॥ ८॥
नृपको प्रधान आन लरचो शिर तीन वारो,
मारचो सो कुटुम्बयुत हरि रिस भरिकै।
मारे नृप आन जल पवन अगिन बान,
कीनो है प्रपंच घनो माया बल करिकै॥
कीने बाण चूर रिस पूर लै त्रिशूल धायो,
भन्यो सतभामा याको मारो वेग करिकै।
चक्रसों वक्त्र शत्रु पांचही उड़ाय दीने,
दानव की मात आन परी पग हरिकै॥ ९॥

कुण्डल विजंती माल छत्रयुत भेट दीनी,
पौत्र हित राज लै परम सुख पाए हैं ।
ऐरावत हाथी सम चौंसठ मतंग लीने,
सकल तियन युत द्वारका पठाये हैं ॥
सुरपुर जाय दीने कुण्डल सुछत्र शुभ,
पूजे हरिराय दिवराय सुख पाए हैं ।
लीनो है तहां ते देवतरु सतभामा हित,
भई सो अनन्द प्रभु पुरी निज आए हैं ॥ १० ॥
षोडस हजार एक शत तिय बरी प्रभु,
जेती तीय ते ते रूप धार सुख दीनो है ।
एक एक तीयके कुँवर भए दश दश,
एक एक सुता भई जग यश लीनो है ॥
एक लाख काहट हजार और अस्सी सुत,
महा रणधीर बीर जानै पुर तीनो है ।
रानी सब षोड़श हजार एक शत आठ,
रमाते रमीन रूप हरिपद लीनो है ॥ ११ ॥

अथ रुक्मिणीसे प्रहास ।

कवित्त ।

हासहेत भीषमसुतासों भन्यो प्राणपति,
कीनी कहा मति तात मात लाज छोरिके ।

ताजिकै कुलीन शिशुपालको बरचो जुमोहिं,
छत्र न चमर कुलहीन विनजोरकै ॥
गिरी सुनि धरणि मरण मन मान लीनो,
पेष हरि डरे गरे लाई सुनिहोरकै ।
सुनो सुखदैनी मृगनैनी मैंतो हास कीनो,
साँच मान लीनो तुम भौंहन मरोरिकै ॥ १२ ॥

अथ प्रद्युम्नअनिरुद्धविवाहप्रसंग ।

कवित्त ।

भोजकट रुक्मी स्वयंवरसुताको रच्यो,
सुन सुन आए सबै नृप बन ठन के ।
पेखिकै प्रद्युजन स्वरूप वर लीनो वधू,
आयो लै पुरीको पूजे सबै सुख मनके ॥
भयो ताको पूत मति शुद्ध अनिरुद्ध नाम,
युद्धमें जतीलो रूप जासु मनअनके ।
रुकमी सगाई सुत सुताकी करी है तासों,
चढे प्रभु दुंदुभि बजत समघनके ॥ १३ ॥
रानी रुकमिणी युत जायकै तिन्होंके गृह,
कीन्हों अनिरुद्धको विवाह उतसाह के ।
नृपति कलिंग कीनो मत रुकमीसों मिल,
खेल छल द्यूत जीतो यादवको चाहके ॥
राम संग रच्यो सार चौपर सबन मिल,

परचो राम दाउ नाहिं मान्यो छल छाइके।
भई नभ वानी नाहिं मानी उपहास ठानी,
जानै कहा गूजर विलास नरनाहके॥ १४॥
कोपि बलराम काट्यो प्रथम रुकमी शीश,
बहुरो कलिंग नृप मार्यो वेगि धायकै।
और भूप भाजे बाजे दुंदुभि विजैके तहाँ,
रानी रुकमिणि सुन रही दुख पायकै॥
आन प्रभु सदन समोध चढे सैन युत,
जायकै पुरीमें कीने मंगल सुचाय कै।
शम्भुज मृगिन्द भयो पूरण प्रसंग यह,
ऊषा को चरित्र अब सुनो सुखपायकै॥ १५॥

अथ ऊषाचरित्र-दोहा।

बाणासुर कन्या हुती, ऊषा नाम अनूप।
सुरज्ञानी लखि स्वप्नमें, श्री अनिरुद्ध स्वरूप॥ १६॥

कवित्त।

चित्ररेखा सखीप्रति भनी जो हियेकी बात,
तिनै लिख चित्र सुर असुर दिखाए हैं।
लिखे नर नाग यदुवंश अनिरुद्ध लिख्यो,
भन्यो यह चोर है निशा को मन भाए हैं॥
सखी सुन धाय अनिरुद्धको उठाय लाई,
ऊषा हरषायकै जगाए सुख दाए हैं।

पायकै पतीको उरलाय सुखपाय घनो,
विरह अनल ताप सकल मिटाए हैं॥ १७॥
बीते चार मास मिल करत विलास महा,
धायो सुन असुर हियेमें रोष भरकै।
भयो कछु युद्ध अनिरुद्ध गहि लीनो तिहिं,
दीनी मुनि नारद खबर ढिग हरिकै॥
चढ़े प्रभु द्वादश अछोहिनी कटक युत,
घेरचो जाय दैत्यको नगर बल करिकै।
पक्ष निज जनके प्रत्यक्ष शम्भु आए तहाँ,
शम्भुज मृगिन्द लखि सैन उर धरिकै॥ १८॥
तज्यो बाण पौन हर हरिपै कमान तान,
हरि नागबाण सों बिदारचो रिस रणमें।
ईशलैकै अग्निबाण मारचो जगदीश पर,
मेघबाण छोड़ खीस कीनो एक क्षणमें॥
प्रेरचो जुरि अनल हरीपै हर कोप कर,
शीत ज्वर संग भंग कीनो भटगणमें।
शम्भुज मृगिन्द शम्भु हार मान तज्यो रण,
कट्यो बड़ कटक रही न सुधि तनमें॥ १९॥
जीत शिवसुतको रतीको पति गाज्यो रण,
धायो पति असुर हरीपै सैन सजिकै।
कोपि धनु करषि बरषि बाण बूंदनलौं,

काटे प्रभु आवतही बाण निज तजिकै ॥
सारथी तुरंग रथ ध्वजिनी विदार कर,
रणमें हरषि हरि गाजे शंख बजिकै ।
लीने कर चक्र अरि शीश भुज काटबेको,
पेख शिव डरे परे बीच रिस तजिकै ॥ २० ॥

दोहा ।

प्राणदान दीनो प्रभू, शम्भुभक्त उर चीन ।
द्वै भुज राखी असुरकी, अपर सर्व कट दीन ॥ २१ ॥
शिव बाणासुरसों भन्यो, समै न ऐहै हाथ ।
सुता देहु अनिरुद्धको, गृह आए जगनाथ ॥ २२ ॥
बाण कृपानिधि पग परचो, जानि सनातन देव ।
मैं अजान जान्यो नहीं, अविनाशी तुवभेव ॥ २३ ॥
निज अवगुण बखशायकै, सुता दई अनिरुद्ध ।
बढ़्यो प्रेम दुहुँ दिशि घनो, उरते मिट्यो विरुद्ध ॥ २४ ॥
द्वैगे दासी दास बहु, रतन अमोलक दीन ।
खान पान बड़ भेट दै, बिदा विनययुत कीन ॥ २५ ॥
करि विवाह अनिरुद्धको, आए निजपुरमाहिं ।
भयो जु उत्सव तिहि समय, को कवि वरणै ताहि ॥२६॥
शिवते पाय हजार भुज, चह्यो युद्ध तिहि संग ।
यही हेतु प्रभु दैत्यको, कीन गर्व गिरिभंग ॥ २७ ॥

पुनि शिवलै पति असुरको, गमने गिरिकैलास।
जो यह कथा पढ़ै सुनै, मिटै त्रिविध ज्वर तास ॥ २८ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां नरकासुर वध, प्रद्युम्नानिरुद्धविवाहबाणासुरगर्वहरण प्रसंग वर्णनं नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

अथ राजा नृगका प्रसंग-निशानी छन्द।

भ्रातनयुत प्रद्युम्नजू, हित शैल सिधारा।
प्यास लगी खोजत भए, वन शीतल वारा ॥ १ ॥
मुसक कूप तामें लख्यो, बड़ गिरगिट जंता।
रहे निकास न निकसयो, करि यतन अनंता ॥
हरिसों आन भनी तबै, सो बात अनूपा।
काढ्यो किरला कूपते, निजकर सुर भूपा ॥
हरि कर लागत तनु छुट्यो, सुररूप सुहावा।
प्रभु बूझ्यो तू कौनहै, निजवृथा सुनावा ॥ २ ॥
सतयुगमें मोको कहैं, नृग नाम नरेशा।
सर्वदान कीने मुझे, सुनिये जगतेशा ॥
एक धेनु द्विजकी रली, मम धेनुनमाहीं।
विन जाने द्विज औरको, दीनी सो आहीं ॥ ३ ॥
मगमें गो जाकी हुती, तिन लीन पछानी।
मेरी मेरी कह तबै, उरमें रिस आनी ॥

झगरा करते परस्पर दोऊ द्विज आये ।
मैं लखि निज अपराधको, मृदु वचन सुनाए ॥ ४ ॥
मोल दश गुणो लीजिये, पुनि धेनु अपारे ।
नहिं मानी हमरी कही, तजि धेनु सिधारे ॥
अंतकाल हमरा भयो, यमराज अलावा ।
दानअसंख्य करे तुम्हैं, नहिं जात गनावा ॥ ५ ॥
भयो एक अघ तोहिंते, लीनो द्विजअंशा ।
ताते गिर्गट योनिमें, परिहो नहिं संशा ॥
द्वापरमें श्रीकृष्णजी, करिहैं निसतारा ।
बहुरि आपने पुण्यको, फल लहौ अपारा ॥ ६ ॥
किरला कीट भयो तबै, मैं निर्जल कूपा ।
कृपा रावरीते भयो, अब देव स्वरूपा ॥
इमि कहि हरिपग लागिकै, सुरपुरी सिधारा ।
पेखि सबै चित चकितभे, आए पुरि द्वारा ॥ ७ ॥

अथ बलभद्रजीका वृंदावनगमनप्रसंग ।

कबित्त ।

एकबार नन्द यशुमतिके मिलनहेत,
आए वृन्दावन बलराम सुखघन है ।
जान राम श्याम तज काम ब्रजलोग धाए,
पेखि राम लाग्यो तात मातके पगन है ॥
यथायोग सबको कुशल बूझ मिले तहां,

सबहूंके मन भए प्रेममें मगन है।
तात मात प्रथमहिं कृष्णकी कुशल बूझी,
आए गृहमाहिं उतसाह भयो मन है ॥ ८ ॥

दोहा।

आई ब्रजवनिता सबै, सुधि सुनि हृदय उमंग।
कहत भई हरिगाथको, पुलकित प्रेम अभंग ॥ ९ ॥

कबित्त।

कोऊ कहै जैसो तन तैसो मन मोहनको,
कोऊ कहै संपतिको पाय गरबायो है।
कोऊ कहै भयो तिय षोडश हजार पति,
कोऊ कहै रंक जान हमैं बिसरायो है ॥
कोऊ कहै एरी सखी कपट निधान कान,
नेहको लगाय फेर मुख न दिखायो है।
भन्यो बलराम घनश्याम अभिराम प्रभु,
मिलिहैं ज़रूर एकबार मन भायोहै ॥ १० ॥

दोहा।

सुनि मनभावन आवनो, भयो कछुक उर धीर।
विरहविकल तरफत हुतीं, ज्यों मछली विन नीर॥ ११ ॥
चार मास ब्रज वास कर, कीने विविध विलास।
बहुरि बिदा ह्वै द्वारका, पहुँचे ढिग सुखरास ॥ १२ ॥

ब्रजवासिन की भक्ति लख, चकित भए मनमाहिं ।
भनी गाथ ब्रजनाथपै, बढ़ी मिलनकी चाहि ॥ १३ ॥

अथ पौण्ड्रकनृपप्रसंग-छप्पय ।

काशीपतिको मीत एक पौण्ड्रक नृपजानो ।
पठ्यो दूत यदुनाथ पास इमि कह तिन मानो ॥
वासुदेव मम नाम भुजा शोभत हैं चारी ।
तुम तजदो यह नाम करो नतु मोसों रारी ॥
चलि दूत वेग यदुनाथपै, आन बात वरणी सबै ।
शम्भुज मृगिन्द गोविन्द तब, युद्ध क्रुद्ध मान्यो झबै ॥ १४ ॥
जो हरि भनी सु दूत जाय निज नृपति सुनाई ।
तिन अछोहनी पांच संग चतुरंग बनाई ॥
चढ़े इते गुणऐन सैन अनगन लै संगा ।
पौंडरनगर समीप मच्यो बड़ जंग उमंगा ॥
तज चक्र शत्रु सैना हनी श्रीयदुपति क्षणमें तबै ।
कह पठ्योनृपतिकोकपट तज, नतरपाजउघरैअबै ॥ १५ ॥
श्रीहरि भने जु बैन तिन्हैं आने नहिं चीता ।
आयो समै विनाश भई नृपमति विपरीता ॥
उरमें ह्वै अति क्रुद्ध युद्ध हरि संग मचायो ।
श्रीहरि चक्र चलाय शत्रुको शीश उड़ायो ॥
तिहि ज्योतिआनहरि मुखमिली जैजैकार भयोतहां ।
शम्भुजमृगिन्द अरिमारिकै, आवतभेनिजपुरजहां ॥ १६ ॥

अथ नृपसुदक्षिणप्रसंग।

छप्पय।

पौंड्रकको जो मीत नाम देक्षिण काशीपति।
मीतमरणसुनजरचोधरचोउरध्यान सुपशुपति॥
मखअरंभ कर हवन कीन पुनि अग्निमँझारा।
प्रगट भयो इक असुर अग्निसम तेजअपारा॥
अतितनु विशालविकरालवड़ कालरूपब्रह्मंडको।
सो चल्यो द्वारकाकीदिशा भस्मकरतातिहखंडको१७॥
श्रीप्रभु असुर निहार चक्र प्रेरचो ततकाला।
कोटि सूर सम तेज जाहिको दिपै विशाला॥
पेखि चक्रको तेज दैत्य भाजे कर त्रासा।
काशीपतिको मार जार दीनो पुर तासा॥
इमिअरिभजायकरचक्रपुनि, श्रीहरिकरशोभतभयो।
शम्भुजमृगिदजिहपापकियताहिशीशपरपरगयो॥१८॥

अथ द्विविदवानरप्रसंग।

छप्पय।

काशीपतिको मीत द्विविद वंदर बलवाना।
मित्र मरण सुनि कापि द्वारका दिशि किय प्याना॥
जार दए बहु गाम नगरमें शोर मचायो।
पर्वत एक उपार राम पर ताकि चलायो॥

करि वेग राम मूशल गह्यो, आवत गिरि चूरण करचो ।
पुनिहने विटपबहुकोपकरि,काज न कछुताकोसरचो१९
विटप पषाण न रह्यो बहुरि तिन मुष्टि प्रहारी ।
भरे परस्पर वीर राम ताके शिर मारी ॥
फूट्यो भाल विशाल वमत मुख रुधिर अपारा ।
गिरचो मृतक ह्वै धरणि सुरन कीनो जैकारा ॥
यहि भाँति द्विविद वानर हत्यो, हर्ष बढ्यो सबके हिये ।
शम्भुजमृगिन्द बलरामको,मुनिजनमिलआशिषदये२०

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां नृप नृगउद्धार रामको वृंदावन गमननृपपौंड्रकसुदक्षिणद्विविदवधप्रसंगवर्णननाम ऊनविंशतितमोऽध्यायः ॥ १९ ॥

अथ साम्बविवाहप्रसंग–ललितपद छन्द ।

दुर्य्योधनकी सुता लक्ष्मणा, तासु स्वयंवर माहीं ।
जुरे देश देशनके भूपति, संगसेन बहु आहीं ॥
हरिसुत साम्ब लक्ष्मणाको गह, रथ चढाय कर भागा ।
दुर्य्योधन आदिक नृप धाए घेर लयो तिहि आगा ॥ १॥
कर्ण बाण मारे हरि सुतको, काट दए तिन सोई ।
हने तुरंग कर्णके ततछिन, सहित सारथी सोई ॥
एक एक शर हन्यो सबनको, जितक नृपति चढ आए ।
श्री हरिसुतको पेख शीघ्रता,धन्य धन्य मुख गाए ॥२॥

पुनि कूपिकर्ण साम्ब वाजीहन, निज रथ पकर चढायो।
लखि दुर्य्योधन उर हर्षित ह्वै, हास्तिनपुरमें आयो॥
सुधि सुन नारदते प्रभु गमने, राम निवारे आई।
मैं आनत हों जाय साम्बको, दुर्य्योधन समझाई॥ ३॥
रथ चढ राम आय हस्तिनपुर, मिले कौरवनसंगा।
भन्यो चूक बालकते होई, कीनो कैद उमंगा॥
तुमको उचित बात नहिं ऐसे, हरिसों वैर बढावा।
कह दुर्य्योधन करी बाल जस, तैसोही फल पावा॥ ४॥
बनै न जाम्बवतीके सुतसों, हमरी सुता विवाहू।
देत रहे यादव सद हमको, निज कन्या करि चाहू॥
भन्यो राम यह साम्ब तासु सुत, रुद्रादिक जिहिं गावैं।
अंत न लहैं जासु योगीजन हृदय निरंतर ध्यावैं॥ ५॥
इमि कहि हलके अग्र नगर धर, सुरसरि बोरन लागे।
लखि सब डरे परे चरणनमें परम प्रेम उर पागे॥
दै दायज युत सुता साम्बको, निजअपराध क्षमावा।
शम्भुज हर इमि साम्ब व्याह करि,राम पुरी निज आवा६

अथ नारदको आश्चर्यदिखावनप्रसंग।

ललितपदछन्द।

एक बार नारद भ्रम उपज्यो, हरिके नारि अपारा।
किस विधि हित राखत हैं सबसों, कैसे करत विहारा॥

दोय नारि जाके गृहमाहीं, रहत न प्रेम समाना ।
देखों जाय रहत किमि सबपै, एकरूप सुखदाना ॥ ७ ॥
नारद गयो वेगि श्रीहरिपै, नारिन युत उठ आगे ।
आने गृह उठि पूजन कीनो, जाने निज बड़ भागे ॥
पुनि नारद गमन्यो गृह दूसर, तहँ बैठे यदुराई ।
रानी चमर करत शिर ऊपर, सखी करत सेवकाई ॥८॥
तीसर गृह बालन सों क्रीडा, करत लखे घनश्यामा ।
जहँ जहँ जाय लख्यो श्री हरिको, करत काज अभिरामा॥
थकित भयो नारद लखि सब गृह, हाँसि बोले यदुराई ।
जबलगि मनमें भ्रम है नारद, तबलगि भ्रमत सदाई ॥९॥
व्यापक लखै सर्व में मोको, कर्म करावन हारा ।
तब याके मनते भ्रम छूटे, अवर न कछू प्रकारा ॥
सब तिय जानत हरि हित मोसों, मैंउदास सब संगा ।
कर्ता भोक्ता लखै मोहिं को, जन्म मरण भयभंगा ॥१०॥
नारद भन्यो न मोको बहुरो, भ्रम उपजै सुखदाना ।
सुनि नारद नहिं मोते दूसर, आदि अंत कछु जाना ॥
लखि मम चरित न अचरज मानो, गुण गावो दिन रैना ।
या सम अपर उपाव न कोई, विनशै भर्म सुखैना ॥ ११ ॥

दोहा ।

सुनि नारद विकस्यो हृदय, गमन कीन पदवंद ।
जो यह कथा पढै सुनै, पावत परमानंद ॥ १२ ॥

अथ नृपपत्नी वचन निज पुत्रप्रति ।

ललित पद छन्द ।

जे नृप पकरे जरासन्धने, रुदन करत शिशु तासा ।
देत दिलासा तिन की जननी, मत रोवो सुखरासा ॥
श्री यदुपति सुमरो दिन रैना, जो संतन सुखदाई ।
हिरनाकुसको मार सभामें, जनकी लाज रखाई १३॥

अथ जरासंधवधप्रसङ्ग ।

ललित पद छन्द ।

जरासंध जो करे कैद नृप, तिन निज दूत पठायो ।
हरिपद वंदि जोरि कर दोऊ, भूपन को दुख गायो ॥
विनय कियो सब राजन मिल कर, जरासंध बलवाना ।
तुम विन कौन छुड़ावै हमको, कृपासिंधु भगवाना १४
सुन कर धीरज दीन दूत को, बिदा करचो क्षण तासा ।
युत कुटुम्ब हस्तिनपुर आए, पांडु सुतनके पासा ॥
पाण्डव श्रीप्रभुके पग लागे, अतिअनंद मन माहीं ।
धर्मसूनुमखराज सूय हित, विनय कियो क्षण ताहीं १५
सुनि नृप जरासन्ध बलकारी, जीवत है जग जौलों ।
कोटि यतन करि राजसूय मख, पूरण होय न तौलों॥
श्रीप्रभु लीन वतार आपने, द्विज सन्तनके काजा ।
ज्योंत्योंकर मारो तिहि नृपको, करो हमारे काजा १६
श्रीहरि अर्जुन भीमसेन युत, विप्रन वेष बनाए ।

तीनों मिल बहु मग उलंघ करि, जरासंध ढिग आए ॥
पेखि चिह्न जाने उर क्षत्रिय तऊ नृपति मुख भाषा ।
भो विप्रो याचो अब मुझते,जोयाचन अभिलाषा १७
श्रीहरियुद्धदान तब मांगो, मानि लीन नरराई ।
साँच कहो अब नाम आपनो, उरते कपट विहाई ॥
अर्जुन भीम इन्होंके नामा कृष्ण मोहिं लखि लीजै ।
जासों इच्छा होय रावरी, तासों युद्ध करीजै ॥ १८ ॥
तुम भागे बहु बार मोहिंते, याते बनै न जंगा ।
अर्जुनमें मोसम बल नाहीं, भिरि है भीमहिसंगा ॥
इमिकह नृप रणरंग भूमि रचि, अनगन गदा मँगाई ।
सन्मुख भए वीर युग ठाढ़े पेखत नर समुदाई ॥ १८ ।
गदायुद्ध माच्यो तिहि अवसर, दोऊ एकसमाना ।
सकल गदा टूटीं लगि चोटन, करत घात विधि नाना ॥
मुष्टियुद्ध जूटे पुनि दोऊ, चलत चोट रण रंगा ।
हटत न पग पाछेको काहू, मानो मत्त मतंगा ॥
भयो सताइस दिवस युद्ध अस, भई भीमतनु पीरा ।
श्रीहरि सैन जनाई ताको, लै तिनका इक चीरा ॥
भीमसेन लखि सैन प्रभूकी, भूप भूमि गहि डारा ।
इक पगतर इक जंघ हाथ लै, कीन वेगि युग फारा ॥
जयजयकार भयो देवनमें, हत्यो दुष्ट जब चीना ।
हुतो पूत सहदेव शीलमति राजतिलक तिहिं दीना ॥

बीस हजार अष्टदश भूपति, हुते जु कैदमँझारा।
सो छुटकायदएक्षणमाहीं,बढ्यो सुयश जग भारा२२
विजय पाय आए हस्तिनपुर धर्मसूनु हरषावा।
पगन परचो भ्रातनयुत प्रभुके, मुखते बैन अलावा॥
कौन करै कारज भक्तनके, तुमविन श्रीजगराई।
जब जब भीर परत संतनको,तब तब होत सहाई २३॥

अथ शिशुपालवधप्रसङ्ग—ललितपदछन्द।

जुरे सकल देशनके राजा राजसूयमखमाहीं।
ऋषि मुनि देव सबै तहँ आए, हरि दर्शन चख जाहीं॥
प्रथम पूज यदुपतिकी कीनी, धर्मसूनु सुख मानी।
सींचे मूलहरीह्वै शाखा,तिमि देवन जिय जानी॥२४॥
लखि शिशुपालजरचोमनमाहीं,उठ्योकोपकरिभारी।
निंदा करन लग्यो श्रीप्रभुकी, मंदमती अविचारी॥
पूजा प्रथम गोपकी कीनी, तजिबड़ राजसमाजा।
जाकी जातपात कछु नाहीं,निर्गुण महानिलाजा२५॥
निर्धन दीननको हितकारी, व्यभिचारी जिय जानो।
करत चरित्र मित्र नहिं काहू, मान पमान समानो॥
शतते अधिक गारि जबदीनी,सभा माहिं अभिमानी।
तजिहरिचक्रशत्रुशिरकाट्यो,बाढ्योमोदमहानी २६॥
ज्योति मिली यदुपतिमुखमाहीं,मुक्तभयोशिशुपाला।
निजपद दीन चेद्य को क्षणमें,हरि सम कौन कृपाला॥

यज्ञ राजसूको कर पूरण, पूरण परमानंदा ।
भाव भक्ति लखि पांडु सुतनकी, रहे तहां सुखकंदा २७

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां साम्बविवाह, नारदको आश्चर्यदिखावनजरासंधशिशुपालवध प्रसंग वर्णनं नाम विंशतितमोऽध्यायः ॥ २८ ॥

अथ शाल्वनृपवधप्रसङ्ग—सवैया ।

शाल्वसुन्योशिशुपालहन्योजब, सैनविशाललियेरिसधायो
घेर लयो हरिके पुरको गढ़मंदिरघेरिके शोर मचायो ॥
सैनसमेत चढ्यो हरिको सुत, वेगि भयोअरिकेसमुहायो ।
शाल्वहन्योतमबाणतबै, रतिकेपतिदीपकबाणचलायो १ ॥
दूरकर्योक्षणमेंतमकोअरिकोरथसारथीवाजिविदार्यो ।
पेखिचक्र्योचितमेंतबदानव, पैअपनेछलकोजुसँभार्यो ॥
गोपप्रकाश कवी लघु दीरघ, रूपधरैकरिकोपकरार्यो ।
युद्धकरैकबहूंनभमेंकबहूंक्षितिमाहिंफिरैचकचार्यो ॥२॥

कवित्त ।

कभी जल कभी आग वरषा करत फिरै,
हरिसुत दीनी माया सकल विदारिकै ।
शाल्वके सचिव हनी गदा हरिसुतउर,
रही ना सँभार तनु बहुरो सँभारिकै ॥
धाय समुहाय दीने बाण वरषाय वृंद,

शाल्व रथके तुरंग दीने चार मारिकै।
छत्र रथ ध्वजा तोर सारथी गिरायो धर,
हाल चाल परी अरिसैन्यमें निहारिकै ॥ ३ ॥
उते प्रभु जान्यो कीनो शाल्व उतपात घनो,
सैनयुत धाए आए वेगि गजपुरते।
शाल्व हरि सारथीको शक्ती चलाई तक,
आवतही बाणनसों काट दीनी हरि ते॥
काट्यो हरि धनुष असुर एक बाण मारि,
जानि निज विजै बैन भने दरवरते।
मारि शिशुपालको गरव भयो तोहिं उर,
आज भाज जैहै कहां छूट मोहिं करते ॥ ४ ॥
भन्यो हरि वीर नाहिं मुखते बकत कछु,
बलको दिखावत हैं रण माहिं लरिकै।
हनी हरि गदा भयो गुप्त सो असुर तब,
मायाको बनायो वसुदेव रिस करिकै॥
आनिकै हरीके सनमुख शिर काट्यो ताहि,
हाहाकार भयो गयो भ्रम उर परिकै।
जानि छल हरी हनी बरछी असुरउर,
परचो धरमाहिं गयो भवसिंधु तरिकै ॥ ५ ॥

अथ दंतवक्रवधप्रसङ्ग—कवित्त।

दंतवक्र आनिकै हरीसों भन्यो सुनो प्रभु,

हन्यो मम भ्रात शिशुपाल रण रंग है ।
तुमसों लरेते युगभांति है भलाई मोहिं,
जीते करों राजको मरेते भवभंग है ॥
ऐसे भनि गदा हरि शीश को चलाई तिहिं,
ताहिको बचाय हरि हनी तासु अंग है ।
भयो तनु भंग पाई पदवी अभंग तिहि,
शम्भुज मृगिन्द भयो देवन उमंग है ॥ ६ ॥

दोहा ।

लरचो विदूरथ भांति तिहि, काट्यो शिर हरि ताहिं ।
जयजयकार भयो तबै, आए निज पुर माहिं ॥ ७ ॥

अथ प्रलम्बदैत्यवधप्रसङ्ग—कवित्त ।

गंगा आदि तीरथ कै नैमिषार आए राम,
तहाँ हरि कथाको सुनत ऋषि वृन्द है ।
रामको निरखि ऋषि उठे सनमान कीनो,
रह्यो थित सूत ताहि हत्यो यदुनन्द है ॥
भन्यो लखि ऋषिन लग्यो है महा पाप तुमैं,
करो सब तीरथ महीके सुखकन्द है ।
द्विजन को देखि एक दानव प्रलम्बइहां,
ताहिको निकन्द करो परम अनन्द है ॥ ८ ॥
मानिकै वचन कीनो राम विसराम तहां,
रची मख शाल आयो दानव कराल है ।

राम कर तूरण पकरि हल संग ताहि,
मूशलसों भंग करचो चूरण कपाल है॥
महासुख भयो दुख गयो द्विज देवन को,
विदा भए राम करि काम ऋषि माल है।
जेतक धरामें कीने तीरथ सकल प्रभु,
आन निज धाम मिले सुख सों गुपाल है॥ ९॥

अथ भक्तसुदामाका प्रसंग।

कवित्त।

भकत प्रभूको एक निर्धन सुदामा द्विज,
जीरन वसन तनु फटे ठौर ठौर ते।
भीख मांग खात गात दूबरो मलीन महा,
हरिको भजन करै सांझ लग भोरते॥
कामिनी सुशीलाकर जोरि कै पतीसों भन्यो,
याचो धन जाय तुम नन्दके किशोर ते।
सखा हैं तुम्हार उर परम उदार सदा,
एतौ दुख पावत हो दारिदकेजोरते॥ १०॥
बुद्धि बल प्रीति रीति याचनते जात सबै,
मीत ढिग याचे चित्त चौगुनो परात है।
भेटहित चावर तनक पट बांध दीने,
पठ्यो हठ ठान चल्यो सकुचत गात है॥
जायकै पुरीकी लखि रचना चकित भयो,

कंचन महल जरे मणि कलसात हैं।
उर अनुरागे मिले आगे हरि सखा जान,
पूजि पग बूझी पुनि गातकुशलात हैं॥ ११॥
षटरस भोजन खवायकै बैठाय मंच,
रानी रुक्मिणिपै बखानी हरि बात है।
अहैं बालसखा एक गुरुपै पढे हैं हम,
कीने उपकार ना उचार कियो जात है॥
गए समिधाको वन माहिं गुरु गेहहित,
परयो बड मेह ढाप लीनो मम गात है।
शम्भुज मृगिन्द सुख दीने बहु भाँतिन के,
याको ऋण रानी नाहिं दियो मोते जातहै॥ १२॥
तंदुल जो आने सो छपाय लीने लाज करि,
भन्यो हरि भाबी कहा पठ्यो हमहेत है।
ऐंच लीनी आपही जु गांठ हुती कांख माहिं,
मूठी दोक चाव तीजी लीनी कर हेत है॥
रानी कर गह्यो कह्यो हेतु निरबह्यो नाथ,
चावर जो चावे कौन जानै कहा हेत है।
चावर न चाबे चाव्यो दारिद सुदामाजूको,
शम्भुजमृगिन्द प्रभु करणानिकेत है॥ १३॥
वंदि पग बिदा कीन करमें कछू न दीन,
कंचनके धाम कीन संपति अपार है।
चल्यो द्विज मगमें विचारे लग्यो मन माहिं,

हरिसों मिल्यो न कछु रिसै घर नारि है॥
गाम आन कंचन भवन लखि चक्यो चित,
सुपन भयो है किधौं हरि उपकार है।
तौलों लखि पीय तीय आन मिली पौंरि माहिं,
शचीसो स्वरूपसंग सुंदरी हजार है॥ १४॥
आरती उतार लै पधारी ऊँच भौन माहिं,
मज्जन करायके सजाए पट ऐन है।
सुधा स्वाद भोजन छकाय सुख पाय भन्यो,
हरिपै गयो तो एती लही चित चैन है॥
द्वैक पसा चावरके चाव दीनो एतो सुख,
सुनौ तीय श्याम सम कौन गुणऐन है।
रंक लखि शंक ना करी है कछू मनमाहिं,
भेंट निज अंक दीने लंकसम ऐन है॥ १५॥

दोहा।

हय गज रथ वाहन दए दासी दास अपार।
भिक्षुकते भूपति करयो, हरिसम कौन उदार॥ १६॥
अहै दूर जो उर बसै, सो लखि सदा हजूर।
है हजूर नहिं उर बसै, सोकहियत है दूर॥ १७॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां नृप शाल्व दन्त वक्र प्रलम्बवध सुदामा भक्तप्रसंग वर्णनं नाम एकविंशतितमोऽध्यायः॥ २१॥

अथ श्रीकृष्णजीका कुरुक्षेत्र गमन प्रसङ्ग—कवित्त ।

हरि एक बार रवि ग्रहण विचार कर,
सकल कुटुम्बयुत आए कुरुखेत है ।
कीनो नान दान सनमान द्विज संतनको,
सुन्यो पुनि आए ब्रजवासी कर हेत है ॥
बढ्यो उर चाय जाय परे तात मात पाय,
गोपी गोप मिले सब आनँद समेत है ।
नंद यशुमति नाहिं अंकते बिछोर सकैं,
मानो रंक पाई निधि बढ्यो अस हेत है ॥ १ ॥
क्षीण तनु पीरो मुख राधिका पगन परी,
प्रेम लखि मोद मन भयो यदुनन्द है ।
आन्यो निज शिबिर सकल ब्रज वासिनको,
मिलीं सब रानी ब्रजनारिन अनंद है ॥
पेखि वृषभानुजाके रूपको चकित भई,
न्याय याके प्रेमवश भए सुखकन्द है ।
नन्द वसुदेव पुनि देवकी यशोदा मिले,
भयो सुख भारी काटे सबै दुख फंद है ॥ २ ॥
राधे रुकमिणि मिलि एकठौर वास कीनो,
आनि मिले पाण्डव प्रभूको हरषायके ।
क्षेम बूझ कीनो सब हीको सनमान हरि,

रैन परी सैन कीनो चैन चित्त पायकै ॥
रानी रुकमिणि हुती चापत चरण हरि,
प्रेममद भयो प्रभू भन्यो हुलसायकै।
राधाजीको दूध देहु दीनो तिन तातो दूध,
पीवत ही हरिपग छाले परे आयकै ॥ ३ ॥
रानी लखि भन्यो कैसे छलका पगन परे,
राधिका हियामें परे ताते दूधसंग है।
रानी तुव पग बसैं हमरे हियेमें सदा,
तुमरे हियेमें नाहिं मम पद रंग है ॥
प्रेम जो करत ताको क्षेम हौं करत सदा,
सुमिर जु मोहिं ताको सुमिरों उमंग है।
रानी लखि राधाजीको प्रेम निज प्रेम भूल्यो,
परी प्रभुपगन गरव भयो भंगहै ॥ ४ ॥
सुखके बहुत दिन खिनलौं बिहाने तहां,
बिदा ब्रजवासी कीने बड़ सनमान कै।
राधिका न जात बिललात समझात श्याम,
बोलीं सतभामा रिस भौंह धनु तानिकै ॥
वैदिन व्यतीते जामें करत अनीते तुम,
परपति आपने न होत दृठ ठानिकै।
ऐसे सुन राधे कूदपरी कोपसर माहिं,

हरिको ले जेहों कै मरेहों तनु हानिकै ॥ ५ ॥
प्रेम लखि तासुको दयाके निधि दौरे वेग,
एक रूप प्रियासों पधारे ब्रजचन्द हैं ।
वृन्दावन माहिं कीन्हे विविध विसाल मिल,
आजलों निवास तहाँ करत मुकुन्द है ॥
दूसरो स्वरूप सब भूपन समोध कर,
द्वारका सिधारे पायो परम अनन्द है ।
शम्भुज मृगिन्द भने गीत जो गुविन्दजीके,
पढ़त सुनत ताहि मिटै दुख द्वन्दहै ॥ ६ ॥

दोहा ।

तबलग नेम मतंगलों, गर्जत तरजत आहि ।
प्रेम सिंह प्रगट्यो नहीं, जबलग उर वन माहिं ॥ ७ ॥

अथ वसुदेवप्रसंग ।

निशानीछन्द ।

एक दिवस वसुदेवजी, हरिपद शिरनायो ।
बात अयोग्य न कीजिये, लखि कृष्ण अलायो ॥
दोष लगत है मोहिंको, तुम तात हमारे ।
हाथ जोरि विनती तबै, वसुदेव उचारे ॥ ८ ॥
हम अजान जानी नहीं, महिमा जगराई ।
आदिपुरुष जान्यो तबै, जब ऋषि न जनाई ॥
द्विज संतनके कारणे, लीनो अवतारा ।

ऋषि मुनि जन तोको जपैं, उर ध्यानमँझारा ॥ ९ ॥
तुम करता सब जगतके, तुव रूप अनंता।
ब्रह्मादिक पावत नहीं, प्रभु तुम्हरो अंता ॥
जन्म समै लखि रूपको, प्रगट्यो उर ज्ञाना।
बहुरो माया मोहते, भूल्यो सुखदाना ॥ १० ॥
निर्मल उर लखि तातको, बोले सुरत्राता।
सबमें मोहिं जु देखि है, पूरण सो ज्ञाता ॥
पूत भाव पेखत रहे, हमको तुम नैना।
भ्रम नाश्यो जब हृदयते, जाने गुणऐना ॥ ११ ॥

अथ देवकीषट्पुत्रानयनप्रसंग।

निशानी छन्द।

बहुरि देवकी आनिकै, यहिभाँति बखाना।
तू करता सब जगतको, गुरुसुत तुम आना ॥
षट सुत मारे कंसने, सो देहु दिखाई।
तपन बुझावो हृदयकी, तुम हो जगराई ॥ १२ ॥
सुन प्रभु गए पताळको, जहँ बलि अवनीपा।
तिन उठि मंच बिठायकै पूजे जगदीपा ॥
हने कंस मम भ्रात जे, आनो सो जाई।
सुन आयसु आने तबे, नहिं बार लगाई ॥ १३ ॥
षट भ्रातनको संगलै, यदुपति घर आए।
लखि माता हर्षी हिये, गहिकंठ लगाए ॥

दूध उरोजनते द्रव्यो, नयनन जलछावा।
पेष सबै विस्मित भए, प्रभुको जु प्रभावा॥ १४॥
श्री हरिपद युग वन्दिकै, वहुरो पितु माता।
जात भए सुरलोकको, षट् सुत सुखदाता॥
हरिके चरित अनन्त हैं, कोउ लहै न पारा।
करै भक्ति भगवन्त की, उतरै भवपारा॥ १५॥

अथ सुभद्राविवाहप्रसंग।

निशानीछन्द।

स्वसा सुभद्रा रामकी, जानो निरधारा।
दुर्योधन ताको चहै, लखि रूप अपारा॥
ताही हित अर्जुन गयो, बनिकै संन्यासी।
वास द्वारकामें करचो, सब पूजैं तासी॥ १६॥
तीर्थ यात्राको गये, यादव इक बारा।
चली सुभद्रा सैन युत, सुखपाल मँझारा॥
अर्जुन समय विचारि कै, सब सैन भजाई।
आनि सुभद्रा रथ विषे, डर चलो पठाई॥ १७॥
सुध सुन श्रीबलदेव जी, आयुध निज लीने।
अर्जुन मारनके लिये, धाए रिस भीने॥
वेग आन श्री प्रभु तबै, बलराम निवारा।
नाते मीतन सों सुनो, नहिं नीकी रारा॥ १८॥
देन लेन इन सों रह्यो, सम्बन्ध हमारो।

अर्जुन ते नीको नहीं, कोऊ निर्धारो ॥
इमि बलको समझायकै, बहु दाज पठायो।
याहि विधि पारथ वधू लै, अपने गृह आयो ॥ १९ ॥

अथ नृपबहुलाश्व तथा श्रुतदेवद्विजप्रसङ्ग।

ललितपद छन्द।

नृप बुलास श्रुतदेव द्विजोत्तम, प्रभुनिजभक्त विचारी।
रथ चढि बहु ऋषियन लै संगा, कीनो गमन मुरारी ॥
मिथिलापुर समीप जब पहुँचे, आगे मिले सुआए।
श्री प्रभुके पद पंकज लागे, भाव भक्ति प्रगटाए २०
भन्यो विनययुत चलिये श्रीहरि, पावन कीजै गेहा।
श्रीयदुपति इकसमपहिंचान्यो द्विजनृपको जु सनेहा॥
ऋषिन समेत रूप द्वै धर कै, गए दुहुँनके धामा।
भए प्रसन्न युगल मन माहीं, पूजे प्रभु अभिरामा२१
बहुविधिके व्यंजन नृप ख्वाए, कंदमूल द्विज दीने।
राव रंक मनमें नहिं आनत, श्रीहरि प्रेमअधीने ॥
केतक दिवस निवास तहाँ करि, भक्तनके हितकारी।
भक्तिदानदै बहुरि ऋषिन युत, आए धाम मुरारी२२

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां कुरुक्षेत्रा-
गमन, सुभद्राविवाह, बहुलाश्व श्रुतदे-
वभक्तप्रसंग वर्णनं नाम द्वाविंश
तिमोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथ वेदस्तुति-भुजंगप्रयात छन्द ।

हरीको जपो धार उरमाहिं ध्याना ।
अहै राव औ रंक जाके समाना ॥
रचे तीन लोका घनी सृष्टि साजी ।
सभीके विषे ज्योति जाकी विराजी ॥ १ ॥
यथा धाम अभिराम कोऊ सँवारै ।
भली भाँति तामें पुनः दीप बारै ॥
तथा ज्योति जानै प्रभूकी अपारा ।
सभी माहिं कीनो जिनै है पसारा ॥ २ ॥
लखो रूप सगुणं त्रिलोकी जु आही ।
अहै निर्गुणं ज्योति जो ताहि माहीं ॥
भए हैं प्रभू श्वास ते वेद चारा ।
करै सो इमं ओप ताकी उचारा ॥ ३ ॥
अहो नाथ जो ज्योति थारी उजाशा ।
जगत माहिं सारे करै सो प्रकाशा ॥
पुनः स्थावरं जंगमं जीव जेते ।
प्रभू ज्योति ते होत चैतन्य तेते ॥ ४ ॥
सभीमें बसै औ सभी ते नियारो ।
नहीं जान जाई कछू अंत थारो ॥
तुहीं रूप साक्षी स्वयं है प्रकाशा ।
बँधे जीव जानो निजं कर्मपाशा ॥ ५ ॥

तुहीं दूर नेरे सभीमें बियाप्यो।
तुहीं अंत्रयामी सबै थाप थाप्यो॥
जगज्जीव हैं तोर माया उपाए।
कृतंके नुसारी सबै धन्द लाए॥ ६॥
छुटै तो कृपाते फँसै मोह जाला।
नहीं आनको ओट दीसै कृपाला॥
कछं निर्गुणं रूप जान्यो न जाई।
भजे सर्गुणं सिंधु भवपार जाई॥ ७॥
तनं मानसं लै जपै जाप कोई।
जगज्जीवनं धन्य ताको सु होई॥
नमस्ते नमस्ते नमस्ते मुरारी।
कवी शम्भुजंसिंह लीजे उबारी॥ ८॥

दोहा।

इमि वेदन स्तुति करी, पढ़ै सुनै नर जोय।
मन वांछित फल जग लहै, अंत परमपद होय॥ ९॥

अथ शिवमोचन लीला—ललितपद छन्द।

भस्मासुर तप कीन शम्भुको, भस्म करन तनु लागा।
अग्नि कुण्डते प्रगट भयो शिव जान भक्त अनुरागा॥
मनवांछित वर मांग लेहु तुम, बोल्यो दावन तबहीं।
जाके शीश हाथमें राखो, भस्म होय सो तबहीं॥ १०॥
दे वरदान चले जब शिवजी, दानव हृदय विचारी।

प्रथमै शंभुशीश कर धरिकै, लेवहुँ सुंदर नारी ॥
शिवपाछे धायो जब दानव, भागे कर उर त्रासा ।
फिरे त्रिलोक न राख्यो काहू, धारी उर हरि आशा ११
अंतर्यामी जान हृदयकी बटुको रूप बनावा ।
दानवके समीप ह्वै श्रीपति, कोमल वचन सुनावा ॥
बावरके पाछे कतपर हो, भयो शाप द्विज केरा ।
याते वचन फुरै नहिं याको, भूतन माहिं बसेरा १२
अपने माथ हाथ धर देखो, कर शिर धारचो जबहीं ।
भस्म भयो दानव तब क्षणमें, प्रगट भए शिव तबहीं ॥
जयति सच्चिदानन्द मुकुन्दा, स्तुति मुखों उचारी ।
पदअरविन्द वन्दिकर गमने, उरअनंदभाभारी॥१३॥

कविकी उक्ति–दोहा ।

खल उपकार न कीजिये, कीने होत कलेश ।
भस्मासुर वरदान दै, पछताने शिव जैस ॥ १४ ॥

अथ त्रिदेव परीक्षा प्रसंग–निशानी छन्द ।

एक समय तट गंगके, बहु जुरे ऋषीशा ।
कहत भए त्रयदेव जे, विधि हर जगदीशा ॥
इनमें को बड जानियै, सम विभव विलासा ।
भन्यो भृगू मैं परखि हों, नहिं कीजै सांसा ॥ १५ ॥
प्रथम भृगू विधि पै गयो, नहिं नमो अलाई ।
विधिलखिकोपकरचोहृदय, ऋषिगयोपलाई ॥

तैसेही शिवपै गयो, नहिं कीन प्रणामा।
मारन लगे त्रिशूल सों, पकरचो कर वामा॥ १६॥
बहुरो गयो विकुंठ में, कीनी हरि सेना।
इनी लात भृगु उर विषे, जागे गुणऐना॥
भृगुपदको चापन लगे, मृदु वचन उचारा।
पीर भई पद कमलको, हिय वज्र हमारा॥ १७॥
क्षमा सिंधु लखि प्रभूको, वंदे पद कंजा।
आयो ऋषिन समाजमें, विकसे दृग कंजा॥
विष्णु पूजबे योग्य हैं, सतगुण अधिकाई।
विधि हरमें रज तमोकी, जानो सरसाई॥ १८॥

दोहा।

जग सुख सम्पति देत हैं, शिव विरंचि सुर आन।
हरिविन दाता मुक्तिको, और न कोऊ जान॥ १९॥

अथ अर्जुनको निजस्वरूप दरशावन, शंखचूड द्विजके दशपुत्रों आनय प्रसङ्ग-निशानी छन्द।

सभामाहिं शोभित हुते, इक दिवस मुरारी।
मृतक पुत्रको विप्र लै, आयो रिस धारी॥
ह्वै अधर्म तुवपुर विषे, सुर ऊँच अलाई।
याते मम नव सुत मरे, जन्मत जगराई॥ २०॥
सुन अर्जुन बोल्यो तबै, कर गर्व महाना॥

बसैं सुभट बहु पुरविषे, धन गुण नहिं जाना ।
अहो विप्र मैं राखिहों, सुत दशम तुम्हारा ॥
जो मरि है तो जलूंगा, मैं अग्नि मँझारा ॥ २१ ॥
जन्म समय सुत दशमको, पुनि आयो जबहीं ।
अर्जुनको द्विज लै गयो, निज घर में तबहीं ॥
वेग धनुष गहि शरनसों, द्विजको गृह छायो ।
पवन प्रवेश न करि सकै, अस यत्न बनायो ॥ २२ ॥
जन्मतहीं सुत छिप गयो, द्विज भन्यो सशोका ।
अबकी विरिया पूतको, हम मुख न विलोका ॥
लज्जित ह्वै अर्जुन तबै, यमपुरी सिधायो ।
तीन लोकमेंफिरि थक्यो, द्विज सुत नहिं पायो॥२३॥
जरन लग्यो पथ आनिकै, बड़ चिता बनाई ।
यह सुध सुन तूरण तबै, आए यदुराई ॥
रथ चढ़ाय मगमें परे, सुख सों करतारा ।
सप्तद्वीप सागर सबै, क्षणमें ह्वै पारा ॥ २४ ॥
गमने लोकालोकढिग, जहँ है तमरासा ।
चाँदन जहां न चंदको, नहिं सुर प्रकाशा ॥
तहां सुदर्शनचक्रको, कीन्हो उजियारा ।
आगे नीरवियंत में, गमने सुखसारा ॥ २५ ॥
मंदिर एक लख्यो तहां, रवि कोटि प्रकाशा ।

ब्रह्माण्डन कोटिन पती, तहँ करै निवास॥
कोटिक देवी देवता, करते नित सेवा।
ब्रह्मादिक जानत नहीं, जग जाको भेवा॥ २६॥

अथ स्वरूपवर्णन—छप्पय।

फणि पतिफण पर वास श्यामसुंदर स्वरूप धर।
शीश मुकुट वनमाल पीतपट चटक चारु वर॥
कुण्डल कर्ण अमोल लोल राजत उर भृगुपद।
शोभत शुभ भुज अष्ट भक्तजन कष्टहरण सद॥
जयविजय आदि सेवक जहां,सेवत दरकर धर छरी।
शम्भुजमृगिन्दपेरुयोतहां,निजस्वरूपयहि विधि हरी २७
अर्जुन युत तब हाथ जोर कीनो प्रणाम हरि।
तब श्रीमुख प्रभु भन्यो कीन भलदर्श दीन वर॥
धरणी भार उतार कार कीने अपार पुन।
सगरे असुर संहार करे निर्भय सुर मुनि जन॥
अब वेग आन निज धाममें, कर अनन्द विलसो सदा।
शम्भुज मृगिन्द गोविन्दजी,मान लीन सो वचतदा॥२८॥

दोहा।

ले दश बालक तहां ते, पुर आए सुखकन्द।
शंखचूड़द्विजको दए, लख उर भयो अनन्द॥ २९॥

अर्जुन चित्त चकित भयो, गई गर्वकी बात ।
जो यह कथा पढ़ै सुनै, लहै सर्व सुख शांत ॥ ३० ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायांवेदस्तुति, शिवमोचन लीला, त्रिदेव परीक्षा द्विजपुत्रानयनप्रसंग वर्णनं नाम त्रिंविंशतितमोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अथ द्वारकापुरीप्रसंग ।

कवित्त ।

तीन लाख कंचन भवन हरिजीके बन्यो,
देवनके भौन कौन गनै ढिग तास है ।
फाटिक किवाँर जरे माणिक दिवारनमें,
मानो घर नैन ऐन ज्योतिको प्रकाश है ॥
विपणि अपार जामें लाखन बपार होत,
पुरीके चहूंघा बन्यो बागन विलास है ।
द्वारकापुरीकी शोभ पारको लहै को कवि,
पढैं शुक सारिका हरीके गुणरास है ॥ १ ॥
चारण पढत कहूं वारण भिरत द्वार
कौतुक अपारन को पावै कौन पारहै ।
देवन लों यादव छपन कोटि सोहैं जहां,
तैसी भांति मोहैं गजगौनी लौनी नारि हैं ॥

है गै रथ संपति समाजको न अंतकछु।
राजत रमाको कंत जहां सुखसार है।
बालक पढ़नहित तीन कोटि ठासी लाख,
एक शत ऊपर विराजैं चटसार हैं॥ २॥
षोड़शहज़ार एक शत आठ रानी प्रभु,
तामें पटरानी आठ सबै गुणऐनहैं।
एक एक तीयके कुँवर दश दश भए,
एक एक सुता भई लाजभरे नैन हैं॥
एक लाख काहट हजार औ इकासी सुत,
शम्भुजमृगिन्द धीर वीर बली ऐन हैं।
तामें महारथी अरिमथी भए आठदश,
तामें भयो प्रबल प्रगट तन मैन हैं॥ ३॥
रुकमिणी सीता सत्यभामा भद्रा लक्ष्मणा,
जाम्बवती यमुना सुमित्रविन्दा जानिये।
आठ पटरानी सुखदानी भई प्रभुजूकी,
पूत रुकमिणिको प्रथम मैन मानिये॥
ताको अनिरुद्ध ताको सुत वज्रनाभ भयो,
ताको प्रतिबाहु को सुबाहु सुत गानिये।
शम्भुज मृगिन्द हरिवंशको न अंत कछू,
ताते नाम कृष्णके जपत भव भानिये॥ ४

छप्पय ।

दशमस्कन्धप्रबन्ध भयो पूरण अनन्दयुत ।
श्रीशुकदेव बखान नृपति प्रीक्षत सुजान प्रति॥
पढत सुनत कर प्रीति लहत पदवी अभीत वर।
पूरण तूरण होत करत मनमें जु अर्थ नर॥
हरिकथा सुधा संक्षेपकरि, शम्भुज हर वर्णन करी।
निज भक्तिदान दीजै सदा, जिहिं पगलागे शबरी तरी॥८॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां कवि गणेशसिंह विरचितायां द्वारकाप्रसंग वर्णनं नाम चतुर्विंशतितमोऽध्यायः॥ २४॥

इति श्रीदशमस्कन्ध समाप्त।

श्रीगणेशायनमः ।

अथ एकादशस्कन्ध ।

यदुकुलको शापप्रसंग वर्णन ।

दोहा ।

कवि गणेश हरिकी नमो, गुरुगणेश सुखकंद ।
वर्णत हौं संक्षेप करि, एकादशो सकंद ॥ १ ॥

सवैया--मत्तगयन्द ।

काज घने जगमें करिकै, बहुरो हरि जू मन माहिं विचारा
भार उतार दयो धरको, यदुवंशको भार रह्यो निरधारा॥
और न जीत सकै जगमें, द्विज शापते काजबनै यह भारा।
वंसनवंस जरैभरिकै, तिहभाँतिखप्यो यदुवंश अपारा ॥

ललितपदछन्द ।

इमि जब गटी गनी हरि उरमें, आयो ऋषिन समाजा ।
दुर्वासा नारद भृगु कश्यप वामदेव ऋषिराजा ॥
गर्भवती तियवेष साम्बको, कीन कुमारन तबहीं ।
कहा जनै बूझ्यो मुनि गणको, कपट ठान उर सबहीं॥३॥
छल पछान बोले ऋषि रिस करि मूशल जनि है नारी ।
करै विनाश सकल यदुकुलको, जान लेहु निरधारी॥

मूशल जन्यो डरे लखि बालक, उग्रसेन ढिग आये ।
शाप सुनत नृप मनभय मान्यो, मूशल लखिविस्माये ४
श्रीहरि सुन मनमें सुख मान्यो, भने शोक मुख बैना ।
मूशल रेत सिंधुमें डारचो, रह्यो शेष कछु तैना ॥
परचो सुलोह मकर मुख माहीं, निगल गयो विनवारा ।
फँस्यो मकर फन्दकके जाला, जबै उदर तिहिफारा ५॥
अल्पलोह निकस्यो तामाहीं, बनवायो तिहिं बाना ।
निकस्यो रेत भए तृण तिहिते हरि भावी बलवाना ॥
काहूसों कीजै नहिं हाँसी, करै तु ह्वै दुखराशा ।
कुरु पांडव जूझे रण माहीं, यदुकुल भयो विनाशा ॥६॥

अथ उद्धवप्रति उपदेश श्रीकृष्णजीका

दोहा ।

सुन उद्धव जिमि दत्तजू, मतो गुरुनको लीन ।
प्रथम नाम तिनके भनों, चतुर विंशती चीन ॥ ७ ॥

छप्पय ।

धरा पौन नभ नीर अनल रवि शशि कपोत वर ।
अजगर सिन्धु पतंग भृंग कुंजर कुरंग रर ॥
मधुमाखी अरु मीन पिंगला कुरर बालगन ।
कन्या शरकर व्याल जान मकरी भृंगी भन ॥

श्रीदत्तसुगुरु चौबीसको, मतो मान मनमें लयो।
शम्भु नमृगिन्द तनद्वन्द्वको, घनानंद पावत भयो ॥ ८ ॥

निशानी छन्द-

कोऊ लीप सँवार है, कोउ खोदत आही।
धरै धीर धरलों सदा, हरिजन मन माही ॥
रावरंकको लाग है, जिमि पौन समाना।
तिमि हरिजनकी दृष्टिमें, इक सम जग जाना ॥ ९ ॥
अंतर बाहर है यथा, पूरण आकाशा।
तिमि हरिजनकी मतीमें, हरि होयँ प्रकाशा॥
मैल न लागत नीरको, हरिहै मल आना।
तिमि निर्मल हरिजन सदा, उर लेहु पिछाना॥ १० ॥
विन संग्रह पावक सदा, सम करै अहारा।
साद कुसाद न उर गनै, तिमि हरिजन प्यारा॥
जिमि रवि जलको शोष है, पुनि दै जग पोषा।
लेन देनमें नहिं लगै, त्यों हरिजन दोषा ॥ ११ ॥
बढै घटै कल चन्दकी, बरता तिमि जानै।
हरिजन चेतन में नहीं, तैसी विधि ठानै ॥
मरचो कपोत कुटुम्बहित फँस फन्दकजाला।
हरिजन करै न मोहको, जानै यम जाला ॥ १२ ॥
खान पान दुख सुख सबै, लखि दैव अधीना।

अजगरलौं हरिजन रहै, उर आशविहीना ।
बरसे अनबरसे रहे, सम नीर गँभीरा ।
सागरलौं हरिजन रहै, उर ज्ञान सधीरा ॥ १३ ॥
सुत दारादिक सुख सबै, लख अग्नि समाना ।
भस्म न होय पतंगलौं, हरिभक्त सुजाना ॥
बहु फूलनको मधु लहै, मधुकर निरधारा ।
तिमि हरिजन उरमें गहै, ग्रन्थनको सारा ॥ १४ ॥
परस मतंगनि काठकी, जिमि फँसै मतंगा ।
तिमि हरिजन तिय चित्रहूं, लावै नहिं अंगा ॥
याचै संत अहारको, निज उदर प्रमाना ।
मधुमाखीलौं मरत है, जो संग्रह ठाना ॥ १५ ॥
सुनै गीत युत प्रीतिके, जामें हरि रंगा ।
आन गीत सुन होत है, जिमि दशा कुरंगा ॥
रसना रसन अशक्त ह्वै, हरिभक्त प्रवीना ।
नातर ऐसी गती ह्वै, जैसे ह्वै मीना ॥ १६ ॥
दीनभई जिमि पिंगला, बहु नर कर आशा ।
पायो सुख संतोषमें, तिमि संत विकासा ॥
उड्यो कुरर गहि माँस को खग भिरे अपारा ।
भयो त्याग कर सुख तिसे, तिमि संत उदारा ॥ १७ ॥
मानपमान न उर गनै, नाहिन गृह चिन्ता ।

वारिक ज्यों हरिजन रहै, मन मान अनंदा ॥
इक इक चूरी राखिकै, कन्या पति पाई ।
बस इकान्त सुखको लहै तिमि संत सदाई ॥ १८ ॥
नृप ससैन गत नहिं लख्यो, शरमें मन लागा ।
शरगरलौं हरिजन करै, हरिमें अनुरागा ॥
बसै गुफा नहिं गृह रचै, भय मान भुजंगा ।
गृह कलेश तज त्यों रहै, हरिजन सुख संगा ॥ १९ ॥
आप रचै गुण तीन मय, माया विस्तारा ।
मकरी लौं संग्रह करै पुनि आप सँझारा ॥
राग द्वेष भयकरि जिसे, जासों मन भीना ।
ह्वै ताहीको रूप सो, भृंगी गुण चीना ॥ २० ॥
यहि विधि गुरु चौबीसकी, शिक्षा उर लीनी ।
दत्त सत्यपदको लह्यो, मति हरिरस भीनी ॥
उपदेश्यो यदुभूपको, हमरो बड़ जोई ।
तनुहंता हत तासुकी, मति ज्ञान समोई ॥ २१ ॥
उद्धव इमि बहु गुरुनको मत लेय सुजाना ।
तजिममता समता गहै, सबमें हरि जाना ॥
परमार्थी गुरु नाहिंये, वर्ण जे आहीं ।
संशविनाशन सतगुरू, जानो मनमाहीं ॥ २२ ॥
ऊद्धव अपनो आपही, गुरु लेहु पछाना ।
आप बूड़ आपै तरै, निश्चय जिय जाना ॥

करै शुभाशुभ कर्म जो, अरपै मो माहीं ।
लेप न लागै तासुको, हंता उर नाहीं ॥ २३ ॥
ज्ञान भन्यो उद्धवप्रती, हरि कर विस्तारा ।
ग्रंथबढनते नहिं कह्यो, जानो निर्धारा ॥
जिहिविधि लैयदुवंश को, गमने यदुनाथा ।
वर्णतहों संक्षेप करि, सो गाथअकाथा ॥ २४ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां यदुकुलप्रति
शाप उद्धव ज्ञानोपदेशप्रसंग वर्णनं नाम
पंचविंशतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ यदुवंशविनाशप्रसंग ।

ललितपदछन्द ।

सभामाहिं इकदिवस दयानिधि, श्रीमुखवचन बखाना ।
होन लगे उतपात विविधविध, द्वारावती महाना ॥
ताते सबै प्रभासक्षेत्र चलि, स्नान दान बहु कीजै ।
विघ्न विनाश होय सुख उपजै, सकल सौंज सँग लीजै ॥ १ ॥
जिमि हरि भनी कीन विधि तैसी, तिय बालक वृध छोरे ।
पहुँचे सबै प्रभास क्षेत्रमें, राम श्याम युत औरे ॥
कर मदपान भए सब बावर, हरि माया भरमाए ।
सात्यकि कृतवर्मा प्रति तबहीं, वाणी बाण चलाए ॥ २ ॥
क्षत्रिय ह्वै बालनशिर काटे कीन कसाई कर्मा ।
भुजविन भूरिश्रवा शिर काट्यो कीन कहा तें धर्मा ॥

सात्यकि कृतवर्मा शिर काट्यो, लै करमाहिं कृपाना।
लै आयुध जूटे आपसमें, मच्यो घनो घमसाना॥ ३॥
उमड्यो दल बादल चहुँदिशिते, चमकत छटा कृपाना।
बूंदनलौं वर्षत बहु बाणन, गर्जत सुभट महाना॥
भ्रातहिं भ्रात तातसों ताता, मीतन मीत विदारे।
रथी रथी हाथीसों हाथी, वाजिन वाजिसँहारे॥ ४॥
बढ़ी लोहसरिता रण माहीं, भयो घोर संग्रामा।
मारो मार शब्द मुख उचरैं, लेत परसपरनामा॥
टूटे जबै शस्त्र सुभटनके, भयो सु घास कृपाना।
मूसलचूरणते जो उपज्यो हरि भावी बलवाना॥ ५॥
ताहि उपार प्रहार करैं भट कटैं परस्पर अंगा।
याहि विधि जूझ मरे रण यादव द्विजवच भयो अभंगा॥
स्वप्न समाज जिमे घन छायो, जगरचना तिमि चीनो।
चींटीते विधिलौं नहिंव चिहै, सब जग काल चबीनो॥६॥
एक अकाल अकाल जान जिय अपरसबै वशकाला।
परै अकालहुकी जो शरणहिं सोनर होय अकाला॥
श्रीबलभद्र चक्योलखि कौतुक उरमें धरिहरिध्याना।
फोरि दशमदरकोक्षण माहीं, सुखपदमाहिंसमाना॥७॥

अथ जरावधिकप्रसंग-ललितपदछन्द।

राम गमन लखि करि जगनायक, पीपर तरे विराजे।

धरचो स्वरूप चतुर्भुजतूरण, कोटिकामलखि लाजे ॥
मूरतिवन्त शस्त्रढिग सोहत, रविलौं भयोप्रकाशा ।
वामपाद दाहिन जानूपर, धरि बैठे सुखराशा ॥ ८ ॥
मृगदृग जान वधिक शरमारचो, लग्योचरणतलमाहीं ।
वेग आन निरख्यो जब नेरे, डरचो जरा मनमाहीं ॥
परचो पगन अपराध जान बड, त्राहि त्राहि मुख गावा ।
श्रीहरि अभयदान तिहि दीनो, सुरपुर माहिंपठावा ॥९॥

अथ दारुकप्रसंग—ललितपदछन्द ।

पुनिदारुक आयो प्रभु खोजत लखे चतुर्भुज रूपा ।
मूरतिवन्त लखे ढिग आयुध, रविलौं तेज अनूपा ॥
श्रीहरिध्यान जान मनमाहीं जल भर आए नैना ।
परचो पगन गद्गद मुखवाणी, धीरदीन गुणऐना ॥१०॥
तौन समै नभते रथउतरचो, खगपति युत अति सोहै ।
रथमें जाय थिरे प्रभु आयुध पेख सबन मन मोहै ॥
दारुक प्रति प्रभुभन्योमृदुलवच, द्वारावति तुमजावो ।
यदुकुलसहितरामअरु हमको, सुरपुरध्यानसुनावो ११॥
अब पुरीमाहिं बसै मत कोई, करो आन थल वासा ।
मैं जब गमन करौं तज धरणी, बोरै सागर तासा ॥
हमरे मात पितादिक जेई अपर जितक गृह नारी ।

अर्जुन सहित जादु हस्तिनपुर करो संदेश उचारी ॥१२॥
तुम मम धर्म धरो उर अंतर, सबजग मिथ्या मानो।
नाशवन्त लख नाम रूप सब, मोहिं साँच जिय जानो॥
लखि व्यापक पूरण प्रभु मोको, दृढ ह्वै जब अभ्यासा।
तनुतजमिलोआन मुहिं तबही, बहुरि न ह्वै यमत्रासा॥
दारुक सुन श्रीमुख ते ज्ञाना बार बार शिरनावा।
आवत भयो द्वारकापुरिमें, हरि वियोग दुख पावा॥
तरफत मीन नीर विन जैसे मणि विन जैस भुजंगा।
तिमिहरिविनदारुक दुखपायो, भएसर्वसुखभंगा॥१४॥

अथ श्रीकृष्णजीका वैकुण्ठप्रयाण प्रसंग।

निशानीछन्द।

विधि सनकादिकसुतनसों,शंकर युतवामा।
वासव लै सब सुरनको, आयो तजिधामा॥
विद्याधर किन्नर सबै, गंधर्वगण आए।
पितर महोरग सिद्ध जे, ऋषि मुनि समुदाए॥१५॥
श्रीहरिको दर्शन करचो, पायो सुखसारा।
पुष्पन की वरषा करी, जयशब्द उचारा॥
सबके देखत श्रीप्रभू, तब तज तिहिं थाना।
पहुँचे पुर वकुंठमें, नहिं काहू जाना॥१६॥

ज्यों अकाश घनदामिनी, प्रगटै दुर जावै ।
बहुरि न ताके खोजको, कोऊ नर पावै ॥
यामें कछु आश्चर्य नहिं, हरि शक्ति अनन्ता ।
वेद न पावत भेदको, मुख लेति कहंता ॥ १७ ॥
करै पसारा नट यथा, पुनि लेत निवारा ।
तिमि हरि मायाको रचै, निज रहै नियारा ॥
भार उतारनके लिये, नरतनु प्रभु कीना ।
तनकर कारय करि सबै, बहुरो तज दीना ॥ १८ ॥
काँटे सों काँटा यथा, काढै पग माहीं ।
तज दीजै पुनिदुहुँनको,हरि तनु तिमि आही॥
बाजउठे दुंदुभि तबै, सुर भए अशोका ।
जो यह कथा पढै सुनै, पावै हरिलोका ॥ १९ ॥

अथ द्वारका प्रसंग-निशानी छन्द ।

उग्रसेन वसुदेवपै, दारुक क्षण तासा ।
रोवत सुध दीनी तबै, यदुवंश विनाशा ॥
पेखि राम तनुको तज्यो, बहुरो यदुराई ।
सुनि विलाप कीनो घनो, सुधि रही न काई ॥ २० ॥
पुनि सब गए प्रभासको, तहँ हरि न विलोका ।
पतियुत रोहिणि देवकी, तनुतज्यो सशोका॥

षोडश तिय वसुदेवकी, औरै जिय जानी।
पतीसंग जर अग्निमें, सुरलोक पयानी॥ २१॥
उग्रसेन नृप तनु तज्यो, करि हरिअनुरागा।
बल युवती बलसों जरी, जानो बड़भागा॥
पद्युम्नादिक सुत जिते, हरिके बड वीरा।
तिनकी तिय तिनसों जरीं, उरमें धर धीरा॥ २२॥
रुक्मिणि आदिक हरितिया, हरिको धर ध्याना।
अग्निप्रवेश करचो तबै, पतिपै किय प्याना॥
हरि वियोग अर्जुन हृदय, उपजी अति पीरा।
सुधिकरि गीताज्ञानकी, पुनि भयो सधीरा॥ २३॥
सम्बन्धी जेतक मरे, तिनके कर कर्मा।
हरिको साँच लख्यो हिये, जान्यो जग भर्मा॥
बोरचो पुर सागर सबै, तज हरिके धामा।
अबलों भक्तनको भवै, दर्शन अभिरामा॥ २४॥
बाल वृद्ध जेतक बचे, नर नारि जु आहीं।
ते आने अर्जुन सबै, हस्तिनपुर माहीं॥
सुन हरि प्यान विकुंठको, पाण्डव अतिरोए।
हरि विन जग सूनो लख्यो सगरे सुख खोए॥ २५॥
वज्रनाम अनिरुद्धको उबरचो सुत एका।
मथुराराज दयो तिसे, करि हृदय विवेका॥
पाण्डव उत्तरको गए, हरिविन दुख पाए।

हरिको ध्यान धरचो हिये, हरिमाहिं समाए ॥ २६ ॥
एकादश स्कन्ध यह, पूरण जिय जानो ।
पढै सुनै युत प्रेमके, सगरे अघहानो ॥
सुरतरुलौं हरिकी कथा, मन इच्छित दैनी ।
शम्भुजहरि संतन सदा, सुखपदकी श्रेनी ॥ २७ ॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां यदुकुल सहित श्रीकृष्ण वैकुंठ गमन वर्णनं नाम षड्विंशति तमोऽध्यायः ॥ २६ ॥

इति एकादशः स्कन्धः समाप्तः ।

श्रीगणेशायनमः ।

अथ द्वादशो स्कन्ध ।

चतुर्विंशावतार वर्णनम् ।

कवित्त ।

जै जै मीन कूरम वराह नरहरि जान,
वामन परशुराम रामचन्द्र जानिये ।
बहुरोसु कृष्ण बौध कलिकी कपिल पृथु,
मोहिनी ऋषभदेव जगदेव मानिये ॥
बद्रीनाथ नारद धन्वंतर, हयग्रीव हंस,
व्यास बलराम सनकादि दंत गानिये ।

शम्भुजमृगिन्द अवतार चारविंश भए,
संतनके हेत नाम लेत भव भानिथे॥ १ ॥

अथ दशगुरुअवतार।

छप्पय छन्द।

गुरुनानक दै नामदान जग कीन उधारन।
तारनसंख्या होत परै तारनको पारन॥
तिहिंते अंगद अमर दास गुरु राम दास भन।
अर्जुन हरि गोविन्द राय हरि हरीकृष्ण गन॥
गुरु तेग बहादुरके भयो, गुरुगोविन्दमृगिन्द वर।
शम्भुजमृगिन्दरचपन्थको, तुरकतेजतमतोम हर॥२॥

अथ नवधाभक्तिवर्णन—दोहा।

श्रवण कीरतन दास सख, पूज सेव अभिवन्द।
सर्वस दै सुमिरन करन, नवधा भक्ति सुछन्द॥ ३ ॥
सुनत परीक्षित नृपतरचो, कीर्तन शेष उधार।
हनूदास पारथ सखा, पृथु पूजा भवपार॥ ४ ॥
रमासेव्य पदवन्दि दधि, सर्वस दै बलि आदि।
कविशम्भुजहरि उद्धरचो, सुमिरण करिप्रह्लादि॥ ५ ॥
भक्ति करत भगवन्तकी, ताहि भक्त भगवन्त।
मीनादिक बहु रूप धर, कीने कर्म अनन्त॥ ६ ॥
पाँय पलोटे सैन हित, छीपै छान छवाय।
विदित सबै शबरी कथा, भक्तन वश हरिराय॥ ७ ॥

नीलकंठ घनश्याम ज्यों, नीलकण्ठ घनश्याम ।
तोहिं भजै सिय राम त्यों, तोहिं भजै सिय राम ॥ ८ ॥

अथ चार प्रकारकी प्रलय ।

राजा परीक्षित का परलोक प्रयाण ।

ललितपदछन्द ।

रहट घटीलौं जगव्यवहारा, उपजत विनशत जानो ।
सुन नृप चार प्रकार प्रलय ह्वै, एक निशा पहँचानो ॥
चतुर्युगी बीते इकहत्तर राज मन्वंतर एका ।
चौदश मनू होहिं विधि दिनमें, जानो कल्प विवेका ॥९॥
निशिमें प्रलय प्रात विधि जागै, बहुरो जग उपजावै ।
दूसर प्रलय भन्यो शुक नृप प्रति, तीसर अबै सुनावै ॥
दिनसौ तीन साठ इमि बीतैं, वर्ष एक विधि मानो ।
वर्ष पचाश बिते ह्वै परलो, पुनि विधि रचना ठानो १०
शत सम्वत बीते विधि मरिहै महाप्रलय तब होई ।
माया माहिं तत्त्व ह्वै लीना, माया ब्रह्म समोई ॥
पुनि हरिइच्छाते जग उपजै, बहुरो प्रलय पछाना ।
हरिको भजै सुहरिपद पावै, नातर भ्रमैअजाना ॥११॥

नृपोवाच ।

तुम प्रसाद मैं बोध लह्यो उर, छूट्यो तनु अभिमाना ।
अबमैं गही ओट हरिपदकी, तजिहौं तनु दुखखाना ॥

ज्ञान भयो नृपको शुक लखि कर, आन सथान सिधायो।
तक्षक डस्यो नृपतिके पदको, नृप हरिकोपदपायो १२
सुनै सप्रेम मूक लहि रसना, महामूढ़ मतिवाना।
चहै जु मुक्ति सुहरिपदपावै, धनअर्थी धनवाना॥
शंभुज हरि हरिके गुणगाये, हरिभक्तीके हेता।
हीराचन्द्र नृपति बनवायो, हरि यश प्रेम समेता॥१३॥

दोहा।

कर सँक्षेप भाषा भन्यो, सकल भागवत सारु।
नामधरचो इस ग्रन्थको, कृष्णचन्द्रिका चारु॥ १४॥

चौपाई।

श्रीहरिकथा सुधा सुख श्रेनी। संतन सदा अमरपददेनी॥
पापविनाशनको सुरसरिसी। सुखफलदैन ऐनसुरतरुसी॥

दोहा।

जैजे श्रीवृषभानुजा, जय जय नन्दकुमार।
जय रानी जय रुकमिणी, जय जय कृष्ण मुरारि॥१६॥
संवत् षट त्रै निधि शशी, सुरगुरु वार विचार।
हरीमास सित त्रयोदशि, लीन ग्रन्थ अवतार॥ १७॥

इति श्रीमत्कृष्णचन्द्रचन्द्रिकायां अवतार नाम नवधा भक्ति परीक्षित परलोक प्रयाण वर्णनंनाम सप्तविंशति तमोऽध्यायः॥ २७॥

इति श्रीद्वादशस्कन्धसमाप्त। शुभमस्तु।

अथ अन्तर्लापिका.

उत्तर व्यस्त गतागत।

छप्पय।

कविजन का जग देत नरनमें को वर कहिये।
नगन माहिं को कठिन अंक युत को सद लहिये॥
समर शूर अभिलाष कौन दशरथ पितुआही।
यज्ञ जगमें किमि होत कौन व्याकुल मगमाहीं॥
जग कहा निवाहत सती नर, कोतियहरिउरशोभ चय।
शम्भुजमृगिन्द उत्तर दयो, श्री नृप हीराचन्द्रजय॥१॥

अथ बहिर्लापिका।

छप्पय।

जनकसुता को कहानाम किन हरी सुरिसवश।
कापर परत न चोर कौन जग लहत न तियरस॥
को हरि प्रिय ब्रज माहिं कहां नहिं मधुप लुभावत।
हिहित नर श्रम करहिं कहा सब जगको भावत॥
यह प्रश्न कीन बुध जनन मिल, शम्भुजहरि उत्तर दयो।
नृपनाम आदि वर्णन विषे, कर विचार वर्णन कियो॥२॥

---

१ सीता, रावण, जागत, हीजरा, राधिका, चंपक, द्रव्य, जीवन।
प्रत्येक उत्तरके आदिका अक्षर ग्रहण करनेसे श्रीमान्‌राजा साहबका नाम निकलता है.

कविकी उक्ति-दोहा।

पोता हीराचन्दको, अमरचन्दको नंद।
करत विलास विलासपुर, अब नृप विजयसुचन्द॥३॥
ग्रन्थ छपायो प्रथम यह, हीराचंद भुआर।
वर्ण गुरुमुखीके विषे, फैलायो चक चार॥ ४॥
कृष्णचन्द्रिका ग्रन्थ शुभ, वर्ण नागरी माँह।
छपवायो अब प्रेम युत, विजयचन्द नरनाह॥ ५॥
कवी गणेशमृगिन्द का, यह आशिष सुखकन्द।
विजयचन्द नृपकी विजय, करैं सदा ब्रजचन्द॥ ६॥

छप्पय छन्द।

स्वस्ति सर्व उपमा महान शशि वंश विभूषण।
श्रीनृपविजयसुचन्द अवनि यश जासु अदूषण॥
कविकी यहै अशीश शत्रुगण होहिं अशीशा।
धुवलों ध्रुव जग रहै राज तुमरो जगदीशा॥
शुभ पुत्र पौत्र परिवार युत, सदही रहै अनंदहै।
शम्भुजमृगिन्द उर रावरे, वास करै ब्रजचन्द है॥ ७॥

कवित्त।

एक बिश्वे हारे उपकारते विहीन नर,
पांच बिश्वे हारे परनारिके विहारेते।
षट विश्वे हारे खल खोटके करनहारे,
आठ बिश्वे हारे उर अवगुण विचारेते॥

दश विश्वे हारे द्रोही कादश कृपण क्रोही,
वारा विश्वे हारत वचन विन पारेते ।
शम्भुजमृगिन्द विश्वे चौदश चुगल हारे,
बीस विश्वे हारे हरि नामके विसारे ते ॥ ८ ॥

इति ।

अथ नाममहिमावर्णन ।

सवैया मत्तगयंद ।

पेखि पतंग जिमै तम जात पतंग पतीलखि जातभुजंगा ।
जैस विहंग तु फंगधुनीसुनि मेघनके गन पौन प्रसंगा ॥
भाजतज्यों मृगसिंहते सातर शूरते कातरज्योंरणरंगा ।
त्योंहरि नाम लिये हरिशंभुजकोटिकपापभजैतजअंगा॥

दोहा ।

कोटिक कर्मकरे तऊ, नाम विना दुख भौन ।
प्रकटसबै नृप नृगकथा, अरुत्रिशंकु नृप जौन ॥१०॥

इति श्रीकृष्णचन्द्रचन्द्रिका समाप्ता ।

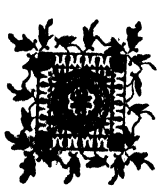

विक्रय्यपुस्तकोंकी संक्षिप्त-सूची।

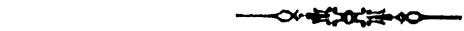

नाम.	की० रु० आ०
शुकसागर बडा लाला शालिग्रामजी अनुवादित शंका समाधानों दृष्टांतों समेत उत्तम ग्लेज	१२—०
" तथा रफ्	१०—०
शुकसागर मध्यम अक्षर ग्लेज ७ रु. रफ्	६—०
शुकसागर छोटाअक्षर ग्लेज लालाशालिग्रामकृत	५—०
" तथा रफ्	४—०
वाल्मीकीयरामायण केवल भाषा जिल्दबँधी	१०—०
शिवपुराण केवल भाषा जिल्दबँधी ...	६—०
रामरसायन रामायन-रसिकविहारीकृत ...	४—०
रसिकप्रिया सटीक	१—४
रामचंद्रिका सटीक कवि केशवदास प्रणीत	२—०
विज्ञानगीता केशवदासकृत (वेदान्त)...	०—१०
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध [भिखारीदासकृत] मनहरण छन्दोंमें कठिन (अलंकार) ...	१—४
जगद्विनोद [पद्माकरकृत नायकाभेद]	०—६
रसराज [मतिरामकृत नायकाभेद]	०—६
ब्रजविलास बड़ा मोटेअक्षरका टिप्पणीसहित	४—०

ब्रजविलास मध्यम अक्षर टिप्पणीसहित
विलायती जिल्द ... ... ग्लेज २-०
तथा रफ् कागजका १-८
ब्रजविलास छोटा अक्षर १-०
ब्रजचरित्र (श्रीराधाकृष्णजीकी) सर्वलीला
सुगम दोहा चौबोलोंमें वर्णितहैं ... ३-०
प्रेमसागर टाईपका बडा ग्लेज कागजका १-१२
प्रेमसागर टाईपका बडा रफ् १-४
भक्तमाला रामरसिकावली बड़ी, रीवाँधिपति
महाराज रघुराजसिंहकृत अत्युत्तम छन्दबद्ध
जिसमें चारोंयुगोंके भक्तोंकी भिन्न २ कथा हैं
और द्वितीयावृत्ति उत्तर चरित्र समेत
अत्युत्तम नई छपी है ४-०
रामस्वयंवर श्रीमहाराजा रघुराजसिंहकृत
(काव्यदेखनेयोग्य) ४-८
भक्तमाल नाभाजीकृत सटीक (छंद बद्ध) १-४
रुक्मिणीपरिणय-महाराज श्रीरघुराजसिंहजू
देव प्रणीत १-८
महाभारत भाषा सबलसिंहकृत-तुलसी
दासजीकी रामायणकी रीतिसे दोहा
चौपाईमें १८ अठारहोंपर्व ३-८

तथा प्रथम भाग (३–आदि, सभा, वनपर्व) १–०

तथा द्वितीय भाग (२–विराट, उद्योगपर्व) १–०

तथा तृतीय भाग (८–भीष्म, द्रोण, कर्ण,
शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, स्त्रीपर्व)... १–०

तथा चतुर्थ भाग (५–शान्ति, अश्वमेध,
आश्रमवासिक, मुशल, स्वर्गारोहणपर्व) १–०

विजयमुक्तावली (महाभारतका सूक्ष्म
वृत्तांत छंद बद्ध) १–०

अर्जुनगीता भाषा ०–४

गजेंद्रमोक्ष भाषा ... ... ०–१॥

शनिकथा कायस्थकी ... ... ०–१॥

शनिकथा राघवदासकृत ०–३

शनिकथा बडी पं०रामप्रतापजीकृत ... ०–८

रुक्मिणीमंगल बड़ा (पद्मभक्तकृत
मारवाडी भाषा) १–४

हनुमानबाहुक पंचमुखी कवच समेत ... ०–१॥

नासिकेतपुराणभाषा (स्वर्गनरकका वर्णन) ०–६

नरसीमेहताकामामेरा बडा ०–६

बिस्मिलपरिवारका स्वांग (इश्कचमन)... ०–८

सूर्यपुराणादि १९१ रत्न अतिउत्तमकागज
और जिल्दबँधा ०–८

सूर्यपुराणादि १९१ रत्न रफू ०–६
ज्ञानमाला ०–२
मंगलदीपिका अर्थात् शाखोच्चार ... ... ०–१॥
दंपतिवाक्यविलास–जिसमें सब देशांतर की यात्रा और धंधेके सुखको पुरुषने मंडन और स्त्रीने खंडन किया है दोहा कवित्तोंमें सुभाषित... ... ... ०–१२
रसतरंग ज्ञानभक्तिमार्गी अजब रँगीले पद्य कृष्णगढ़ महाराज प्रणीत... ... ०–८
दादूरामोदय संस्कृत–दादू पंथी साधुओंको ०–१०
श्यामकामकेलि ०–४
भक्तिप्रबोध ०–२
भावपंचाशिका कविवृंदजीकृत ०–२
प्रेमशतक ०–४
मदनमुखचपेटिका भाषाटीका ०–४
प्रेमवाटिका भाषा (रोचक भजन) ... ०–२

संपूर्ण पुस्तकोंका "बडासूचीपत्र" अलग है देखना हो तो आध आनेका टिकट भेजकर मँगालीजिये।

पुस्तकोंके मिलनेका पता–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष–बंबई.